

श्री महामति प्राणनाथ प्रणी

सिन्धी वाणी

(अर्थ सहित)

श्री महामति प्राणनाथ प्रणीत

सिन्धी वाणी

(अर्थ सहित)

श्री सुन्दर दास जी

द्वारा लिखित मूल प्रति के आधार पर

अनूदित

सम्पादक

श्री माताबदल जायसवाल

रीडर, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी

प्रकाशक

श्री प्राणनाथ प्रकाशन

श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर

१० ए/१२ शक्तिनगर, दिल्ली-७

प्रथम संस्करण—१२०० प्रतियाँ

संयोजिका :—विमला मेहता
डी० १९३ डिफेन्स कालोनी
नई दिल्ली

प्रो० छुगानी तथा प्रो० मोती लाल जोतवानी द्वारा संशोधित

मूल्य ३.०० रु०

मुद्रक :
प्रकाश चन्द्र मिड्ढा
मिड्ढा प्रेस
८ ए दरियाबाद
इलाहाबाद-२११००३

बुद्ध जी शाके २९५
वि० सं० २०३०
विजया दशमी
६ अक्टूबर, १९७३

महामति प्राणनाथ जी

संक्षिप्त परिचय

महामति प्राणनाथ जी ने संसार को एक ऐसा दर्शन दिया जो विश्व शान्ति, धर्म-समन्वय तथा मानव एकता स्थापित करके संसार के बद्ध जीवों को मोक्ष दिला सकता है संसार के बहुत कम लोग उनसे परिचित हैं। उनके ज्ञान को समझ कर जीवन में उतारने वाले तो बहुत ही कम हैं। आज के विघटन के वातावरण में हम उनसे प्रेरणा लेकर मानव एकता और विश्व शान्ति स्थापित कर सकते हैं।

श्री प्राणनाथ के जीवन में प्रेरणा फूकने वाले उनके सद्गुरू श्री देव चन्द्र जी के विषय में जान लेना आवश्यक है। श्री देवचन्द्र जी का जन्म वि० स० १६३८ में मारवाड़ प्रदेश के उमरकोट गाँव में हुआ। उनके पिता मतु मेहता एक कुशल व्यापारी थे। बाल्यकाल में ही श्री देवचन्द्र जी का मन प्रभु भक्ति में बहुत लगता था। उनके मन में अपनी आत्मा और परमात्मा के विषय में जान लेने की इच्छा बलवती थी। मरुभूमि में यदाकदा ही कोई साधु आ पाते थे। वे उस विचिक्षण बालक की ज्ञान पिपासा को शान्त न कर पाए। बारह वर्ष की आयु में वे किसी सच्चे गुरू की खोज में निकल पड़े। भोजनगर में स्वामी हरिदास जी के पास वे कुछ वर्ष रहे। उनकी राधा माधव भक्ति का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। श्री कृष्ण के बाल मुकुन्द स्वरूप का इन्हें दर्शन हुआ। वहाँ से वे जामनगर आ गए। चौदह वर्ष तक निष्ठापूर्वक श्रीमद्भागवत की कथा सुनते रहे। इनकी भक्ति पर रीझ कर स्वयं अक्षरातीत परमात्मा ने कृष्ण रूप से इनको दर्शन दिया। मन के कपाट खुल गए। परमात्मा और परमधाम का दीदार पाया। अपने आप को अक्षरातीत प्रभु की अंगना के रूप में देख कर आत्म विभोर हो उठे। स्वामी ने विश्व में प्रकटी अन्य अंगी आत्माओं को जगा कर परमधाम ले आने का गहन कार्य इन्हें

सौंप दिया। श्री गांगजी भाई को इनके प्रथम शिष्य होने का गौरव मिला। उन्होंने इनको तन मन धन से सेवा करके इनके कार्य में सहयोग दिया।

श्री देवचन्द्र जी ने चालीस वर्ष की आयु तक लगभग सभी धर्माचार्यों से सत्संग करके यह पाया कि शरीर को कष्ट देने वाली साधनाएँ शरीर को निर्बल बना कर कठिन आत्म मार्ग के लिए अयोग्य ही बना देती हैं। शरीर को हृष्ट पुष्ट और स्वस्थ रख कर, प्रेम द्वारा गुण अंग इन्द्रियों तथा मन को साध बना कर आत्म पथ में सहायक बनाया जा सकता है। पूर्ण समर्पण के भाव से प्रेम लक्षणा भक्ति ही सहज साधना है जो प्रियतम के धाम में पहुँचा देती है। इसी साधना का उन्होंने जीवन भर प्रचार किया।

इनके प्रेममय स्वरूप और साक्षात श्रीकृष्ण लीला से आकर्षित होकर श्री मेहराज ठाकुर (महामति श्री प्राणनाथ जी) बारह वर्ष की आयु में इनकी शरण में आए।

मेहराज ठाकुर का जन्म वि० सं० १६७५, में श्री केशव ठाकुर के घर जामनगर में हुआ। केशव ठाकुर जाम राजा के दीवान पद पर थे। बाल्यकाल में ही प्रतिभाशाली मेहराज सांसारिक विद्या में पारंगत हो गए। बारह वर्ष की आयु में गुरूदेव ने महान आत्मा पहचान अपने स्वामी द्वारा सौंपे ब्रह्म सृष्टि जागरण के कार्य में इन्हें भागीदार बना लिया। पिता की मृत्यु के उपरान्त मेहराज जामनगर के दीवान भी बने। गुरु-देव की आज्ञा से गांगजी भाई के भ्राता खेता भाई से मिलने अरब देश में गए। अरबी भाषा और कुरान से कुछ परिचय हुआ। अपना जीवन सदगुरु के चरणों में समर्पित करके उनके महान कार्य को पूरा करने का बीड़ा उठाया।

श्री देवचन्द्र जी के शरीर त्याग देने के पश्चात मेहराज ठाकुर ने गुरुपुत्र बिहारी जी को गद्दी पर बिठा दिया और स्वयं देश-देश में अवतरित ब्रह्मात्माओं को जगाने चल पड़े। मेरता में मुल्ला को अजान

देते सुना । सभी धर्म एक ही पूर्ण ब्रह्म की उपासना करते हैं । जाने अन-जाने सब की एक मंज़िल है । यह जान उनके सिद्धान्तों की मूलभूत एकता को उन्होंने खोज निकाला । भाषा, देशकाल, वातावरण के कारण कर्म-कांड की भिन्नता अवश्य है । कर्मकांड तो केवल शरीर को शुद्ध करता है । आत्म जागरण के लिए तो प्रेम चाहिए । भक्त और प्रेमी को जाति पांति ऊंच नीच से क्या । आत्म ज्ञान भी परमात्मा की तरह एक है । इस तरह संसार का आत्म धर्म एक है इस बात की घोषणा की । मानवों में विच्छेद करने वाले तथा कथित गुरुओं और अमानवों की कड़ी भर्तसना की । राज मद में प्रजा का उत्पीड़न करने वाले शासकों के विरुद्ध तलवार उठाने की प्रेरणा दी । कर्म में लीन रहने वालों को समर्पण भाव से प्रभु प्रेरित कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया । शूद्र कहे जाने वाले निरा-भिमानी लोगों को ब्राह्मणों से भी पवित्र कह कर गले लगाया । भक्तों और प्रेमियों को प्रियतम उनके शाहरग से भी करीब दिखा दिया । सभी वर्ण और सभी वर्ग के लोगों को प्रेम से रहना सिखाया । उन्हें सुन्दर साथ कह कर परस्पर प्रणाम करना सिखाया । उनके अनुयाइयों में ही गुरु शिष्य परस्पर प्रणाम करते देखे गए हैं । उनके प्रवीण बारह शिष्यों ने सर्वप्रथम औरंगजेब को धर्म का शुद्ध स्वरूप समझाने का प्रयास किया । फिर जन-जन तक उनका सन्देश पहुँचाने के लिए जीवन समर्पण कर दिया । जनता ने परमात्मा की शक्तियों का इनमें अवतरण देख कर इन्हे प्राणनाथ कहा ।

श्री प्राणनाथ की तारत्तम वाणी 'कुलजम सरूप' चौदह ग्रन्थों का संकलन है । अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाली वाणी को तार-तम वाणी की संज्ञा मिली । सभी धर्म ग्रन्थों, धार्मिक परम्पाराओं के मिलन और परमात्मा के स्वरूप के लहराते सौदर्य सागर को कुलजम स्वरूप के नाम से पुकारा गया । छन्द गीत, काव्य, भाषा की दृष्टि से भी तारतम वाणी एक अनुपम ग्रन्थ है । भारत में उस युग में प्रचलित अनेक भाषाओं में इन्होंने वाणी कही और उन्हें एक ही देवनागरी लिपि में

लिखवा दिया। कठिन संस्कृत और अरबी फारसी भाषा में नहीं वरन् साधारण बोलचाल की भाषा हिन्दुस्तानी में परमात्मा का आत्माओं को संदेश सुनाया। धर्म ग्रन्थों की न समझ आने वाली गुत्थियों को सुलझाया। परमात्मा और परमधाम का संसारिक सरल शब्दों में वर्णन करके मानव को प्रभु की ओर प्रेरित और आकर्षित किया। धर्म के नाम फैली कुरीतियों का कड़े शब्दों में खंडन किया। मानव को गुमराह करने वाले, धर्म के नाम कुरीतियां चलाने वाले, और भाई से भाई को अलग करने वाले अमानवों को कभी क्षमा नहीं किया जाएगा ऐसी घोषणा की। इस प्रकार महामति ने मानव एकता और विश्व शान्ति के लिए जीवन भर प्रयास किया। उनका ज्ञान युग-युग की समस्याओं को सुलझाने वाला है। आवश्यकता है कि उनके वचनों को समझ कर उनके अनुसार जीवन जिया जाए।

विमला मेहता

सिन्धी बानी

'सिन्धी बानी' महामति प्राणनाथ के लौकिक जीवन के सन्ध्याकाल की बानी है। सिन्धी भाषा महामति की मातृ भाषा, गुजराती उनकी पितृ भाषा और हिन्दुस्तानी या हिन्दी भाषा उनके लिए सबसे सीधी, सबसे व्यापक, सबके मन और आत्मा को मिलाने वाली राष्ट्रभाषा या 'जागनी' की भाषा थी। अपने मातृ देश या ननिहाल सिन्ध देश से लगभग २ हजार मील दूर पन्ना (मध्य प्रदेश) में निवास करते हुए भी लौकिक जीवन की अंतिम बेला में महामति अपनी गुह्य से गुह्य, गूढ़ से गूढ़ धार्मिक साधना के सार को अपनी मातृ भाषा सिन्धी में व्यक्त करते हैं।

सिन्धी बानी की रचना महामति प्राणनाण के अंतिम दिनों में उनकी अंतिम रचना 'मारफत सागर' से पहले विक्रमी संवत् १७४५ (ई० सन् १६८८) के आस पास प्राणनाथ की लीला भूमि 'पद्मावती पुरी' (पन्ना-मध्य प्रदेश) में हुई है। इस ग्रंथ की रचना के समय श्री मेहेराज [प्राणनाथ का मूल नाम] लाखों आत्माओं के 'प्राणनाथ' बन चुके थे, सभी धर्मो का सार लेकर एक विश्व मानव धर्म की स्थापना के लिए 'विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक', 'ईसा-रूहअल्ला, 'इमाम मेंहदी' के तेज को अपने में समाहित कर 'महामति प्राणनाथ' की उपाधि से विभूषित होकर, हिन्दू-बौद्ध, ईसाई और मुसलिम धर्मो की ऊपरी भेद भाव को मिटाकर विश्व में 'एक दीन या एक धर्म' और 'एक मानव जाति' का बिगुल बजा चुके थे। सद्गुरु देवचंद के द्वारा लोक जागनी का जो कार्य भार सौंपा गया था वह चरम सीमा पर पहुँच चुका था। अपनी लौकिक लीला समाप्त कर परमधाम की ओर चला चली की बेला थी। उसी पावन बेला में सिन्धी बानी का यह अमृत रस स्रवित हुआ। सामान्य जन की

भी अंतिम बानी में समस्त जीवन का सार अथवा अनुभव रहता है। प्राकृत जन की भी अंतिम बानी महत्वपूर्ण होती है फिर महामति प्राणनाथ तो मानवता की महत्तम ऊँचाई पर प्रतिष्ठित थे। ऐसे महा मानव, पूर्ण पुरुष के अंतिम काल की बानी होने के कारण सिन्धी बानी का 'तारतम बानी' या 'कुलजम स्वरूप' में अपना विशेष महत्व है।

विस्तार की दृष्टि से 'कुलजम' में लगभग अठारह हजार चौपाइयाँ हैं। इनमें लगभग बारह हजार तो राष्ट्र भाषा हिन्दी या हिन्दुस्तानी भाषा में, ४६०० चौ० गुजराती में, १०० पंक्तियाँ अरबी में और ५२४ चौपाइयाँ सिन्धी भाषा में हैं। इस प्रकार आकार की दृष्टि से सिन्धी बानी एक लघु आकार की रचना है। किन्तु आध्यात्मिक दृष्टि कोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। महामति की रचना में 'रास' को बीज कहा जा सकता है क्योंकि जेल में (हवसा या प्रबोधपुरी) में सर्व प्रथम वही वाणी अवतरित हुई। जिस प्रकार बीज से पेड़ के सभी अंग (जड़, तना, शाखा, पत्ती, फूल और फल) विकसित होते हैं और अंत में फल पक कर पुनः बीज में ही समा जाता है उसी प्रकार 'रास' से अंकुरित होकर महामति प्राणनाथ की समस्त आध्यात्मिक साधना सिन्धी बानी में परिपक्व फल के बीज के रूप में सिमट गई है। 'रास' में उस रास-रस का वर्णन है जिसे अक्षरातीत कृष्ण ने ब्रज में अवतरित किया था। सिन्धी बानी में महारास के उस अखंड सुख की ओर संकेत है जो नित्य है, शाश्वत है और अक्षरातीत है। उस महारास में सम्मिलित होने के पूर्व महामति की महती अभिलाषा अपने जागृत 'सुन्दर साथ' या ब्रह्म सृष्टियों या मोमिनों के लिए क्या है? और संसार के खेल में भूले हुए संसारी जीवों या प्रवाही जीवों के लिए क्या पीड़ा है? क्या वे महती वेदना है? इसका सजीव तथा सरस चित्रण सिन्धी बानी में मिलेगा। अतएव, आकार में लघु होने पर भी सिन्धी बानी की महत्ता समस्त साधकों के लिए महान है।

ग्रन्थ की प्रारम्भिक चौपाई में महामति संसार की आत्माओं को सम्बोधित करके कहते हैं।

उठने की अन्तिम बेला आ गई! आत्माओं! खेल (नश्वर खेल) को छोड़ दो। उठ कर परमधाम की ओर उन्मुख हो और हंस कर अपने प्रियतम से मिलो।[1] मृत्यु लोक में जो भी जन्मता है वह मरता भी है। किन्तु मरना भी कई प्रकार का होता है। प्रवाही जीव की मोह ग्रस्त आत्मा शरीर को त्यागते समय रोती है। और उसके सम्बन्धी भी रोते हैं। किन्तु आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने वाले भक्त या मोमन संसार को हँसते-हँसते छोड़ते हैं, क्योंकि उनके लिए मृत्यु एक ऐसा पुल है जो परमधाम का द्वार खोलती है उसके बाद परमात्मा से हँस-हँस कर उनका मिलन होता है। उपर्युक्त चौपाई में महामति साधक आत्मा को यह संदेश देते हैं कि संसार को हँस कर ही छोड़ना चाहिए रो कर नहीं। जीवन उसी का सफल माना जाएगा जो मरते समय ऐसी उदात्त आध्यात्मिक भूमि में प्रतिष्ठित हो जाए जहाँ मरने का दुःख नहीं, संसार छोड़ने का गम नहीं बल्कि परब्रह्मत्व पद की प्राप्ति की खुशी रहती है। हँसते-हँसते संसार कौन छोड़ता है? जो शरीर, इन्द्रिय, मन—बुद्धि के स्तर से ऊपर उठ कर आध्यात्मिक स्तर में दृढ़ता से प्रतिष्ठित होता है। इसी स्तर को गीता में 'ब्राह्मी स्थिति' कहा गया है। ऐसे ही साधक को जीवन मुक्त स्थित प्रज्ञ कहा जाता है। ऐसी ही रूहें अथवा आत्माएँ अक्षरातीत परब्रह्म की 'अंगना' हैं।

उपर्युक्त चौपाइयों में महामति यही संकेत करते हैं कि आध्यात्मिक जीवन की प्राप्ति ही जीवन का वास्तविक बड़प्पन है। ऐसी बड़ाई का पद जिन्हें मिले उनका बड़प्पन इसी में है कि बड़प्पन का अहंकार न हो।

---

१. आखर वेरा उत्थनाजी, अईं रूहें छड़ेजा रांद।
उत्थी विच्च अरसजे, कोड करे मिडूं कांघ॥
सिन्धी बानी। प्रकरण १। चौपाई १।

उन्हें चाहिए कि बड़प्पन से पल्ला छुड़ाते रहे। महामति अत्यन्त विनय से निवेदन करते हैं।

"मैं अपने आपको कुछ-कुछ जानती थी। इसलिए बड़ी होने से बचने के लिए पल्ला छुड़ाती रही।"[१]

बड़ी रूह होने पर भी बड़े होने का दावा न करना ही वास्तविक बड़प्पन है। यही महामति का इन पंक्तियों में संदेश है। किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं है कि बड़ी रूह होने की जिम्मेदारी न निभाई जाए 'बड़ी रूह' अथवा दिव्य आत्मा का उत्तरदायित्व यही है कि जो अपना 'साथ' है उसे भी 'अखंड सुख' की प्राप्ति कराई जाए। व्यक्तिगत मोक्ष के साथ-साथ 'सुन्दर साथ' के मोक्ष का भी ध्यान रखना चाहिए। महामति इस जिम्मेदारी को कभी भी नहीं भूलते हैं। अकेले वह 'अखंड सुख' भी नहीं चाहते जब तक उनके सुन्दर साथ को 'अखंड सुख' का भागीदार न मान लिया जाए। अक्षरातीत परब्रह्म से वे कहते हैं :—

आपने मुझे सुझाया कि यदि तू अकेली हो जाए तो तुझसे बातें भी करूँ और दर्शन भी दूँ।"[२]

किन्तु महामति तो 'परमधाम' के 'अखंड सुख' की प्राप्ति के लिए भी 'सुन्दर साथ' को छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। जिस 'परमधाम' के 'अखंड सुख' की प्राप्ति के लिए सारा जीवन लगा दिया, सारे संसारिक सुख को त्याग कर बड़ी से बड़ी 'कसनी' सही, बड़ी से बड़ी साधना की—

---

१. आंऊं पांहि जी परमें, कीं कीं पाण के भाइयां।
बड़ी थियन विच्च में, छेड़ो छड़ाइयां।।

सिन्धी बानी। प्रकरण १। चौपाई ३७।

२. तू मूके ईं बुझाइओ, जे तूं हेकली थिए।
त तोसे करिआं गालड़ी, दीदार पण डिए।।

सिन्धी बानी। प्रकरण १। चौपाई ४२।

यही सुख सामने है किन्तु महामति की महती आत्मा इस 'अखंड सुख' को पाकर भी यही कहती है कि 'सुन्दर साथ' को यह 'अखंड सुख' न मिले तो मैं अकेली इस सुख को नहीं पाना चाहती इसलिए मैं अकेली कैसे हो जाऊँ, जब आपने दूसरी रूहों को मेरे साथ लगा दिया है[1]—अतएव महामति प्रियतम ब्रह्म को यही उत्तर देते हैं—

'मैं अकेली नहीं हो सकती'[2]

अपने सुन्दर साथ के लिए यह चिन्ता, यह बेकली महामति को मध्यकाल के अन्य धार्मिक नेताओं से बहुत ऊँचे पर प्रतिष्ठित कर देती है। मध्यकाल में बल 'व्यक्तिगत मोक्ष' पर अधिक था। यही मध्ययुग की कमी थी। आधुनिक युग में 'संघ मुक्ति' या 'साथ मुक्ति' पर अधिक बल दिया जाता है—यही वर्तमान युग का 'महान आदर्श है' इस आदर्श की दृष्टि से महामति प्राणनाथ मध्य युग के धर्म सुधारकों से बहुत आगे हैं। इस प्रकार अपने को तथा 'सुन्दर साथ' को ब्रह्म सुख की प्राप्ति हो यही महामति की अन्तिम महती अभिलाषा है।

सिन्धी बानी में महामति तीसरी तकरार या जागनी कार्य की भी चर्चा करते हैं। जीवन के अंतिम समय में अपने लक्ष्य पूर्ति का लेखा जोखा लेना स्वाभाविक है। इस सम्बन्ध में महामति सर्व प्रथम सद्गुरु देवचन्द जी को स्मरण करते हैं जिन्होंने परमधाम जाते समय की मेहेराज (कालान्तर में प्राणनाथ) को बुलाया और कहा :—

---

१. आंऊं हेकली कीं थिआं, बी लगाई तो।
तो रे आए को कित्तई, जे हिनके पल्ले सो ॥
सिन्धी बानी। प्रकरण १। चौपाई ४३।

२. थी न सगां हेकली, बी तो लगाई।
सिन्धी बानी। प्रकरण १। चौपाई ४५।

"दो रूहें (छत्रसाल—औरंगजेब) हैं। वे खेल (संसार-क्रीड़ा) में संलग्न हैं। उन्हें जगाओ कदाचित् वे जाग जाएँ।"[1]

अपने जागनी अभियान में महामति प्राणनाथ ने अपने युग की इन दोनों महान पुरुषों की आत्माओं को जगाने का प्रयास किया। इन दोनों को ढूंढ़ने में हजारों अन्य आत्माएँ जागृत हुईं। जो नींद में पड़ी थीं जिन्हें अपने आध्यात्मिक जीवन या मूल निवास—परमधाम की कोई स्मृति नहीं थी।[2] इन दोनों आत्माओं में से एक तो (छत्रसाल) प्राणनाथ से मिली और जागृत हुई। दूसरी आत्मा को खोजते-खोजते जमाना बीत गया। उसने खबर तो सुनी—

मूं वेओ जमानो डोरीं दे, हुनबी पण खबर सुईं।

सिन्धी बानी। प्रकरण ५। चौपाई २५।

उसके जगाने का जीवन भर प्रयास किया अनेकानेक कष्टों का सामना हुआ; किन्तु शरियत (कर्मकाण्ड) में ग्रस्त काजी-मुल्ला, कोतवाल, अमीर से घिरी हुई औरंगजेब की आत्मा नहीं जग सकी। औरंगजेब के न जागने की पीड़ा, वेदना भी महामति की बहुत बड़ी वेदना थी। एक अन्य चौपाई में इस विकलता को महामति ने स्वयं इस प्रकार कहा है:—

---

१. तड़े धणिएँ मूके चयो, जे व जण्यूं आईं न।
खिल्ले थ्यूं न्हारे रांगकण, तांजे सांगाई न॥

सिन्धी बानी। प्रकरण ५। चौपाई १२।

२. डोरींदे जे लधिम, अरवा कै हजार।
किन जाण्यो घर नूर जो, के नूर घर पार॥

सिन्धी बानी। प्रकरण ५। चौपाई २०।

सक्रुमारबाई (औरंगजेब की रूह) को भी सद्गुरु देवचन्द जी ने हमारी असल गिरोह में से एक कहा था। किन्तु वह अभी तक नहीं आई।[1]

औरंगजेब के जाग्रत न होने से महामति के मन में क्रोध नहीं, क्षोभ नहीं, शत्रुता की भावना नहीं बल्कि एक गहरी पीड़ा है, व्याकुलता है, तड़पन है। औरंगजेब को जाग्रत करने का महामति का यह प्रयास ऐतिहासिक महत्व का है और महामति प्राणनाथ को एक समुदाय या धर्म का प्रवर्तन नहीं अपितु सर्व धर्म समन्वय के संदेश वाहक के रूप में प्रस्तुत करता है। दूसरे महामति का यह कथन कि देवचन्द जी के मत में औरंगजेब भी हमीं में से एक है। इस धर्म में औरंगजेब को 'सकुमार' तथा छत्रसाल को 'सकुण्डल' कह कर संबोधित किया जाता है। 'सकुमार' का अर्थ है—जो कुंआरा या 'क्वारी' अथवा 'अनव्याही' 'आतमा' हो और "सकुण्डल' का अर्थ है कुण्डल के सहित या धर्म में प्रतिष्ठित आतमा। औरंगजेब को तुच्छ नामों से कभी भी सम्बोधित नहीं किया गया। जिसमें औरंगजेब के प्रति इस सम्प्रदाय की सहिष्णुता पूर्ण दृष्टिकोण का प्रमाण मिलता है।

सिन्धी वानी में महामति आध्यात्मिक जीवन के चरमलक्ष्य—मोक्ष अथवा अखण्ड सुख की प्राप्ति इसी जीवन में हो या इस जीवन के उपरान्त हो ? इस सम्बन्ध में भो अपने सिद्धान्त का स्पष्टीकरण करते हैं। संसार के प्रायः सभी धर्म यह उपदेश देते हैं कि इस लोक में तपवाने से या धार्मिक जीवन व्यतीत करने से मरणोपरान्त परमातमा से मिलन होता है। यह मोक्ष सालोक्य, सामीप्य, सायुज्य तथा सामीप्य मुक्ति के रूप में मिलता है। किन्तु ये सभी प्रकार की मुक्तियाँ मरणोपरान्त ही प्राप्त होती हैं। इस प्रकार प्रायः सभी धर्मं इस लोक में कष्ट सहन,

---

१. पण असल पांहिजी गिरों में, जा रूह अल्ला चई।
सकुमार बाई गडवी, अज्जां सा पण न्हार सई॥

तपस्या, लौकिक सुख से विरक्ति नकद लेते हैं किन्तु मोक्ष के सुख को दूसरे जीवन, दूसरे लोक के लिए उधार बना देते हैं ऐसे उधार धर्मों के आदर्श महामति प्राणनाथ को बहुत अधिक प्रिय नहीं प्रतीत होते। वे दोनों लोकों में ब्रह्म मिलन या प्रियतम मिलन का सुख चाहते हैं अतएव यह मधुर स्वर में कहते हैं :—

"मैं आपकी पत्नी हूँ। आप मुझे जीतेजी अपना अंग दीजिए। यदि आप मेरे मरने के बाद वह सुख देंगे तो आपका मेरा सम्बन्ध कैसा है ?[1]

जीवन के इसी खेल में ही परमात्मा को प्राप्त करना चाहते हैं। पूरे विश्वास के साथ महामति कहते हैं :—

'यहीं अपने सब लाड पूरे करें तभी आप मेरे सच्चे पति हैं।'[2]

साधक आत्मा की परमात्मा से, पति से यही आकांक्षा है—हे प्रियतम मैं आपकी पत्नी हूँ। दिल में करोड़ों बड़ी-बड़ी उम्मीदे हैं। अरे आप करोड़ गुना क्यों नहीं देते।[3]

उपर्युक्त पंक्तियों के द्वारा महामति का सन्देश यही है कि जीते जी परमात्मा के परिचय को, मारफत को, मिलन को जो इसी जीवन में प्राप्त करता है वड़ा सच्चा धर्मी है, भक्त है मोमन है, आशक है। इस जीवन में यह सुख तभी मिलता है जब यह दिल ही 'अरश अजीम' या

---

१. आंऊं धणिआंणी तोहिजी, डे तूं मूं जीरे अंग।
मूं मुए पुठांजे हिए, हेकेडी निसवत अंग॥
सिन्धी बानी। प्रकरण ७। चौपाई ८६।

२. सिन्धी बानी। प्रकरण ७। चौपाई ८५।

३. आंऊं धणिआंणी तोहिजी, मूं धर अरस अजीम।
मूं कोडयूं उमेदूं वडियूं, तू तेआं कोड गण्यूं को न डिअम॥
सिन्धी बानी। प्रकरण ७। चौपाई ३८॥

'परम धाम' बन जाए तभी अक्षरातीत ब्रह्म अपने आप इसमें बिहार करेंगे।

उपर्युक्त संक्षिप्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि सिन्धी बानी प्राणनाथ के धार्मिक सिद्धान्तों की दृष्टि से प्रणामी धर्म की साधना पद्धति को सार रूप में प्रस्तुत करती है। सिन्धी भाषा—भाषियों के लिए यह वाणी उनके प्राचीन साहित्य को सुरक्षित रखने के कारण महत्वपूर्ण है। अभी दो वर्ष पूर्व सिन्धी भाषा को भी भारतीय संघ की राजनीतिक मान्यता प्राप्त भाषाओं में स्थान प्राप्त हुआ है। सिन्धी का प्राचीन साहित्य उपलब्ध नहीं है। यह ग्रन्थ १७वीं शताब्दी ई० में लिखा गया अतएव सिन्धी भाषा—साहित्य के प्राचीन सुरक्षित साहित्य के रूप में यह सिन्धी साहित्य की एक अपूर्व निधि होगी। दूसरी ओर कुलजम स्वरूप को यह वानी एक राष्ट्र ग्रन्थ के रूप में प्रस्तुत करती है। हिन्दी के संत तुलसी-सूर की कृतियाँ—रामचरितमानस, सूर सागर—साहित्य और साधना दोनों दृष्टियों से महान हैं। किन्तु अपनी ओर ब्रज भाषा में रचित ये दोनों ग्रन्थ अधिकांशतः हिन्दी प्रदेश की जनता को सम्बोधित करते हैं अन्तर्प्रादेशिक राष्ट्र भाषा हिन्दी या हिन्दुस्तानी में रचित 'कुलजम' सारे देश की हिन्दू बौद्ध मुसलमान ईसाई जनता को सम्बोधित करता है। सिन्धी, गुजराती, कच्छी—अरबी में लिखित कुलजम में संग्रहीत बानियाँ उसे एक राष्ट्र ग्रन्थ के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

माता बदल जायसवाल
हिन्दी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

[illegible]

[illegible]

निजनाम श्री कृष्णजी, अनादि अक्षरातीत ।
सोतो अब जाहेर भए, सबबिध वतन सहित ॥

श्री किताब सिंधीकी जो सिंधी भाषा मिने
आखर फजरकों हजूरने अरज करी है सो
स्वाल जवाब लिखे हैं सो अरस
रूहें हालसों सुनियों, ज्यों
हाल तुमको भी आवे ।

❋ सिंधी ❋

आखर वेरा उत्थणजी, अंईं रूहें छडेजा रांद ।
उत्थी विच्च अरसजे, कोड करे मिड़ू कांध ॥ १

अन्तिम उठने की वेला (फज्र) आ गई है । आत्माओं ! खेल (नश्वर संसार) को छोड़ दो । अर्श परमधाम में उठो और हंसकर अपने प्रियतम से मिलो ।

धणी मूहजी रूहजा, हांणे चुआं कींअ करे ।
रूहके डिन्यो परडेहडो, चओ सो दिल धरे ॥ २

मेरी आत्मा के स्वामी ! अब मैं कैसे कहूँ ? आत्मा को परदेश दे दिया । आप जो कहेंगे वही दिल ग्रहण कर लेगा ।

इसक डिने तूं, तो रे इसक न अच्चे ।
घणुएं करियां आऊं, कूड न उडे रे सच्चे ॥ ३

आपने प्रेम दिया । आपके बिना प्रेम आता नहीं । मैं कितना भी करूं, तो भी सत्य के बिना झूठ उड़ता नहीं है ।

कीं करिआं केडा वंजां, चुआं कींअ करे ।
न पेराइआं पडूत्तर, न अच्ची सगां गरे ॥ ४

क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? कैसे कहूँ ? न तो मेरी बात का जवाब ही मिलता है, न मैं आपके पास ही आ सकती हूँ ।

सज्जण मूहजी रूहजा, तांजे डिए रूह सांजाए ।
त हिकै आहि अरवाह के, पेरे तरे पुजाए ॥ ५

हे मेरी आत्मा के साजन ! यदि आप अपनी पहचान देदो तो एक ही आह रूह को तेरे कदमों तले पहुँचा दे ।

धणी मूहजी रूहजा, गिनी वेई विसराई ।
पेईस ते पेचन में, बडी जार बडाई ॥ ६

मेरी आत्मा के स्वामी ! मुझे यह भूल-माया–ले गई । इसके फंदे में पड़ गई । अहंका वन्धन वड़ा कठोर है ।

मूं मँगो आं डेखारई, करिआं गाल्ह केई ।
हांणे चोराइए त चुआं थी, गाल्ह गरी थी पेई ॥ ७

मैंने माँगी आपने दिखाई । अव क्या बात करूं ? आप कहलाते हैं तो इतना भी कहती हूँ कि यह बात बड़ी भारी हो कर पड़ी ।

तरसाइए त तरसां मूहके, मूं मंझां कीं न सरयो ।
सभ गाल्यूं आंजे हत्थमें, जाणे तींअ करयो ॥ ८

विलखाते हो, तो आपके मुख देखने को बिलख रही हूँ । मुझ से तो कुछ न बन पड़ा । सब बातें आपके हाथ में है । जैसे जानो वैसे करो !

सिकाइए त सिकां, मूं में सिकण न कीं।
रोहोंदिस तेही हालमें, अंई रखंदा जीं॥ ९

तरसा रहे हैं तो तरस रही हूँ मुझमें तो कोई चाह नहीं रही। उसी हाल में रहूँगी जिसमें आप रखेंगे।

हिक सिकां तोहिजे सुखके, जे से संभरे सुख।
से सुख हिन विसारिआं, हे जे डिठम डुख॥ १०

तेरे एक सुख के लिये तरसती हूँ, जिससे वे सुख याद आएं, जिन्हें मैं यहाँ के दुखों को देख कर भूल चुकी हूँ।

हिन सुखे संदियूं गालियूं, आईन अलेखे।
हिअडो मूं सुँजो थिओ, हिए न अच्चे ते॥ ११

इन सुखों की बातें असंख्य है। मेरा हृदय सूना हो गया है यह उन्हें ध्यान में लाता ही नहीं।

जे सुख तोहिजी अंखिएँ, डिना असांके तो।
से सुख कंने मूं सुआं, सुँजो हिओ न झल्ले सो॥ १२

जो सुख परमधाम में आपने अपने नयनों से दिया, वह मैंने कानों से सुना, परन्तु सूना हृदय उनका ध्यान ही नहीं करता।

जे सुख तोहिजे अरस में, डिना तो गालिन।
से सभ विअम विसरी, सुँजे हिअडे न चढिन॥ १३

जो सुख परमधाम में आपने अपनी बातों से दिए, वे सब मैं भूल गई। शून्य दिल में वे कभी आते ही नहीं।

के पडूत्तर मूं केआं, के तो केआं कांध।
से सुजे हिएँ न संभरे, विसरचा मए रांद॥ १४

प्रियतम! मैंने आपकी बात का उत्तर कैसे दिया और आपने मेरी बात का कैसे दिया, वे सूने दिल में याद नहीं आते है। वे सब खेल में भूल गये।

हिएँ चढ़ाइए तूं, त सभ सुख हिओ झल्ले ।
जे सुख डिए मेहेर करे, त बेओ केर पल्ले ॥ १५

यदि आप कृपा करके उन सुखों को मेरे मन पर अंकित कर दें तो दिल उनका विश्वास कर लेगा। यदि आप कृपा करके सुख देते हैं, तो दूसरा कौन रोक सकता है।

तो तरसाएँ तरसण, तोके पस्सण नेण ।
कोड थिए कन्नके, तोहिजा सुणन मिठडा वेण ॥ १६

आपके विलखाने से ही नयन आपको देखने के लिए तरसते हैं। आपके मीठे वचन सुनने के लिए कान उल्लसित रहते हैं।

तो तरसाएँ तरसण, हिअडो मिडन के ।
हे डिनो अच्चे मासूकजो, इसक अरसमें जे ॥ १७

आपके तरसाये ही दिल आपके मिलने के लिये छटपटाता है। महबूब के दिए ही अर्श का इश्क आता है।

विहारे वट ओडडी, मत्थें डिनो परडेह ।
डिस्सां न सुणिआं गालडी, कीं करिआं चुआं केकेह ॥ १८

आपने-अपने पास बिठा कर ऊपर से परदेश दे दिया। आपको न तो देख ही सकती हूँ, न बात सुन सकती हूँ। क्या करूं और किस को कहूँ ?

जे अरवाहें अरस ज्यूं, से सभ मूं अडां न्हारीन ।
आंऊं पस्सां आं अड़ूं, हे बिठ्यूं जर हारीन ॥ १९

जो अर्श की रूहें हैं वे सब मेरी ओर देखतीं हैं। मैं आपकी ओर देखती हूँ। वे बैठी नयनों से आँसू वहा रहीं हैं।

तो लिख्यो फुरमानमें, मूं अरस दिल मोमन ।
से सुणी वेण फुरमान जा, सूजो झल्यो दिल रूहन ॥ २०

आपने कुरान में लिखा कि मेरा अर्श मोमिनो का दिल है । फुर्मान के वचन सुन कर रूहों के दिल ने मुझे जकड़ लिया है ।

त केहो पडूत्तर मूहके, चुआं कुरो रूहन ।
रूहें उमेदूं मूंमें, आंके सभ रोसन ॥ २१

मुझे क्या जवाब देते हैं ? मैं रूहों को क्या कहूँ ? सब रूहें मुझ पर आस लगाये हैं । यह आप जानते हैं ।

हाणे केहडो हाल मूहजो, रूहें केहडो हाल ।
न डेखारे न डिठम, बेओ तो रे नूरजमाल ॥ २२

अब मेरा कैसा हाल है और रूहों का कैसा हाल है (किससे कहूँ) ? आपने अपने सिवा, हे नूर जमाल, कोई दिखाया नहीं और न ही हमने किसी ओर देखा ।

तो डिनी सोहेली करे, न तां वाट घणूं विखम ।
हेआं हल्लो सभ सुखन में, रूहें घुरें एह खसम ॥ २३

आपकी देन से बात सहल हो गई नहीं तो राह बड़ी कठिन थी । यहाँ से चलना सुखमय हो, रूहें अपने प्रियतम से यह माँगतीं हैं ।

तो पाण डेखारे डिठम, बेओ कोए न रखे हंद ।
सेहेरग से डेखारे ओडडो, कित करने पेओ न पंध ॥२४

आपने अपना आप दिखाया तो मैंने देखा । अपने सिवा आपने कोई ठिकाना नहीं रखा । शाहरग (दिल की नस) से भी करीब आपको देखा । कहीं दूर जाना नहीं पड़ा ।

तो चुओ आं चुआँथी, मूंजी या उमत ।
अस्सीं इंदासी कोठिआं, कोठीने जे भत ॥ २५

आपके कहलाये अपनी या अपनी रूहों की बात कहती हूँ । हम आपके बुलाने पर जिस तरह आप बुलाएंगे चली आएंगी ।

रूहें अस्सीं निद्रमें, न तां घणां लाड घुरन ।
अंईं जाणोथा सभ कीं, जे हाल आए रूहन ॥ २६

हम रूहें नींद में हैं, नहीं तो बहुत लाड माँगती । आप सब जानते हैं कि हम रूहों का क्या हाल है ।

चायो आंजो चुआंथी, मूं हंद न्हाए कुच्छण ।
संग बेअम विसरी, छडिम ते घुरण ॥ २७

आपके कहलाये कह रही हूँ मेरा तो बोलने का कोई ठिकाना नहीं । सम्बन्ध भूल गई हूँ, इसलिए माँगना छोड़ दिया है ।

घुरण अच्चे दिल में, पण द्रज्जां तोहिजे द्राए ।
लाड करे त घुरां, जे पस्सां संग सांजाए ॥ २८

दिल में माँगने की चाह पैदा होती है परन्तु आपके डराए डरती हूँ । खुशी से तभी तो माँगूं जो आपका सम्बन्ध जान आपको पहचान लूं ।

रूहें चोंण सभे मूंहके, हाणे आंऊं चुआं केकेह ।
न पस्सां न सुणिआं संडेहडो, डिंने पेरे हेठ परडेह ॥ २९

रूहें सब मुझे कहती हैं, अब मैं किससे कहूँ ? न देखती हूं न संदेशा ही सुन पाती हूँ । चरणों के नीचे (कैसा) परदेश दे दिया है ?

सच्चो सोणे जो थेओं, भाइयां सोणो थेओ सच्चो ।
लाड कोड के से करिआं, अंखिएँ जां न अच्चो ॥ ३०

सत्य सुपने जैसा हो गया और सुपने को सत्य जैसा जाना। जब तक आप आँखों के सामने न आ जाओ तब तक लाड-दुलार किस से करूं ?

कीं करिआं गालडी, जां न पस्सा पांहिजे नेण ।
जे सुणाइए त सुणां, मिठडा तोहिजा वेण ॥ ३१

जब तक आंखों से न देखूं तब तक क्या बात करूं ? जो आप सुनायें, तो आपके मीठे वचन सुनूं ।

सुख तोहिजा सिपरी, अच्चे न लेखे में ।
पार न अच्चे अपारजो, कडी न गणिआं के ॥ ३२

प्रियतम आपके सुखों की गणना नहीं हो सकती । जो अपार है उसका पार नहीं पाया जा सकता । कभी किसी ने गिना भी नहीं ।

गुझांदर रूहन जो, सभे तूं जाणे ।
कुरो चुआं विच्च वड़ी थेई, मूं पांहिजेडी न पाणे ॥ ३३

रूहों के गुझ (भेद) आप सब जानते हैं । उनमें वड़ी वन कर मैं अपनी सखियों से क्या कहूँ । मैं स्वयं ही आप जैसी नहीं बन पाती ।

जा कांध न करे पांहिंजो, ऊभी बिअनके चोए ।
डे सुहाग बिअनके, पांण अंगण ऊभी रोए ॥ ३४

जब तक पति को अपना न बना ले और दूसरों को बताने चल पड़े वह दूसरों को तो सुहाग दे देती है, पर स्वयं खड़ी आंगन में रोती है ।

बेओ जमारो बडाईमें, बेठी खोए उमर ।
डे बडाइयूं बिअनके, पाण न खुल्यो दर ॥ ३५

जमाना बड़प्पन में बीत गया । जीवन गंवा बैठी । दूसरों को तो बड़प्पन देती है पर स्वयं उसके लिए द्वार न खुला ।

थेई धणीसे सुरखरू, सेई सुहागिण होए ।
सामर गिने पाणसे, जे आडो पट न कोए ॥ ३६

जो स्वामी से सुर्खरू हो जाए, वही सुहागिन होती है । वह अपने सिर ले सकती है जिसकी राह में कोई पर्दा या रुकावट नहीं ।

आंऊं पांहिजी परमें, कीं कीं पाणके आइयां ।
बडी थीअन विच्चमें, छेडो छडाइयां ॥ ३७

मैं अपने आप को कुछ-कुछ जानती थी । इसीलिए बड़ी होने से बचने के लिए पल्ला छुड़ाती रही ।

गाल्यूं सूजे दिलज्यूं, सभ तूंहीं सुजाणे ।
हे सभेई तोहिज्यूं, तो करायूं पाणे ॥ ३८

मेरे दिल की बातें सब आप जानते हैं । यह सब आपकी ही कराई है । आप ही सब कहलवाते हैं ।

मथे आंऊं त गिना, जे कीं मूमें होए ।
आंऊं मुझ जांणा पाण विच्च जो, बेओ न जाणे कोए ॥ ३९

मैं अपने सिर बात तब लूं यदि मुझ में कुछ हो । अपने अन्तर का भेद मैं जानती हूं और कोई नहीं जानता ।

मूके बड़ी वधारिए, डिने सभनी में सुहाग ।
कीं डिठम कीं डिसंदिस, जेडो कंने भाग ॥ ४०

मुझे सब से बढ़ा कर सबमें सौभाग्य दिया । कुछ देखा है, कुछ देखूंगी । जैसा भाग्य आप गढ़ेंगे, वैसे रहूंगी ।

त केहो जवाब रूहनके, विच्च करिआं की आंऊं ।
न कीं सुणाइए गुझमें न पांइदडे धांऊं ॥ ४१

तो अब रूहों के लिए क्या उत्तर है ? बीच में मैं क्या करूं ? न तो आपने गुप्त रूप से ही बताया न पुकारने पर ही उत्तर मिलता है ।

तो मूंके ईं बुझाइओ, जे तूं हेकली थिए ।
त तोसे करिआं गालडी, दीदार पण डिए ॥ ४२

आपने मुझे सुझाया कि यदि तू अकेली हो जाए तो तुमसे बातें भी करूं और दर्शन भी दूँ ।

आंऊं हेकली कीं थिआं, बी लगाई तो ।
तो रे आए को कित्तईं, जे हिनके पल्ले सो ॥ ४३

मैं अकेली कैसे हो जाऊं ! जब आपने दूसरी (इन रूहों) को मेरे साथ लगा दिया है । आपके सिवा कहीं कोई है जो इनको थाम सके ?

से बस न्हाए मूंहजे, जे कीं करिए से तूं ।
जे कीं जाणे से करयो, मूं में रही न मूं ॥ ४४

मेरे वस में कुछ नहीं है । आप ही सब कुछ कर सकते है । आप जो जानो वही करो । मुझ में मुझपन कुछ रहा नहीं ।

थी न सगां हेकली, बी तो लगाई ।
छूटे न तोहिजे तोह रे, मूंजी फिरे न फिराई ॥ ४५

अकेली मैं हो नहीं सकती, दूसरी आपने ही लगाई है । आपकी लगाई आपके बिना छूट नहीं सकती और मेरी मैं लौटाने से लौटाई नहीं जा सकती ।

गोता खंदे वेई उमर, पट सूके रे पाणी ।
जे तो डिनी हेत करे, सा टरे न सत्राणी ॥ ४६

पानी के विना सूखी धरती पर गोता खाते उमर बीत गई। जो आपने प्यार करके दी वह शत्रु माया अब टलती नहीं है।

हे जा पेयम फांई जोर जी, से जा लाहिआं जोर करे ।
झल्ले पेर पिरनजा, पण मूंजी टारी कीं न टरे ॥ ४७

यह जो जोर की फांसी पड़ गई है उसे साहस कर के, प्रियतम के चरण पकड़ कर उतार दूं, परन्तु मेरे मिटाने से वह मिटती नहीं।

धणी मूंहजी रूहजा, मूं से हित गालाए ।
पिरी पस्सण जीं थिए, से तूंहीं डिए उपाए ॥ ४८

मेरी आत्मा के स्वामी ! मुझ से यहाँ बातें करो। प्रियतम को देख सकूं, इसका कुछ आप ही उपाय करिये।

हे डात्यूं सभ तोहिज्यूं, इसक जोस अकल ।
मूरा बुझाइए मूंहके, आखर लग असल ॥ ४९

सब नियामतें आपकी हैं। इश्क, जोश, अक्ल कुछ भी क्यों न हो। यह आपने मुझे पहले से ही समझा दिया अन्त तक यही वास्तविकता है।

आंऊं अव्वल न आखर, सभनी हंदे तूं ।
हे मुराई भली भत्तें, हे तो डेखारई मूं ॥ ५०

मैं न पहले थी न अन्त में रहूँगी। सब ठिकाने आप ही हैं। यह आदि से ही आपने मुझे दिखा दिया है।

अरज पांहिजी रूहनजी, सभ तूं हीं कराइए ।
बाहेर मंझ अंतर, सभ तूं ही आइए ॥ ५१

अपनी रूहों के लिए विनती भी आप ही कराते हैं। बाहिर, अन्दर अन्तर में सब जगह आप ही हैं।

जीं कढे तूं हिआं, जीं पुजाईंदें घर।
हल्ले न ज़रे जेतरी, बी केहजी फिकर ॥ ५२

जैसे आप यहाँ से निकालेंगे और जैसे भी घर पहुँचायेंगे किसी दूसरे की ज़रा भी तो नहीं चल सकती। दूसरे किसी की चिन्ता ही क्यों ?

तूं करिए तूं कराइए, तूं पुजाइए पाण।
जा मथे गिने तिर जेतरी, सा जोए वडी अजाण ॥ ५३

आप ही करते हैं, आप ही कराते हैं, आप ही पहुँचाते हैं। जो अपने सिर तिल मात्र भी ले वह स्त्री बड़ी अनजान है।

सिकण सडण जीरे मरण, से सभ हत्थ धणी।
तो चंगी पेरे डेखारिओ, त मूं न्हारयो नेण खणी ॥ ५४

ललचाना, बुलाना, जीना, मरना वह सब प्रियतम के हाथ में है। आपने यह बात अच्छी तरह दिखाई, तो मैंने आँख उठा कर देख ली।

हाणे गाल्यूं मूं जे हालज्यूं, कंदिस आंसे आंऊं।
बेओ केर सुणीदो तो रे, जे करिआं वडियूं धांऊं ॥ ५५

अब अपने हाल की बातें मैं आपसे ही करूंगी। आपसे बिना कौन सुनने वाला है चाहे मैं कितना भी पुकार लूं ?

तो न डेखारयो मूर थी, कोए हंद बेओ।
मूंजी रूहके नूरजमाल रे, हंद जरो न कित रेओ ॥ ५६

आपने शुरु से ही दूसरा कोई ठिकाना नहीं दिखाया। मेरी रूह का नूर जमाल के बिना दूसरा जरा भी स्थान नहीं रहा।

महामत चोए मेहेबूबजी, जे उपटिए द्वार ।
रूहें गिनी अचवां पाणसे, जीं अचवी करिआं करार ॥५७

महामति कहतीं हैं "महबूब जी जो आप द्वार खोल दें तो मैं रूहों सहित आ जाऊँ । आपके पास आकर चैन पाऊं ।"

प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ५७ ॥

रे पिरीअम, हत्थ तोहिजडे हाल ।
आएडी वेरां उत्थणजी, हाणे पस्सां नूरजमाल ॥ १

हे प्रियतम ! आपके हाथ हमारा हाल है । उठने का समय आ गया है । अब नूर जमाल स्वामी को देखूं ।

अरवाहें जा हिन अरस जी, कीं छडे खिलवत हक ।
जा डेखारिए रूहके, ते में जरो न सक ॥ २

अर्श की जो अरवाहें हैं वे परमात्मा की खिल्वत कैसे छोड़ सकती हैं । आपने रूहों को जो एकान्त बैठक दिखाई है उसमें जरा भी सन्देह नहीं ।

हिन अरसजे बाग में, आयूं मुंदयूं मींह ।
हिन वेरां अस्सां के, जुदयूं रख्यूं कींह ॥ ३

इन अर्श के बागों में वर्षा की ऋतु आई है । इस समय आपने हमें अलग कैसे रख छोड़ा है ?

वडे अरसजे मोहोलमें, मिडावा रूहन ।
आयासी मोहोल बाग जे, मत्थड़ा मींह झबन ॥ ४

अर्श के बड़े महल में रूहों का मिलना होता है । आकाशी महल के बाग में बरसात पड़ती है ।

अरस बाग जे मोहोल में, झरोखे झांखन ।
तो डिने अरसां जे दिलमें, हे सुख याद अच्चन ॥ ५

परमधाम के महलों और बगीचों के बीच झरोखों से झांकना होता है । आपके दिये वे सुख हमें याद आते हैं ।

चढीनी आयूं सेरडियूं, कपरियूं गजन ।
हे सुख डिए रूहन के, वनमें विज्यूं खेवन ॥ ६

घटा चढ़ आई है । आसमान गरज रहा है । वन में बिजली चमकती है । यह सुख आपने रूहों को दिये ।

चढी झरोखे न्हार जे, मींह वसे मत्थें वन ।
वीटी वरियूं वडरियूं, हिन वेरां बाग सोहन ॥ ७

झरोखों में से देखिए वनों में मेंह पड़ रहा है । बदलियों ने घेर लिया है । वगीचा इस समय बड़ा सुन्दर लग रहा है ।

अरस अग्यां चांदनी, चई चोतरन ।
हिन मुंदयूं मींह संदियूं, दोडे चढे ठेकन ॥ ८

अर्श के आगे चाँदनी चौक और चार चबूतरे हैं । रूहें इस बरसात में दौड़ कर, कूद कर उन पर चढ़ जातीं है ।

अग्यां अरस बागमें, करे कोइलडी टहुंकार ।
ढेली मोर कणकिआं, जमुना जोए किनार ॥ ९

परमधाम के आगे वगीचों में कोयल टहुक रही है । लिटोर मोर जमुना किनारे किलोलें करते हैं ।

मत्थेनी वस्से मीहडो, वानर मोर कुडन ।
कै नी जातूं जानवर, कै जातूं पसुअन ॥ १०

ऊपर बरसात पड़ती हैं तो वन्दर और मोर खुश होते हैं । वहां कई जातियों के जानवर हैं और कई जातियाँ पशुओं की हैं ।

पसू पंखी हिन अरसजा, ते कीं चुआं चित्राम ।
मिठी मोहें मिठी जिकरें, हे डिए रूहें आराम ॥ ११

इस परमधाम के पशु पक्षियों की चित्रकारी का वर्णन कैसे करूं । वे मीठे मुखों से मीठी चर्चा करते हैं । वे रूहों को आराम देते हैं ।

वाओ अच्चे बागनमें, डालरियूं उलरन ।
रूहें रांद करींदयूं, मत्थें चढचूं लुडन ॥ १२

बगीचों में वायु चलती है तो डालें डोलती हैं । सखियाँ खेलती हैं और उनके ऊपर चढ़ कर झूलती हैं ।

जानवर जे हिन बाग जा, डारी डारी त्रपन ।
मिठेडी चूंजे मिठी वाणिआं, हे रांदिका रूहन ॥ १३

इन अर्श के ये जानवर डाल-डाल कूदते हैं । मीठी चोंचों से मीठे बोल बोलते हैं । यह रूहो के खिलौने हैं ।

हिन मुदचूं मींह संदियूं, रूहें रांद करीन ।
दोडे कूदें मींहमें, पांहिजे साथ पिरीन ॥ १४

इस बरसात की ऋतु में रूहें खेल करती हैं । बरसात में अपने साथ प्रियतम दौड़ते कूदते हैं ।

सुखडा जे हिन अरसजा, आईन सभे कमाल ।
रूहें बड़ी रूह विचमें, धणी सो नूरजमाल ॥ १५

अर्श के सभी सुख कमाल के हैं । रूहों और बड़ी रूह श्यामा के बीच में देदीप्यमान स्वामी हैं ।

सेहेरचूं कपरियूं नूर ज्यूं, मिठडा नूर गजन ।
वसेथ्यूं नूर वडरियूं, वीजडियूं नूर खेवन ॥ १६

आसमान का प्रातःकाल प्रकाशमय है । मीठा नूर गरज रहा है । नूर की बदलियां बरसती हैं और विजलियां चमकती हैं ।

मिठडो वाओ नूर जो, अच्चे नूर खुसबोए।
हे सुख अरस बाग में, कीं चुआं किनारे जोए॥ १७

नूर का मीठा पवन बहता है। उसमें नूरमयी सुगन्धि आती है। यमुना किनारे के अर्श के बागों का सुख क्या कहूँ।

महामत चोए मेहेबूबजी, तो पस्साएँ पस्सन।
अंखियूंनी आसा एतियूं, मूंजी रूहजी या रूहन॥ १८

महामति कहती हैं "हे माशूक जी! आपके दिखाने से ही हम देखेंगे! मेरी या रूहों की आँखों में यही आशा पलती है।"

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ ७५ ॥

रे पिरीअम, मंगां सो लाड करे।
एहेडी किज कां मुदसे, खिलंदडी लगां गरे॥ १

हे प्रीतम, लाड करके माँगती हूँ। मुझसे कुछ ऐसी कर कि हंसती हुई गले लग जाऊं।

तो मूंके चेओ तूं मूहजी, हेडी करे निसबत।
धणी मूहजे धामजा, आंऊं हांणे को हिन भत॥ २

आपने मुझे कहा कि तू मेरी है। ऐसा सम्बन्ध बनाया। मेरा स्वामी परमधाम का मालिक है। मै अब इस तरह क्यों (अकेली) हूँ।

एहेडो संग करे मूंहसे, अच्ची डिंनिंए सांजाए।
इलम डिंने बेसक जो, त आंऊं को बेठिस हीं पाए॥ ३

ऐसा सम्बन्ध मुझसे करके मुझे स्वयं आकर पहचान कराई। निःसन्देह कर देने वाला ज्ञान दिया। तो अब यह पाकर मैं बैठी कैसे रही।

इलम डिंने पांहिजो, जे में सक न कांए।
डिंनिएँ संग साहेबी, हित जाणजे कीं न सांजाए ॥ ४

अपना ऐसा इल्म दिया जिसमें जरा भी शंका नहीं है। अपने सम्बन्ध की साहिबी दी यहां कुछ पहचान ही नहीं जान पड़ती।

जे आंऊँ चाहिआं दिलमें, से को न करचो आंईं हित।
कोठचो को न सुखनसे, जीं थिए न उसीडो हित ॥ ५

जो मेरे दिल की चाह है वह आप यहां पूरी क्यों नहीं करते? ऐसे सुख से, सहज ही क्यों नहीं बुला लेते कि जिससे यहां उदासी न हो।

मूंके केअज सरखरू, से लखे भाइआं भाल।
रूहें कोठे अचचां आं अडूं, जीं खिल्ली करिआं गाल ॥ ६

मुझे जो निर्दोष किया उसके लिए लाखों एहसान मानती हूं। रूहों को बुलाकर आपकी ओर आऊं तो हंस कर बात करूं।

डिठम सुख सोणेमें, हिक आंझो तोहिजो आए।
मूसे संग केइए हिन भूअमें, जे डिए हित सांजाए ॥ ७

इस सुपने में सुख देखूं, आप ही के भरोसे हो सकता है। यदि यहाँ अपनी पहचान दी है तो इस जमीन में मुझसे सम्बन्ध बनाओ।

तूं धणी तूं कांध तूं, मूंजो तूं खसम।
हो मंगांथी लाडमें, जाणी मूर रसम ॥ ८

आप मेरे स्वामी हैं, मालिक हैं और मेरे पति हैं। अपने घर की मूल रीति जान कर मैं यह लाड मांगती हूँ।

कुच्छाइए त कुच्छांथी, माठ कराइए तूं।
को न पस्सांथी कितईं, मत्थे अभ तरे थी भूं ॥ ९

आप बोलवाते हैं तो बोलती हूँ। मौन कराने वाले भी आप हैं। ऊपर आसमान से नीचे धरती तक कोई कहीं दिखाई नहीं देता।

हे सभ तो सिखाइयूं, आंऊं मुराई अजाण।
जे कंने जे केइए, से सभ तूं ही पाण ॥ १०

यह सब आपकी ही सिखाई हुई बातें हैं। मैं तो मूल से ही अजान हूँ। जो किया, जो करते हैं सो सब आप ही करने वाले हैं।

घणुए भाइआं न कुच्छां, पण कुच्छाइए थो तूं।
इसक रे कुच्छण कीं रहे, न डिंनी सबूरी मूं ॥ ११

बहुत समझती हूं कि न बोलूं परन्तु आप ही बुलवाते हैं। इश्क के बिना बोलना कैसा ! परन्तु आपने सन्तोष भी तो नहीं दिया !

पिरी मत्थें बेही करे, डेखारचाई हे ख्याल।
खिल्लण खसम रूहन मत्थां, पस्सी अस्सांजा हाल ॥ १२

हमारा हाल देख कर, प्रीतम रूहों पर हंस सकें, इसलिए प्रीतम ने ऊपर बैठ कर यह तमाशा दिखाया है।

अस्सीं हत्थ हुकम जे, तो केयूं फरामोस।
जीं नचाए तीं नचियूं, कीं करियूं रे होस ॥ १३

हम हुक्म के हाथ में थे। आपने हमें बेसुध बना दिया। जैसे नचाया वैसे ही हम नाचे। होश के बिना क्या करें।

हुकम करचो था जेतरो, तीं फिरे असल अकल।
अकल फिराए सोणे के, तीं फिरे अस्सांजा दिल ॥ १४

जितना, जैसा हुक्म करते हैं वैसी ही मूल अक्ल फिर जाती है। सपने में बुद्धि को जैसे, जिधर, लगा दिया, वैसे ही हमारा दिल फिर गया।

पिरी पाण हित अच्ची करे, बेसक डिंने इलम।
अरस बका हिक हकजो, बेओ जरो न रे हुकम ॥ १५

प्रियतम ने यहां आकर बेशक इल्म दिया। अर्श (परमधाम) के एक परमात्मा के हुक्म के बिना दूसरा जरा भी कुछ नहीं है।

लख गुणा डिए सिर पर, सो बराकेई गाल ।
अस्सीं फरामोस तो हत्थमें, कोल फेल जे हाल ॥ १६

इसी बात के बल पेच में हमारे सिर लाखों गुनाह दिए । हम मन से, वचन से, कर्म से और अपने हाल से आपके हाथ में फरामोश पड़े है ।

तेहेकीक केओ तो इलमें, तो धारा न कोई बेसक ।
अरस रूहें अस्सीं कदमों, कित जरो न तो रे हक ॥ १७

आपके इल्म ने निश्चित कर दिया कि वेशक आपके सिवा कोई नहीं है । अर्श की रूहें हम तेरे कदमों में हैं । तुझ विना हे परमात्मा कुछ भी तो नहीं है ।

गुणा डिठम कै पांहिजा, से लाथा तोहिजे इलम ।
कोए पाक न्हाए हिन दुनीमें, से अस्सां के केआं खसम ॥ १८

हमने अपने कई गुनाह देखे परन्तु आपके इल्म से वे छूट गए । इस दुनियां में कोई पवित्र नहीं है, सो हमें प्रीतम ने (पवित्र) कर दिया ।

आसमान जिमी जे विच्चमें, के चेयो न बका जो हरफ ।
एहडो कोए न थेयो, जे तो बका डेखारे तरफ ॥ १९

आसमान और धरती के बीच कभी किसी ने अखंड परमधाम के लिए एक शब्द भी न कहा । ऐसा कोई न हुआ जो आपके धाम की दिशा दिखा दे ।

दुनिआं हिन आलम में, कायम न डिठो के ।
से सभ पाण पुकारिआं, हिन चौडे तबके में ॥ २०

इस ब्रह्मांड के चौदह लोकों में अखंड परमधाम किसी ने नहीं देखा । यह, वे सब स्वयं ही, पुकार कर कह रहे हैं ।

से कायम सभे थेआं, कूडा मोहोरा जे ।
वडी वडाइयूं डिनिए, अस्सां हत्थ कराए ॥ २१

खेल की झूठीं मोहरें (माया के जीव) सब अखंड हो गए । हमारे हाथों उन्हें मुक्ति दिला कर हमें गौरव प्रदान किया ।

कै खेल डेखारे रांद में, इलम डिने बेसक ।
भिस्त डियारी अस्सां हत्थां, दुनियां चौडे तबक ॥ २२

इस खेल में कई खेल दिखाए । अपना वेशक इलम दिया । दुनियां चौदह-लोक को हमारे हाथों वहिश्त दिलाई ।

डिनिएं बडचूं वडाइयूं, हांणे जे डिए दीदार ।
मिठा वेण सुणाइए वलहा, त सुख पस्सूं संसार ॥ २३

बहुत बड़प्पन दिए अब यदि दर्शन देदो और मीठे वचन सुना दो तो संसार का सुख देखूं । संसार हमारे लिए सुखमय बन जाए ।

हे पण भूल असांहिजी, जे हिनमें मंगूं सुख ।
बिओ डिस्सण वडो कुफर, गिनी इलम बेसक ॥ २४

यह भी हमारी भूल है कि इस (दुःखमय विश्व) में सुख माँगती हूँ । वेशक इल्म पाकर दूसरा देखना (माया का अस्तित्व मानना) भी कुफ्र है ।

खेल त जरो न्हाए कीं, हे इलमें खोली नजर ।
हित बेही मंगूं सुख अरसजा, धणी मिडन कोठे घर ॥ २५

यह खेल तो जरा भी नहीं है, इल्म ने मेरी दृष्टि खोल दी है । मैं यहीं बैठी अर्श का सुख मांगती हूँ और प्रियतम घर मिलने को बुलाते हैं ।

ढील मंगूं घर हल्लणजी, बिओ खेल में मंगां सुख ।
हिनमें अच्चे थो कुफर, आऊं छडी न सगां रुख ॥ २६

घर जाने में देर चाहती हूँ और दूसरे इस संसार में सुख मांगती हूं । इसी बात में कुफ्र आ जाता है कि मैं खेल का रुख छोड़ नहीं पाती ।

हिकडी गाल थेई हिन न्हाएमें,अस्सां न्हाए भारी थेओ ।
त सुख मंगूं हित अरसजा, जे न्हाए के पस्सूं था बेओ ।। २७

एक ही बात इस खेल में हुई कि हमें यह खेल भारी (बड़ा - अच्छा) लगने लगा। हम यहाँ अर्श के सुख तभी तो मांगते है जब इसे अन्यथा समझते हैं।

आंजी मंगाई मंगां थी, या कुफर या भूल ।
हे डोरी आंजे हत्थमें, अस्सां दिल अकल ।। २८

कुफ्र (पाप) कहो या भूल, आपके मंगाए मैं मांग रही हूँ। हमारे दिल और दिमाग की डोरी आपके हाथ में है।

जे कीं डिस्सण बोलण, से तो रे सभ बंधन ।
हक इलम चोए पधरो, जे विचार करे मोमन ।। २९

जो कुछ भी देखना या बोलना है वह आपके विना सब बन्धन है। जो मोमिन विचार करें तो हक का इलम यह स्पष्ट कहता है।

धणी मूंहजे धामजा, अस्सां न्हाए चोंणजी गाल ।
अस्सांजा आंजे हत्थमें, कोल फेल जे हाल ।। ३०

हे मेरे धाम के धनी ! हमारे कहने की बात नहीं है। हमारे कौल, फैल और हाल सब आपके हाथ में हैं।

महामत चोए मेहेबूबजी, करचो जे अच्चे दिल ।
जो जांणो तीं करचो, अस्सां जी अकल ।। ३१

महामति कहती हैं हे प्रियतम ! जो आपके दिल में आए कीजिए। हमारी अक्ल ने जैसा जाना वैसा ही किया।

।। प्रकरण ।।३ ।। चौपाई ।। १०६ ।।

रे पिरीअम, मंगां सो लाड करे।
हेडी किज कां मुदसें, खिलंदडी लगां गरे॥ १

हे प्रीतम ! लाड़ करके मांगती हूं। मुझ से कुछ ऐसी कीजिए कि हंसती हुई आपके गले लग जाऊं।

जगाइए इलम से, विच्च सोणे विहारे।
निद्रडी आई जा हुकमें, जागां कींअ करे॥ २

स्वप्न के बीच विठा कर इल्म से जगाया। जो नींद आपके हुक्म से आई है उससे कैसे जागूं।

हे अंगडा सभ सोणेजा, असल कूड़ा जे।
जोर करिआं घणी परे, त कीं न पुज्जे तो के॥ ३

मेरे यह अंग सब स्वप्न के मूल से ही झूठे (नश्वर) हैं। मैं कितना भी जोर लगाऊं यह तुम तक नहीं पहुँच सकते।

इलमे न रखी कां सक, मूजो हल्ले न सोणें में।
संगडो डेखारे बेसक, आऊं लाड करिआं के से॥ ४

ज्ञान ने कोई संशय बाकी न रखा। परन्तु मेरा स्वप्न में कोई वश नहीं चलता। आपने अपना वेशक सम्बन्ध दिखाया। मैं अब लाड किससे करूं ?

हे पस्सां सभ सोणे में, आंऊं विच्च जिमी आसमान।
से न्हाए चौडे तबके, मूंजो संगडो तूं सुभान॥ ५

इस धरती और आकाश के वीच में मैं सब स्वप्न ही देखती हूँ। चौदह लोक में आप मेरे सच्चे सम्बन्धी कहीं नहीं दिखाई देते।

मूं धणी मूं हितईं, ओडो डेखारे इलम।
हत्थ घुरींदे न लहां, न डिस्सां नेणे खसम॥ ६

मेरे स्वामी को, मुझे यहीं निकट, आपके इल्म ने दिखा दिया। परन्तु हाथ फैलाकर छू नहीं सकती और न ही आँखों से देख ही पाती हूँ।

हे इलम एहडो आइयो, जेहडो आइए तूं ।
इलम सोणे में को करे, मूं में रही न मूं ॥ ७

यह इल्म ऐसा ही आया जैसे आप हैं । इल्म सुपने में क्या करे जब मुझ में कुछ अपना आप वाकी न रहा (मुझमें मेरा वल न रहा) ।

रांद सभेई निद्रजीं, जीरचा मरचा वंजन ।
सोणे अंगडा अस्सांहिजा, तोके कीं न पुज्जन ॥ ८

यह खेल सब नींद का है । यहाँ जीते जी मर जाना है । स्वप्न के हमारे अंग तुम्हें कैसे पहुँचें ।

हे सोणो तोहिजे हत्थ में, तो हत्थ निद्र इलम ।
तोहिजा सुख सोणे या जागंदे, सभ हत्थ तोहिजे हुकम ॥ ९

यह स्वप्न आपके हाथ में है, नींद और इल्म भी आपके हाथ है । आपके सुख स्वप्न के या जागते हुए पाना, सब आपके हुक्म के हाथ में हैं ।

हेडी गाल अच्ची लगी, जाणे थो सभ तूं ।
तो पाणे पाण डेखारचो हिकडो, आंऊं त पस्सां तो आंडू ॥ १०

वात अब यहाँ आकर रुक गई, आप यह जानते हैं । आपने एक अपना आप ही तो दिखाया है । मैं इसीलिए आपकी ओर देखती हूँ ।

कीं घुरां आंऊं के कणां, ओडो न अच्चे तूं ।
बेओ को न पस्साँ कितईं, आंऊं विच्च आसमाने भूं ॥ ११

कैसे किससे माँगू ? आप निकट ही नहीं आते हैं । आसमान और धरती के बीच मैं कहीं, किसी दूसरे को देखती ही नहीं ।

बोलां थी तो बोलाई, तो अडाँ पसाइए तूं ।
निद्र इलम या इसक, तो डिनो अच्चे मूं ॥ १२

आपके बुलाए बोल रही हूँ । आप ही अपनी ओर दिखाते हैं । नींद, इल्म या इश्क आपके दिए ही मुझे आता है ।

जे चओ त बोलियां, न तां मांठ करे रहां ।
जे उपाओ था दिलमें, से तो रे के के चुआं ॥ १३

जो आप कहें तो बोलूँ नहीं तो मौन हो जाऊं । जो आप दिल में उपजाते हैं, वह मैं, आपके बिना किससे कहूँ ।

हंद न रख्यो कितईं जे से करिआं गाल ।
तो डेखारी डिस तोहिजी, से लख तोहिजां भाल ॥ १४

कहीं, कोई ठिकाना नहीं रखा जिससे बात करूं । आपने अपनी दिशा दिखा दी यह भी आपका लाख एहसान है ।

मूं अवगुण डिठां पांहिजा, गुण डिठम पिरम ।
से बेओ जमारो गेंदे, उमेद ए रिअम ॥ १५

मैंने अपने अवगुण देखे और प्रियतम के गुण देखे । उन्हें गाते जमाना बीत गया । उम्मीद यहीं रह गई ।

तो उमेदूं पुजाइयूं, जे जो न्हाए सुमार ।
हे तो पांण मंगांइए, तूंही डिअन हार ॥ १६

आपने इतनी उम्मीदें पूर्ण की, जिनका शुमार नहीं है । यह भी आप ही मंगाने वाले हैं । आप ही देने वाले हैं ।

लाड कोड तो हत्थमें, संग या सांजाए ।
जडे तडे तूंही डिए, बेओ कोए न कितईं आए ॥ १७

मेरा लाड या हर्ष आपके हाथ में है । सम्बन्ध या पहचान दे दें । जब तब आप ही देने वाले हैं । दूसरा कहीं कोई है ही नहीं ।

जडे आंणीने ओडडा, तडे पेरो डिने लज्जत ।
हे डिने अच्चे सभ तोहिजो, मूंके बुझाइए सो भत ॥ १८

जब अपने निकट लाओगे तो पहले आनन्द दोगे । आपके दिए ही यह सब आएगा, यह आपने मुझे सैकड़ो तरह से समझा दिया है ।

जीं बुझाइए मूंहके, डे तूं मेहेर करे ।
जे न घुरां तों कंने, त को आए बेओ परे ॥ १९

यदि मुझे यह समझाया है, तो आप मेहर करके दीजिए । यदि आपसे न मांगूं तो दूसरा अलग भला कोई है ?

हे तो सिखाई मूं सिखई, को न घुरां धणी गरे ।
मूं थेयूं हजारूं हुज्जतूं, जडे तो डिनो संग करे ॥ २०

यह आपने सिखाई और मैंने सीखी कि मैं अपने धनी के पास से क्यों न मांगूं । मुझसे हज़ारों हुज्जतें हुईं तो भी आपने सम्बन्ध जान कर दिया ।

संगडो डिठम बेसक, मंझां तोहिजे इलम ।
त चुआं थी हुज्जतूं, जे चाइए थो खसम ॥ २१

आपके ज्ञान के अन्दर मैंने आपका असंदिग्ध सम्बन्ध देखा । जिसे मै हुज्जत कह रहीं हूं, वह भी आप ही करा रहें हैं ।

हांणे चाह डिए थो दिलके, त दिल करे थो चाह ।
अपार मिठाइयूं तोंहिज्यूं, जे डिंने पाण हत्थांए ॥ २२

अब दिल को चाह देते हो तो दिल चाहता है । आपने अपना अपार माधुर्य अपने हाथों दिया ।

महामत चोए मेहेबूबजी, हे सुणज दिल धरे ।
हांणे हेडो डिज्जम हिंमत, जीं लगी रहां गरे ॥ २३

श्री महामति कहतीं हैं, माशूक जी ! यह दिल देकर सुनो । अब ऐसी हिम्मत दीजिए कि आपके गले लगी रहूँ ।

॥ प्रकरण ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ १२९ ॥

॥ श्री देवचंदजी को मिलाप बिछोहा ॥

श्री देव चन्द्र जी के मिलाप और वियोग का प्रकरण

सांगाए थिदम धाम संगजी, तडे घुरंदिस लाड करे ।
दम न छडिआं तोहके, लगी रहां गरे ॥ १

परमधाम के सम्बन्ध की पहचान हुई तब लाड करके मांगती हूँ। एक पल भी तुझे न छोड़ूं । गले लगी रहूं ।

जासी संग न सांगाए, त रूह केहडी सांजाए ।
हे गाल्यूं थिअन सभ मत्थियूं, कीं लाड करे घुरांए ॥ २

जब तक सम्बन्ध की पहचान न हो रूह को क्या पता ! तब तक सब बातें ऊपरी होती हैं । मांगना कैसे हो ?

हे सभ सांजायूं तो हत्थ, लाड सांगाए या संग ।
कोंल फेल या हाल जो, तो हत्थमें नौ अंग ॥ ३

यह पहचान सब आपके हाथ में है । लाड, परिचय या सम्बन्ध आप के दिए आता है । हमारे वचन, कर्म, हाल और शरीर के नवों अंग आप के हाथ में हैं ।

पेरो केआं जा गालडी, सा रूहके पूरी लगी ।
हिक तो रे को न कितईं, हे तोहिजे इलमें सक भगी ॥ ४

पहले जो बातें कहीं रूह को वे पूर्ण प्रतीत हुईं । एक आपके सिवा कोई कहीं नहीं है, इसमें आपके इल्म से शंका नहीं रही ।

तो घर न्यारो दुनी से, थेयम तोसे संग ।
आसमान जिमी जे विच्चसें, मूंके तो धारा सभ रंज ॥ ५

आपका घर दीन दुनियां से अलग है । हमारा आपसे सम्बन्ध हो गया । आसमान और धरती के बीच मुझे आपके बिना सब दुःख प्रतीत होता है ।

घणा डींह घारिम कुफरमें, कर कूडे से संग ।
कंने सुणी संग तोहिजो, लगो न रूह जे अंग ॥ ६

झूठे का संग करके बहुत दिन कुफ्र में गँवा दिए। कानों से आपके सम्बन्ध को सुना परन्तु रूह को आपकी बात छू नहीं पाई।

हे दिल आइम तेहेकीक, जे हेकली थिआं आऊं ।
त खिल्ले कूडे मूंह से, थिए दम न अघांऊँ ॥ ७

यह बात दिल में निश्चित है कि यदि मैं अकेली हो जाऊं तो आप हमसे हसेंगे, खेलेंगे और एक पल भर भी अलग नहीं होंगे।

हे तां पाणे पधरी, जे आंऊं हेकली थिआं ।
तडे कीं न अच्चें तो दिलमें, चे आंऊं हिन के सुख डिआँ ॥ ८

यह बात तो स्पष्ट है कि यदि मैं अकेली हो जाऊं तो आप के दिल में यह बात क्यों न आवेगी कि मैं इसको सुख दूं।

थिआं हेकली हिन रंजमें, मत्थां अभ तरे थी भूं ।
ईं हाल पस्सां पांहिजो, त कीं छडे हेकली मूं ॥ ९

मैं इस दुःख में अकेली हूँ, ऊपर आसमान नीचे जमीन है। मेरा ऐसा हाल देखकर मुझे अकेली कैसे छोड़ेंगे।

धणी मूहजे अरसजा, चुआं मूं हेकली जो हाल ।
जीं आंऊं गडजी विछडिस, सा करिआं आंसे गाल ॥ १०

हे मेरे धाम के धनी मैं अपने अकेली हो जाने का हाल कहती हूँ। जिस प्रकार मैं मिलकर बिछुड़ गई वह बात आपको बताती हूँ।

आंऊं हुईस धणी जे कदमों, तडे संग न सांगाए ।
चेआंऊं घणी भत्तिएँ, पण थीअम न सांजाए ॥ ११

मैं स्वामी के चरणों में थी तो सम्बन्ध या पहचान नहीं थी। उन्होंने मुझे बहुत तरह से समझाया परन्तु मुझे पहचान न हुई।

तडे धणिएँ मूके चयो, जे ब जण्यू आंईंन ।
खिल्ले थ्यूं न्हारे रांद अडां, तांजे सांगाईन ॥ १२

तब स्वामी ने मुझे कहा कि दो रूहें हैं । वे खेल की ओर देखकर प्रसन्न हैं । कदाचित् वे जाग जाएँ ।

रूहअल्लाएँ ईं चयो, पाण न्हारे कढचूं तन ।
पाणसे न्हारे न कढचूं, आंऊं हुइस गाल हिन ॥ १३

रूह अल्लाह (श्री देवचन्द्र जी) ने ऐसा कहा कि हम उन्हें ढूँढ़ निकालें । स्वयं उन्होंने उन्हें न जगाया । मैं उसी बात में रह गई ।

पाण वखत हल्लणजे, याद केआंऊं मूंके ।
चेआंउं ईं जेडिन के, जे कोठे अच्चो हिनके ॥ १४

उन्होंने चलते समय मुझे याद किया । अन्य सखियों को कहा कि आप उन्हें बुलाइये ।

अच्ची आंऊं पेरे लगी, तडे मूंके चेआंऊं ईं ।
रूह तोहिजी रोए थी, आंऊं पेआं अरसमें कीं ॥ १५

मैं आकर उनके पाँव पड़ी, तो उन्होंने कहा कि तेरी रूह रो रही है । मैं परमधाम में पैठ नहीं सकती ।

दर माधा अरस जे, आंऊं रोंदी पस्सां हित ।
ते मूं तोके कोठाई, आंऊं हल्ली न सगां तित ॥ १६

परमधाम के द्वार पर मैं तुम्हें रोती देख रही हूँ । इसीलिए मैंने तुम्हें बुलाया है कि मैं वहां जा नहीं सकती ।

मूंके चेआंऊं पधरो, सा सुंई गाल सभन ।
पर केर परूडे इसारतूं, संदियूं हिन दोसन ॥ १७

मुझे यह बात स्पष्ट कही और सबने इस बात को सुना । परन्तु इन मित्रों की संकेत में हुई बात को कौन समझता ?

करे मेडो चेआंऊं मीठी भत्तें, पण आंऊं निद्र मंझ ।
पण मूं कीं न परूडयो, सर छडे उडया हंज ॥ १८

मुझसे मिलाप करके, मीठी तरह से कहा परन्तु मैं नींद में थी । मैं कुछ समझी नहीं और हंस सरोवर छोड़ कर उड़ गया ।

ई थीअस आंऊं हेकली, भोणां डोरींदी बेई ।
धणिएं जा मूके चई, तांजे न्हारे कढां सेई ॥ १९

इस तरह मैं अकेली हो गयी और दूसरी को ढूंढती फिरती हूं । धनी ने मुझ से जो कुछ कहा है कदाचित् उनको ढूंढ निकालूं ।

डोरींदे जे लधिम, अरवा के हजार ।
किन जाण्यो घर नूरजो, के नूर घर पार ॥ २०

उन दोनों को ढूंढने कई हजार रूहें मिली । किसी ने अक्षर धाम को घर जाना, किसी ने नूर के पार परमधाम को ।

हिनी में जे बे चयूं, सुंदरबाई सिरदार ।
से पण थेयूं निद्र में, तिंनी सुध न सार ॥ २१

इनमें जो सुन्दरबाई ने सिरदार कहीं थीं, वे भी नींद में पड़ी थीं । उन्हें कोई सुधि या पहचान नहीं थी ।

तिनी बी में हिकडी, अच्ची गडई मूं ।
जे हाल आए हिन जो, से जाणे थो सभ तूं ॥ २२

उन दोनों में से एक तो मुझे आकर मिली । उसका जो भी हाल है सब आप जानते हैं ।

आंऊं बेठिस हिनजे घर में, मूंके रख्याई भली भत्त ।
केआंई सभे बंदगी, जाणी तोहिजी निसबत ॥ २३

मैं भी उनके घर में ही बैठी हूं । मुझे उसने अच्छी तरह रखा है । आप का सम्बन्ध जानकर मेरी सब सेवा की है ।

हिक हिन जे दिल में, द्रढाव वडो डिठम ।
हांणे माधा हत्थ तोहिजे, पण हितरो पेरो केओ पिरम ॥ २४

एक इनके दिल में वड़ी दृढ़ता देखी । आगे तो सव आपके हाथ में है परन्तु इतना तो हे प्रियतम ! पहले किया है ।

चेयम हाल हिन जो, जा हिक मूं गडई ।
मूं वेओ जमारो डोरींदे, हुन बी पण खबर सुंई ॥ २५

एक जो मुझे मिली उनका हाल तो कहा । खोजते हुए जमाना वीत गया । उस दूसरी ने भी खवर तो सुनी है ।

हे बए जण्यूं मिडी करे, मूके थ्यूं न्हारीन ।
हुन असिधें ईं न विचारयो, हो मूं लांए डुख घारीन ॥ २६

ये दोनों जने (प्राणनाथ और छत्रसाल) मिलकर मुझे ढूंढते हैं । उस वेखवर ने यह न विचारा कि वे मेरे लिए दुःख पा रहे हैं ।

हो हल्लण के उतावरच्यूं, अरस उपटे दर ।
हे कीं रहेंदच्यूं रंज में, हुन विसरी न्हाए खबर ॥ २७

वे दोनों अर्श का द्वार खोल कर चलने के लिए उतावली हो रही हैं । यह दुःख में कैसे रहेगी उस वेखब्र ने इस वात का विचार न किया ।

(संकेत औरंगजेब की ओर है । स्वामी जी ने उन्हें जगाने का प्रयास किया । उसने संदेश तो सुना परन्तु शराअ का बन्धन तोड़ न सका ।)

ते लांए पिरम आंऊं हेकली, मूं बी न गडजी कांए ।
जे तोजो दर उपटे, मूज्यूं आसडियूं पुजाए ॥ २८

इसलिए प्रियतम मैं अकेली हूँ । मुझे दूसरी कोई मिली नहीं जो आपका द्वार खोल कर मेरी आशा पूर्ण करे ।

पिरम हांणे पांण विच्चमें, तूंहीं आइए तूं ।
से तूं जांणे सभ कीं, हे तो सुध डिंनी मूं ॥ २९

प्रियतम अब आपके और मेरे बीच में आप ही हैं। यह आप जानते हैं और आपने ही यह सुधि मुझे दी है।

धणी तूं पस्से थो पांणई, अने कुच्छाइए थो पांण ।
जा करे गाल रे इसक, सा दानाई सभ अँजांण ॥ ३०

हे स्वामी ! आप ही देखते हैं और मुझसे कहलाते भी आप ही हैं। प्रेम के बिना की हुई विद्वता की बात भी अज्ञान है।

दम में चुआं आंऊं हेकली, दम में गडजिम बेई ।
दम में मेडो रूहन जो, न्हारिआं थी त्रेई ॥ ३१

पल भर में कहती हूँ अकेली हूँ, दूसरे पल में कहती हूँ दूसरी मिलो। क्षण भर में रुहों के मिलावे की बात करती हूँ और तीसरी को ढूँढती फिरती हूँ।

दम में आंऊं बाझाइंदी, दम में हित नाहिआं ।
दम में भाइयां मूर थो, तोके थीराइआं ॥ ३२

पल भर में यहां कलपती हूँ, पल भर में यहां नहीं हूँ (ऐसा अनुभव होता है)। क्षण भर में मानो मूल में आप ही को ठहराती हूँ। (सब के मूल में आप ही हैं इस बात को स्वीकार करती हूँ)।

फिरी पस्सां जा पाण अडां, त करिआं कांध से दानाई ।
तडे अच्ची लिकांथी तो तरे, चुआं हे डिंनी धणीजी आई॥ ३३

फिर जो अपनी ओर देखती हूँ तो लगता है कि प्रियतम से दानाई कर रही हूँ। तब मैं आकर आपके दामन तले छिप जाती हूँ कि यह सयानप भी आपने ही दिया है।

धणी मूंजी गालिनजी, से सभ तोके आए जांण।
अव्वल विचच आखर लग, तो डिनो अच्चे पांण॥ ३४

स्वामी मेरी बातों का सब आप को पता है। आदि में, बीच में और अन्त तक, सब आपके दिए से आता है।

हे तो डिन्यूं पांणई, गाल्यूं मूके करण।
पण जासीं डिए न इसक, दर खुले न रे वरण॥ ३५

यह तो आपने स्वयं ही मुझे बातें करने को दीं। परन्तु जब तक प्रेम न देंगे, तब तक प्रियतम के बिना द्वार खुलता नहीं है।

ईं हाल डिने धणी मूहके, जीं गभुराणी मत।
जां तो इसक न आइओ, तां कुच्छां थी सो भत्त॥ ३६

आपने मेरा ऐसा हाल कर दिया, मानो बालक की सी बुद्धि हो। जब तक आपका प्रेम नहीं आता तब तक सौ तरह से बोलती हूँ।

मांठ करे पण न सगां, बंधां जा बोले।
सभ जाणें थो रूहजी, चुआं कुजाडो दिल खोले॥ ३७

मौन भी तो नहीं रह सकती और बोलती हूं तो बंध जाती हूँ। आप रूह की सब जानते हैं। दिल खोल कर क्या कहूँ।

बेओ को न पस्सां कितई, सभ अंग ताणीन तो अडूं।
जे हाल पुजाइए पुंनिस, हाणे को न करिए हेकली मूं॥ ३८

दूसरा कोई कहीं देखा नहीं। मेरे सब अंग मुझे आपकी ही ओर खींचते हैं। जिस हाल में पहुँचाया, मैं पहुँच गई। अब मुझे अकेली क्यों नहीं करते।

जे तूं करिए हेकली, भाइए गडजां आंऊं।
से तां तोहिजी सिखाइल, त पाइआं थी धांऊं॥ ३९

यदि आप अकेली कर दें, तो शायद मिल सकूं? यह मैं आपकी सिखाई ही पुकार कर रहीं हूँ।

हे जे कराईयूं गालियूं, एही कोल फेल जे हाल ।
हिन मजलके ओडडो, मूके केइए नूरजमाल ॥ ४०

यह जो बातें कराई हैं और जो वचन कर्म और हाल से बना दिया है । इस मंजिल के करीब हे नूर जमाल स्वामी आप ही लाए हैं ।

पिरी डिए थो जे दिलमें, से माधाई करिआं पुकार ।
से सभ तूंही कराइए, तो हत्थ कार गुजार ॥ ४१

प्रियतम ! जो दिल में उपजाते हो वह आपके आगे ही पुकार करती हूं । वह सब आप कराते हो, आप के हाथ में सब होना कराना है ।

लाड कोड आसा उमेदूं, रूहें सभ दिलमें आंईन ।
पण तूं जे ताणिए पांण अड़ूं, त तोके ईं भांईन ॥ ४२

लाड हर्ष आशा उम्मीदें सब रूहों के दिल में हैं । यदि आप अपनी ओर आकृष्ट करें तो ही आप को वे जाने ।

हे गाल न मूंजे हत्थमें, जे कीं करिए से तूं ।
तांजे तूं न खैंचिए, त हे रंज सभे मूं ॥ ४३

यह बात मेरे हाथ में नहीं है । जो करें आप ही कर सकते हैं । कदाचित् आप उन्हें अपनी ओर न खींचें तो दुःख सब मुझे होता है ।

बेओ कित्त न जरे जेतरो, सभ हत्थ तोहिजे हुकम ।
जे तिर जेतरी मू दिलमें, सभ जाणे थो पिरम ॥ ४४

दूसरा जरा जितना भी नहीं है सब आपके हुक्म के हाथ में है । जरा जितनी बात भी जो मेरे दिल में है वह प्रियतम जानते हैं ।

कडे कंदांसो डींहडो, अस्सां रूहें जो संग ।
हे हुज्जतूं करिआं लाडमें, जीं साफ थिए मू अंग ॥ ४५

अब हम रूहों को वह दिन कब दिखाओगे ? मैं इतनी हुज्जत लाड में इसलिए करती हूँ कि जिससे मेरे अंग साफ हो जाएँ ।

दिलमें तूं उपाइए, मंगाइए पण तूं ।
मूजी रूह के गालियूं, जे मिठ्यूं सुणाइए मूं ॥ ४६

दिल में उपजाते भी आप हैं । मंगवाते भी आप ही हैं कि मेरी रूह को मीठी वातें आप सुनाओ ।

तूं चाइए कर सुणाइए, सभ उमेदूं तो हत्थ ।
धणी मूहजे धामजा, तूं सभनी गालें समरथ ॥ ४७

जो आपके मन में आवे वही आप सुनाइये । सब उम्मीदें आपके हाथ हैं । हे मेरे धाम के धनी ! आप सभी बातों में समर्थ हैं ।

मू चयो भूं आसमान विच्च, आऊं हेकली आइआं ।
जीं न अच्चे दिलमें खतरो, से माधाई थी लाहिआं ॥ ४८

मैंने कहा कि जमीन और आसमान के बीच में मैं अकेली हूँ । दिल में किसी बात का डर न आए इसलिए पहले से ही मिटाए देती हूँ ।

बियूं रूहें हिन अरस ज्यूं, से तां आजिज पांणे ।
हे मंझ रूअन रातों डींहा, मूंजी रूहडी थी जाणे ॥ ४९

अर्श की दूसरी रूहें तो स्वयं ही बड़ी असहाय हैं । वे अपने में दिन-रात रोती हैं । मेरी रूह यह जानती है ।

जे आंऊं न्हारिआं रूहन अडूं, पस्सी इंनी जो हाल ।
रूअन अच्चे मूंह के, से तूं जाणे नूरजमाल ॥ ५०

जो मैं इन रूहों की ओर देखती हूँ तो इनकी दशा देखकर मुझे रोना आता है । हे नूर जमाल ! आप यह जानते हैं ।

आंऊं बी बट भाइआं तिनके, जा उपटे अरस दर ।
कांध लाड पारनज्यूं, मूके डे खबर ॥ ५१

मैं उन्हें अपने पास दूसरी समझती हूँ । जो आप इनके लिए अर्श के द्वार खोल दें हे स्वामी ! लाड पालने के लिए मुझे खबर दीजिए ।

त कीं चुआं बी तिनके, जे मूं अडां पस्सी रोए ।
त चुआं थी हेकली, मूं बट बी न कोए ।। ५२

उन्हें मैं दूसरी कैसे कहूँ । यदि वे मेरी ओर देखकर रोती हैं । इसीलिए मैं कहती हूं कि अकेली हूं । मेरे लिए दूसरा कोई नहीं ।

पस्सां बाझाइंदयूं हिनके, मूं अच्चे बाझाण ।
ईं दर ओडी कांध अडूं, थेअम वधंदी तांण ।। ५३

इनको कलपते देखकर मेरा मन कलपता है । इस प्रकार धाम के द्वार की ओर बढ़ते हुए मुझे खेंच होती है ।

हे सभ मेहेर धणीअजी, डिए थो रूह अंदर ।
हे पण आइम भरोसो कांधजो, जीं जाणे तीं कर ।। ५४

यह सब धनी की मेहर है जो रूह के अन्दर यह बात देते हैं । सब प्रियतम के भरोसे है जैसे जानो वैसे करो ।

जे मूं करिए हेकली, विच्च आसमाने भूं ।
जे आंऊं पस्सां पांणके हेकली, से सभ करिए थो तूं ।। ५५

आसमान-जमीन के बीच आप मुझे इस तरह अकेली कर दें कि मैं अपने आप को अकेली देखूं । यह सब आप ही कर सकते हैं ।

जे तूं जगाइए इलम से, त पस्सां थी हेकली पांण ।
जे कीं करिए संग लाडजो, त थीअम तो अडूं ताण ।। ५६

जो आप इल्म से जगाते हैं तो मैं अपने को अकेली देखती हूँ । कदाचित् सम्बन्ध जानकर लाड करो तो आपकी ओर खिच जाऊं ।

करे हेकली गडजे, सभ तोहिजे हत्थ धणी ।
मूं चेयूं उमेदूं वडियूं जे तूं न्हारिए नेण खणी ।। ५७

मुझे अकेली कर के आप मिलिए यह सब आपके हाथ में है । आप नयन उठा कर देखिए मैंने बड़ी उम्मीदें बांधी हैं ।

बेई कित न जरे जेतरी, कांए न रखिए गाल।
हे तेहेकीक मूंजी रूहके, केइए नूरजमाल ॥ ५८

दूसरी जरा जितनी भी बात कहीं नहीं रखी। यह बात मेरे नूर जमाल ने मेरी रूह को निश्चित करा दी है।

चुआं थी रूह मूंहजी, से पण आइम भूल।
मूंजी आंऊं त चुआं, जे हुआं विच्च अरस असल ॥ ५६

मेरी रूह कहती हूं यह भी भूल है। मेरी 'मैं' तो तब ही कह सकती हूं जो मैं असल घर परमधाम में होऊं।

हित न्हाए विच्च बेही करे, आंऊं कीं चुआं मूके पाण।
केई थेई सभ तोहिजी, से सभ तोके आए जाण ॥ ६०

इस नहीं–नश्वर–के बीच बैठ कर मैं 'अपने को' 'मैं' कैसे कह सकती हूं। आप का किया सब हुआ। यह सब आपको पता है।

हे पण गाल्यूं लाडज्यूं, करिए थो सभ तूं।
तो रे तोहिजो गालिनजी, दम न निकरे मूं ॥ ६१

यह सब बातें तो लाड की हैं आप ही कराते हैं। आपके बिना आपकी बात का दम मैं नहीं भर सकती।

आसा उमेदूं जे हुज्जतूं, सभ तूंहीं उपाइए।
मूंजे मोंहें तेतरीं निकरे, जेतरी तूं चाइए ॥ ६२

आशा उम्मीद या हुज्जत सब आप ही उपजाते हैं। मेरे मुंह से उतनी ही बात निकलती है जितनी आप कहलवाते हैं।

चई चई चुआं केतरो, सभ दिलजी तूं जाणे।
तो रे आइआं हेकली, सभ जाणे थो पांणे ॥ ६३

कह कह कर कितना कहूं सब दिल की आप जानते हैं। आप के बिना अकेली हूं आपको सब पता है।

महामत चोए मेहेबूबजो, हे डिनीं तो लगाए।
तूं जागे अस्सी निद्रमें, जाणे तींअ जगाए॥ ६४

महामति कहती हैं महबूब जी यह आपने लगा दी है। आप जागते हैं, हम नींद में हैं। जैसे जानो वैसे ही जगा लो।

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ १६३ ॥

॥ रूहन जो फेल हाल ॥

रूहों के फेल और हाल

धणी मूंहजी रूहजा, गाल करिआं कोड करे।
आईंन उमेदूं लाडज्यूं, अच्ची करिआं गरे॥ १

मेरी रूह के स्वामी ! हर्ष पूर्वक कहती हूं कि लाड पूरे करने की जो आशाएं हैं वे मैं परमधाम में आ कर पूरी करूंगी।

रूहें बिहारे रांदमें, पाण बेठा परडेह।
सुध न्हाए के रूहके, रांद न अच्चे छेह॥ २

रूहों को खेल में बिठा कर आप परदेश में जा बैठे। रूहों को कोई सुधि नहीं, और खेल का ओर-छोर नहीं मिलता।

अस्सा मत्थें आइयो, पिरिअन जो फुरमान।
मूक्यो आं रसूलके, डिअन रूहन जाण॥ ३

हमारे ऊपर प्रियतम का फर्मान आया। आपने अपने रसूल को रूहों को पहचान देने के लिए भेजा।

लिख्यो आं फुरमानमें, रमूजें इसारत।
भत्ती भत्ती ज्यूं गालियूं, सभ अरसजी हकीकत॥ ४

आपने अपने फर्मान में कई भेद और संकेत दिए। तरह-तरह की बातें कह कर अर्श की हकीकत बताई।

तो चेयो रसूल के, तूं थीअज हुनमें अमीन।
डिज्ज तूं मूर निसानियूं, जीं अच्चे रूहें आकीन ॥ ५

आपने रसूल साहिब को कहा कि तुम उनकी गवाही देना। मूल परमधाम के निशान बताना जिससे रूहों को विश्वास आए।

रूहें लग्यूं जडे रांदमें, विसरी वेओ घर।
आसमान जिमी जे विच्च में, अरस बका न के खबर ॥ ६

जब खेल में लग गईं तो अपना घर भूल गईं। आसमान जमीन के बीच में किसी को परमधाम की याद ही नहीं है।

तडे मूकियां रूह पांहिजी, जा अरसांजी सिरदार।
कुंजी मूकिआं अरसजी, उपटन बका द्वार ॥ ७

तब आपने अपनी रूह भेजी जो हमारी सिरदार श्यामा हैं। अर्श का द्वार खोलने के लिए कुंजी भेजी।

रूहें पस्सी मूं द्रिच्यूं, रई न सगे रे रांद।
कां न विचारे पाण के, मूं सिर केहो कांध ॥ ८

रूहों को देख कर मैं डर गई। वे खेल के बिना रह ही नहीं सकतीं। कोई भी विचार नहीं करती कि हमारा कौन स्वामी है!

बडी रूह रूहन के, चई समझाईन।
पाण न्हायूं हिन रांदज्यूं, घर बकामें आईन ॥ ९

बड़ी रूह ने रूहों को समझाया कि हम इस खेल के नहीं हैं। हमारा घर परमधाम में है।

कै केआंऊं रांदज्यूं गालियूं, समझन के सो भत्त।
कांधे मूकी मूंके कोठण, जांणी आंजी निसबत ॥ १०

उन्हें समझाने के लिए खेल की सैंकड़ों तरह की बातें कहीं। स्वामी ने अपना सम्बन्धी जान कर मुझे आपको बुलाने के लिए भेजा है, ऐसा कहा।

बड़ी रूह चोए आं कारण, मूं हेडो केओ पंध ।
लखे भतें समभाइयूं, पण हिओ न अच्चे हंद ।। ११

बड़ी रूह ने कहा कि मैंने आपके लिए इतना बड़ा रास्ता तय किया । लाखों तरह से समभाया परन्तु वह ठिकाना दिल में ही नहीं आता है ।

आंऊं आइस आंके कोठण, उपटे बका दर ।
आसमान जिमी जे विच्चमें, जा के के न्हाए खबर ।। १२

मैं उस अखंड परमधाम के द्वार खोल कर आपको बुलाने आई हूं जिसको आसमान-जमीन के बीच किसी को खबर नहीं हैं ।

बडी बडाई आंजी, पस्सो केहडो पांहिजो घर ।
हे कूडा कूडी रांदमें, छडे काएम वर ।। १३

आपकी बहुत महानता है । देखो अपना घर कैसा है ? यह भूठा है । भूठे खेल में अखंड स्वामी को छोड़ दिया ।

कै करे रांदज्यूं गालियूं, फिरी फिरी फना डुख ।
पांहिजा काएम अरसजा, कै कोडी डेखारयाई सुख ।। १४

कई खेल की बातें कहीं । बार-बार फना (नश्वर) के दुःख बताए । अपने अखंड परमधाम के कई करोड़ों सुख दिखाए ।

तोहे रूहें न छडींन रांदके, कां निद्रडी लगाई हिन ।
कडे थी न हेडी फकडी, मत्थां हिन रूहंन ।। १५

तो भी रूहें खेल को छोड़ती नहीं हैं यह कैसी नींद इन्हें लग गई है । इन रूहों से ऐसी हँसी कभी नहीं हुई है ।

आंऊं पुकारिआं इंनी कारण, पण इंनी केहो डो ।
आंऊं पण बंधिस रांदमें, करिआं कुजाडो ।। १६

मैं इन्हीं के लिए पुकार कर रहीं हूँ परन्तु इनका भी क्या दोष ! मै भी इस खेल में बंध गई तो इन्हें क्या कहूँ ।

हिक लधिम गाल पिरनजी, चुआं सभे जेडिन ।
जा लगाइल हिन हक जी, सा न छुटे पर किन ॥ १७

एक बात प्रियतम की पाई वही सब सखियों को कहती हूँ । जो हक ने लगा दी है वह किसी तरह नहीं छूटती ।

मूं उमेदूं पिरनज्यूं, लधिम भली पर ।
सुयम मोंहां सज्जणे, जा खिलवत थी घर ॥ १८

मैंने प्रियतम की उम्मीद अच्छी तरह पाई । परमधाम में जो एकान्त बातें हुई उन्हें मैंने अपने प्यारे (सद्गुरु) के मुख से सुना ।

परूडिम पिरन जी, हे जा डेखारचाई रांद ।
अस्सां मर्थे खिल्लण, केइए कुडन के कांध ॥ १९

प्रियतम ने क्यों खेल दिखाया उसके राज को पहचाना कि उसने हमसे हँसी करने के लिए यह सब किया है ।

इसक धणी जे दिल जो, पेरो न लधों पांण ।
त डिखारचाई रांदमें, इसकजी पेहेचान ॥ २०

प्रियतम के दिल के प्रेम की थाह हमें पहले न मिली थी । इसलिए इस खेल में अपने इश्क की पहचान दिखाई ।

मूं तेहेकीक आयो दिलमें, अगरो धणी इसक ।
डिठम अरस खिलवतमें, सा रही न जरो सक ॥ २१

मुझे इस बात का निश्चय हो गया कि धनी का प्रेम अधिक है । अर्श के एकान्त में जो देखा था उसमें जरा भी शंका न रही ।

मूं उमेदूं दिलमें, धणी से घारण ।
को न होंन उमेदूं धणी के, मूं जा लाड पारण ॥ २२

मेरे मन में धनी से माँगने की चाह है तो प्रियतम के मन में उसे पूर्ण करने की इच्छा क्यों न होगी ?

तरसे दिल मूहजो, जाणे कडे धणी पस्सां ।
त कीं न हूंन कांध के, मिडन उमेदूं अस्सां ॥ २३

मेरा दिल बिलखता है कि न जाने कब धनी को देखूंगी । फिर प्रियतम को हमसे मिलने की उम्मीद क्यों न होगी ।

दिल थिए मिडन धणीअसे, जे मूं इसक न हुंड ।
कांध पूरे इसकसे, तिन आए हो गणी चढ ॥ २४

मेरा दिल चाहता है कि मैं धनी से मिलूं जब मुझमें जरा भी प्रेम नहीं है । प्रियतम तो प्रेम में पूर्ण हैं उनके मन में तो सौ गुनी अधिक चाह होगी ।

पण हे गाल्यूं आइन रांदज्यूं, ते मूके सिकाइए ।
पांण इसक डेखारे लाडमें, मूके कुडाइए ॥ २५

परन्तु यह खेल की बातें हैं इसलिए मुझे तरसा रहें हैं । अपना प्रेम दिखाकर मुझे झुठला रहें हैं ।

मूं उमेदूं दिल में, धणी ज्यूं गडजण ।
लाड पारण अस्सांहिजा, आईन अगरचूं सज्जण ॥ २६

मुझे धनी से मिलने की उम्मीद है तो उनके दिल में मेरा लाड पालने की आशा मुझसे कहीं अधिक है ।

अंईं सुणोजा जेडियूं चुआं इसक जी गाल ।
हे सुध न अस्सां अरसमें, धणी केहडी साहेबी कमाल ॥ २७

हे मेरी सखियों, सुनो ! मैं तुम्हें प्रेम की बात कहती हूं । हमें परम-धाम में अपने प्रियतम की साहिबी और बड़प्पन का पता नहीं था ।

न सुध केहडो कादर, न सुध केहडी कुदरत ।
न सुध अरस काएम जी, न सुध हक निसबत ॥ २८

न तो हमें पता था कि हमारे स्वामी कैसे समर्थ हैं और न ही उनकी कुदरत का पता था । न अखंड परमधाम की खबर थी, न ही हक के सम्बन्ध का ज्ञान था ।

सुध न सुख कांधजा, सुध न धणी इसक।
सुध न अस्सां लाड जो, केहडा पारे हक ॥ २६

स्वामी के सुखों की सुधि नहीं थी न ही उनके इश्क का पता था। यह भी ज्ञात नहीं था कि हमारे लाड़ प्रियतम कैसे पालन करते हैं।

सुध न आसा उमेद, सुध न प्रेम प्रीत।
सुध न अरस अरवाहें के, धणी रखियूं केही रीत ॥ ३०

आशा उम्मीद की खबर नहीं थी न ही प्रेम प्रीत को जानते थे। यह भी तो पता नहीं था कि परमधाम की रूहों को स्वामी कैसे रखते हैं।

हे जे हितरूं गालियूं, केयूं इसक जे कारण।
लाड कोड आसा उमेदूं, रूहन ज्यूं पारण ॥ ३१

यह सब इतनी बातें प्रेम के लिए कीं। हम रूहों के लाड और चाहें पूर्ण करने के लिए ही यह लीला हुई।

जेहड़ो धणी पांहिजो, तेहडी तेहजी रांद।
लाड कोड इसक जा, तेहडाई पारे कांध ॥ ३२

जैसा हमारा धनी है उसका खेल भी वैसा ही है। वैसे ही वे रूहों के लाड और खुशियों को पूरा करते हैं।

बड़ी गाल धणीअजी, लगी मत्थे आसमान।
आंऊं रे पाणी भूं सूकीअसें, खांधिम डुब्यूं पांण ॥ ३३

स्वामी की बात बड़ी है। आसमान से भी ऊंची लगी। मैं यहां पानी के बिना सूखी धरती में गोते खा रही हूँ।

जा सऊर करिआं रूह से, त निपट गरई गाल।
चुआं हित हिन मूंह से, मूंजो खसम नूरजमाल ॥ ३४

जो रूह से शऊर करूं तो बात बहुत भारी है। इस मुँह से तो कहती हूँ कि नूरजमाल प्रीतम मेरे स्वामी हैं।

अंई गाल सुणेजा जेडियूं, मू चरई ज्यूं चंगी भत्त।
गाल कंदे फटी न मरां, के कांध से निसबत ॥ ३५

हे मेरी सखियों तुम मुझ दीवानी की वात अच्छी तरह सुनो। यह बात करते फट कर मर नहीं जाती कि मेरी किन स्वामी से निस्वत है।

लाड कोड आसा उमेदूं, आंऊं चुआं मूं माफक।
पारण वारो मूं धणी, काएम अरस जो हक ॥ ३६

लाड़, हर्ष, आशा, उम्मीद मैं अपने अनुसार कहती हूं। उन्हें पालने वाला मेरा पति अखंड परमधाम का स्वामी है।

जे आंईं गाल विचारियो, रूहें मेडो करे।
त रही न सगा किएँ रांदमें, हे कूडा वजूद धरे ॥ ३७

हे रूहों यदि आप मिलकर यह बात विचारो तो इस खेल में झूठा शरीर धारण करके रह न सको।

सहूर डिअण मूं हिओ, कठण केआंऊं निपट।
न तां विचार कंदे हिक हरफजो, फटी पोए न उफट ॥ ३८

मुझे शऊर दे कर मेरा हृदय कठोर कर दिया। नहीं तो एक शब्द का विचार करते वह झट से फट न जाता

सभ अंग डिनाऊं कठण, त रह्यो वंजे आकार।
न तां सुणी विचारी हे गालियूं, कीं रहे कांधा धार ॥ ३९

मेरे सब अंग इन्द्रिय कठोर बना दिए तभी तो आकार रह जाता है। नहीं तो यह बाते सुन विचार कर पति से अलग कैसे रहता।

इलम डिनांऊं पांहिजो, मए निपट बडो विचार।
बका न चौडे तबकें, से डिनो उपटे द्वार ॥ ४०

आपने अपना इल्म दिया जिसमें वड़ा सार भरा है। चौदह लोक में अखंड परमधाम का ज्ञान कोई नहीं जानता था वह द्वार खोलकर मुझे दिया।

विहारे ते विच्चमें, जो बका वतन ।
करे निसबत हिन कांध से, असल काएम रूह तन ॥ ४१

हमें उस अखंड वतन में बैठाया । कायम रूहों के तन से हमने उस पति से सम्बन्ध जोड़ा ।

हे इलम एहडो आइओ, सभ दिल जी पूरण करे ।
डेई इसक मेडे कांध से, घर पुजाए नूर परे ॥ ४२

यह ज्ञान ऐसा आया है कि दिल की सब बातें पूर्ण करता है । प्रेम देकर प्रियतम से मिलाता है और नूर के पार परमधाम में पहुँचाता है ।

रूहें पांण न विचारियूं, हिन इलम संदो हक ।
से कीं न करे पूरी उमेद, जे में न्हाए सक ॥ ४३

हे रूहों हमने स्वामी के इस ज्ञान का विचार न किया जिसमें जरा भी शंका बाकी नहीं रह जाती । वह ज्ञान हमारी सब उम्मीदों को पूरा क्यों नहीं करेगा ?

धणी पांहिजो पांण के, विचारण न डे ।
के के डींह हिन रांद में, करे थो रखण के ॥ ४४

हमारे धनी हमें विचार ही नहीं करने देते । वे कुछ दिन इस खेल में रखने के लिए ऐसा करते हैं ।

मूके अकल न इसक, से पट खोल्याईं पांण ।
उघाड्यूं अँख्यूं रूहज्यूं, थेयम सभे सुजाण ॥ ४५

मुझे न तो समझ थी न प्रेम था । आपने ही यह पट खोला । आपने मेरी रूह की आखें खोल दी । मैं सब तरह से खबरदार हो गई ।

न तां केर आंऊँ केर इलम, आंऊँ हुइस के हाल ।
पुजाइए हिन मजलके, मूं धणी नूरजमाल ॥ ४६

नहीं तो कहां इलम कहां मैं ? मैं किस हाल में थी ? मेरे धनी नूर-जमाल ने मुझे इस मंजिल तक पहुँचाया ।

आंऊं हुइस कबीले के घर, हा गंदो वजूद धरे ।
श्रेयम धणी नूरजमाल घर, जे दर नूर अच्चे मुजरे ॥ ४७

मैं कबीले और घर में यह गंदा शरीर धारण किए थी । स्वामी नूर-जमाल मेरे पति बने जिन्हें मुजरा करने अक्षर ब्रह्म आते हैं ।

बाहेर मंझ अंतर, सभनी हंदे इसक ।
रूह अल्ला डिखारई, बड़ी दोस्ती हक ॥ ४८

बाहर अन्दर और अन्तर में सब जगह इश्क ही इश्क है । रूह अल्लाह ने हक की बड़ी दोस्ती दिखाई ।

मूं फिराक हिन धणी जो, मूंआं अगरो हिन धणी के ।
आंऊं बेठिस धणी नजर सें, सिधी न गडजां ते ॥ ४९

मुझे स्वामी की जुदाई है तो प्रियतम को हमसे अधिक है । मैं स्वामी की नजर में बैठी हूँ इसीलिए सीधी नहीं मिल पाती ।

मूं फिराक धणी न सहे, मूके बिहारचाई तरे कदम ।
धणी पांहिजी रूहन रे, रई न सगे हिक दम ॥ ५०

मेरा वियोग स्वामी नहीं सहते । मुझे चरणों तले बिठाया है । स्वामी अपनी रूहों के विना एक पल भी नहीं रह सकते ।

मूं धणी रे घारई, मूंजी सभ उमर ।
इसक धणी या मूंह जो, पस्स जा पटंतर ॥ ५१

स्वामी के बिना मेरी सारी उम्र व्यर्थ गई । मेरे और प्रियतम के प्रेम में अन्तर देखो ।

महामत चोए मेहेबूब जी, अस्सां इसक बेवरो ईं ।
मूजे आंजे दिल जी, आंऊं कंदिस अरज बेई ॥ ५२

श्री महामति कहतीं हैं हे मेरे महबूब ! हमारे प्रेम का विवरण तो यह है । हमारे और आपके दिल की बात दूसरी तरह अर्ज करती हूँ ।

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ २४५ ॥

॥ झगडे जो प्रकरण ॥

झगड़े का प्रकरण

वलहा जे आंऊं तोके वलही, गिनी बिठे तरे कदम ।
हे मूं दिल डिनी साहेदी, तूं मूं रे रहे न दम ॥ १

प्रिय ! जो मैं आपकी प्यारी हूँ, आप मुझे अपने चरणों के नीचे लिए बैठे है। मेरा दिल यह गवाही देता है कि आप मुझ बिना एक पल भी नहीं रह सकते।

डिनी बी साहेदी इलम, त्री तोहिजे इसक ।
चौथी साहेदी रसूल, बियूं कै साहेदियूं हक ॥ २

दूसरी गवाही आपके ज्ञान ने दी। तीसरी आपके इश्क ने। चौथी गवाही तेरे रसूल ने दी। और भी कई सत्य साक्षियां मिलीं।

तोहिजे इलमें मूके ईं चयो, ही रांद केई आं कारण ।
लाड कोड आसा उमेदूं, से सभेई पारण ॥ ३

आपके इल्म ने मुझे यह बताया कि यह खेल हमारे ही लिए, हमारे लाड हर्ष, आशाएं और सब उम्मीदें पूरी करने के लिए ही यह किया गया।

बेई न जरे जेतरी, तोहिजें दिलमें गाल ।
लाड उमेदूं रूह दिलज्यूं, से तूं पूरे नूरजमाल ॥ ४

दूसरी जरा जितनी भी आपके दिल में बात नहीं है। रूहों के दिल के लाड हे नूर जमाल स्वामी ! आप पूरे करते हैं।

हे चिअम तिर जेतरी, आईन अलेखे अपार ।
अस्सां सिक्कण रहे के गालजी, सभ तूंही करण हार ॥ ५

यह तो मैंने तिल जितनी कही है, बेशुमार बातें है। हमें किसी बात की भी चाह हो, वह आप नूर जमाल पूरी करने वाले हैं।

कांध डे तूं हे पडूत्तर, हिन रांदमें बेही ।
न तां बडा लाड मूंहजा, कीं पारीने सेई ॥ ६

हे स्वामी आप इस बात का जवाब दीजिए कि इस खेल में वैठकर आप हमारा बड़ा लाड कैसे पूरा करने वाले हैं।

हुइयूं आसा उमेदूं बडियूं, से थक्यूं विच्च हित ।
मूं अडां पस्सो न सुणो गालडी, हांणे आंऊं चुआं के भत्त ॥ ७

हमारे दिल में वड़ी आशा उम्मीदें थीं, आप इतने में ही थक गए मेरी ओर देखिए और बातें सुनिए, अब और मैं किस तरह कहूँ।

तूं की पारीने वडियूं, जे हितरी न थिए तोह ।
फिरी फिरी मंगाए न डिए, हे के सिर डिआं डोह ॥ ८

आप बड़ी आशाएँ कैसे पूरी करेंगे जब इतनी भी आपसे नहीं होती है। वार-वार मांगने पर भी देते नहीं हैं यह दोष मैं किसके सिर दूँ?

हिक मंगां दीदार तोहिजो, बी मिठडी गाल सुणाए ।
कांध मूंहजा दिल डेई, मूसे हित गालाए ॥ ९

एक तो आपका दीदार चाहती हूँ दूसरे मीठी बातें सुनाइये। हे स्वामी मुझे दिल दे कर मुझसे यहां बातें करिये।

हांणे वड्यूं उमेदूं अगिआं, कीं पूरयूं कंने कांध ।
हांणे पेरे लगी मंगां एतरो, पाए गिच्चीमें पांध ॥ १०

अब और आगे बड़ी उम्मीदें होंगी हे स्वामी! आप उन्हें कैसे पूरा करेंगे। अब चरण छू कर गले में पल्ला डाल कर इतना ही मांगती हूँ।

हे गाल आए थोरडी, कीं हेडी बडी केइए ।
आंऊं कडी न रहां दम तोरे, से विसरी कीं वेइए ॥ ११

यह वात तो थोड़ी सी है क्यों इतनी बड़ी कर रहे हैं। मैं कभी आपके विना पल भर भी नहीं रहती थी सो भूल कैसे गई।

मूके कुच्छाइए निद्रमें, तूं पाण जागे थो ।
जे बांभाईए मूं बलहा, त तो इसक अच्चे डो ॥ १२

मुझसे नींद में बुलवाते हो, आप स्वयं जाग रहे हैं। हे प्रिय ! यदि आप मुझे रुलाएंगे तो आपके प्रेम को दोष आएगा।

तूं भाइयूं बेठ्यूं मूं कंने, माधा मूं नजर ।
जे दिल हिनीजा न्हारिए, त हे विलखे थ्यूं रे वर ॥ १३

आप समझते हैं कि रूहें मेरे पास मेरी नजर के सामने बैठी हैं। जो इनका दिल देखें तो यह प्रियतम के बिना बिलख रही है।

हिक लेखे मूं न्हारिओ, मूं न्हाए गुन्हे जो पार ।
त रूसी रहे मूंसे बलहो, मूंके करे गुन्हेगार ॥ १४

एक तरह से देखा तो मेरे गुनाहों का पार नहीं है। तो क्या प्रियतम मुझे दोषी ठहरा कर मुझसे रूठ रहे हैं ?

आईं बिचारे न्हारजा, आंहिजे मोहजा वेण ।
तांजे अस्सी विसरयां, तपण आंहिजा सेण ॥ १५

आप अपने मुख से कहे वचनों का ध्यान कीजिए। आपने कहा था कि कदाचित् तुम मुझे भूल भी जाओ तो भी मैं तुम्हारा सज्जन हूं।

मूके इलम डेई पांहिजो, केइए खबरदार ।
से न्हारिम जडे सहूरसे, त कांध आऊं न गुन्हेंगार ॥ १६

मुझे अपना इलम देकर आपने खबरदार कर दिया। अब इलम से विचार करके देखती हूं तो स्वामी मैं गुन्हेगार नहीं हूं।

धणी तो डिनी निद्रडी, ते विसरया सभ कीं ।
जी नचाए तीं नचियूं, कुरो करियूं अस्सीं ॥ १७

हे धनी आपने नींद दी तो हम सब कुछ भूल गए। जैसे आपने नचाया वैसे हम नाचे। हम क्या करें।

अस्सां इसक निद्रडी विसारिओ, अचची मए हिन रांद ।
इसक तोहिजो डिखारिओ, पस्स मूंहजा कांध ॥ १८

हमारा प्रेम तो नींद ने इस खेल में आकर भुला दिया । मेरे प्रियतम आपने जो प्यार दिखाया, उसे भी देखिए ।

तनडा अस्सांजा तो कंने, पण दिलडा अस्सांजा कित ।
से कीं फिकर न करचो, के हाल मूंहजो चित्त ॥ १९

हमारा तन आपके पास है परन्तु हमारा दिल कहाँ है ? इस बात की चिन्ता क्यों न की कि हमारे दिल का क्या हाल है ।

डुख न डिस्से आकार, दिलडा डुख पस्सन ।
से डुख डिस्से दिल रांदमें, डुख न बकामें तन ॥ २०

दुःख शरीर नहीं देखता । दिल ही दुःख पाता है । सो दिल खेल में दुःख देखता है । परमधाम में शरीर को दुःख नहीं होता ।

दिल अस्सांजा सोणेमें, से था डुख पस्सन ।
से पस्सो था नजरों, जे गुजरे दिल रूहन ॥ २१

दिल हमारा सुपने में है सो दुःख देखता है । उसे आप अपनी नजर से देखते हो जो रूहों के दिल पर बीत रही है ।

डिनी अस्सांके निद्रडी, इसक न रई सांजाए ।
आं जागंदे प्यारचूं पांहिज्यूं, तो डिन्यूं कीं भुलाए ॥ २२

हमें नींद दी । इश्क या पहचान न रही । आपने जागते हुए अपनी प्यारियों को कैसे भुला दिया ।

डोह न अच्चे सुतडे, जागंदे मत्थें डो ।
अस्सीं डुख डिस्सू आं डिस्संदे, कीं चोंजे आसिक सो ॥ २३

सोये हुए के माथे दोष नहीं होता । जागे पर दोष आता है । आपके देखते हम दुःख देखें तो आपको आशिक कैसे कहा जाए ।

से कीं विचार न करचो, बडो आंजो इसक ।
मासूक केआं रूहन के, को न भजो अस्सांजी सक ॥ २४

यह विचार क्यों न किया कि आपका प्रेम बड़ा है। रूहों को आपने माशूक कहा, हमारी इस शंका को दूर क्यों नहीं करते।

आसिक न्हारे नजरे, मासूक बेठो रोए ।
हेडी कडे उलटी, आसिक से न होए ॥ २५

आशिक नजर से देखे और माशूक बैठा रोवे, ऐसी उलटी बात कभी आशिक से नहीं होती।

मूजा लाड कोड पारणजा, आं सिर सभ मुद्दार ।
डिए डोह अस्सांके, जे अस्सां सुध न सार ॥ २६

मेरे लाड और खुशियाँ पूरी करने का मुद्दा आप पर है। आप हमें दोष देते हैं जब कि हममें कोई सुधि या पहचान नहीं है।

मूके इलमें चओ भली परे, कोए न्हाए डोह रूहन ।
केओ थ्यो सभ कांध जो, अस्सी सभ मंझ इजन ॥ २७

मुझे आपके इल्म ने भली-भाँति बता दिया है कि रूहों का कोई दोष नहीं है। किया कराया सब स्वामी का है। हम तो सब हुक्म में हैं।

इसक बंदगी या गुणा, से सभ हत्थ हुकम ।
रांद करिए निद्रमें, हित केहो डोह अस्सां खसम ॥ २८

इश्क, बन्दगी या गुनाह सो सब हुक्म के हाथ में है। हमें नींद में खेल खिला रहे हैं, हे स्वामी ! यहाँ हमारा क्या दोष है।

बेसक डिने इलम, जगाया दिल के ।
इलम न पुज्जे रूहसी, सभ हत्थ हुकम जे ॥ २९

आपने बेशक इल्म दे कर दिल को जगाया। इल्म रूह तक पहुँचता नहीं है। यह सब आपके हुक्म के हाथ में है।

रूहसी पुज्जी न सगे, आयो न्हाएमें इलम ।
जो सऊर करिआं इलम, त हित जरो न रे हुकम ॥ ३०

रूह को इस नश्वर माया में आया इल्म पहुँचता नहीं है। जो इल्म से शऊर करती हू ँ तो यहाँ जरा भी आपके हुक्म के बिना नहीं है।

जे कीं केओ से हुकमें, से हुकम आं हत्थ थेओ ।
हिक जरो रे तो हुकमें, आए न कोए बेओ ॥ ३१

जो कुछ किया सो हुक्म ने किया, और वह हुक्म आपके हाथ में है। आपके हुक्म के बिना दूसरा जरा भी कुछ नहीं है।

तो केओ से थेओ, तो केओ थिए—थो ।
थींदो से पण तो केओ, तो रे कित्त न को ॥ ३२

आपने किया वही हुआ, आपके किए सब होता है। आपके किए से ही सब होगा। आपके बिना कहीं कोई नहीं है।

तेहेकीक मूं ईं बुझिओ, मूके बुझाई तो इलम ।
थेओ थिएथो जे थींदो, से हल चल सभ हुकम ॥ ३३

मैंने निश्चित रूप से जान लिया, मुझे आपके इल्म ने ही समझाया कि जो हुआ है, जो होता है, जो होगा, वह हलचल सब आपके हुक्म की है।

एहडो बडो मूं धणी, को न न्हारिए संभारे ।
वेण सुणाइए वलहा, मूं सामों न्हारे ॥ ३४

इतने बड़े मेरे स्वामी ! संभाल कर क्यों नहीं देखते। हे प्रिय, मेरे सामने देख कर आप मीठे वचन सुनाएँ।

धणी को न करचो मूं दिलजी, आंऊं अटकां थी हिन गाल ।
तूं पुज्जे सभनी गालिएँ, आंऊं कीं तरसां हिन हाल ॥ ३५

स्वामी आप मेरे मन की क्यों नहीं करते। मैं इसी बात के लिए अटकी हूं। आप सब बातों तक पहुँचने वाले हैं। मैं इस हाल में कैसे विलख रही हूं ?

जे आंऊं मंगां सऊर में, तांजे मंगां बे अकल ।
लाड सभे तो पारण, जे अच्चे मूजे दिल ॥ ३६

जो मैं समझ कर मांगू या कदाचित् नासमझी में, मेरे दिल में जो भी लाड आएंगे वे सब आप ही पालने वाले हैं ।

दिल चाहे मूं हिक्कडी, को न पारिए लख गुणी ।
तूं कीं लिके मूह थी, तो जेडो मूं धणी ॥ ३७

दिल मेरा एक चाह करता है उसे आप लाख गुना क्यों नहीं देते । आप मेरे ऐसे स्वामी हैं । मुझसे छिपते क्यों हैं ।

आंऊं धणिआंणी तोहिजी, मूं घर अरस अजीम ।
मूं कोड्यूं उमेदूं वडियूं, तूं तेआं कोड गण्यूं को न डिअम ॥३८

मैं आपकी पत्नी हूं । अर्श अजीम मेरा घर हैं । मेरे दिल में करोड़ों वड़ी-वड़ी उम्मीदें हैं । उन्हें आप करोड़ गुना करके क्यों नहीं देते हैं ।

तो भायो हे उमेदूं मगंदयूं, नयूं नयूं दिल धरे ।
हिन जिमी न द्रापदयूं, आंऊं डींदुस कींअ करे ॥ ३९

आप समझते हैं कि यह दिल में नई-नई उम्मीदें लेकर माँग रही है । इस धरती पर कभी कोई तृप्त नहीं हुआ । मैं उन्हें कैसे देता जाऊं ।

हेडो जाणी दिल में, पेरोई ढँके द्वार ।
न कीं सुणाइए गालडी, न कीं डिए दीदार ॥ ४०

ऐसा दिल में जान कर पहले से ही द्वार बन्द कर दिए । न तो वात ही सुनाते हैं न कछु दर्शन ही देते हैं ।

ते दर ढँके मूरजो, अस्सां अंखे कंने डिने पट ।
तो भायों घुरंदयूं घणी परे, बेठो जाणी वट ॥ ४१

आपने शुरू से ही द्वार बन्द कर दिए ओर हमारे आंखों-कानों पर पर्दा डाल दिया । आपने जाना कि यह पास वैठे समझ कर बहुत तरह से मांगती रहेगी ।

रूहें हिन जिमीअ में, ध्रापे न के भत्त ।
ईं जाणी लिके मूह थी, हिअडो केआं सखत ।। ४२

इस धरती पर रूहें किसी भी तरह तृप्त नहीं होंगी । ऐसा जान कर आप मुझसे छिप गए हैं । अपना हृदय कठोर बना लिया है ।

हे पट डिस्सी मू न्हारिम, उमेद न आसा कांए ।
जगाइए ते वखत, मत्थां डिने डीह पुजाए ।। ४३

यह पर्दा देख कर मैं समझ गई । अब कोई आश उम्मीद बाकी नहीं है । जगाया उस समय पर जब ऊपर से दिन आ गया (चलने का समय हो गया) ।

मूं घर अरस अजीम, नूरजमाल मूं कांध ।
लाड पारण मूहजा, मूं कारण केई रांद ।। ४४

मेरा घर अर्श परमधाम है । नूर जमाल स्वामी मेरे पति हैं । मेरे ही लाड पूरे करने के लिए आपने यह खेल बनाया ।

तो इलमें चयो लाड पारींदो, ते में सक न कांए ।
जे जे भत्तें मूं न्हारिओ, इलमें सभे डिनी पुजाए ।। ४५

आपके इल्म ने कहा कि लाड पालेंगे इस बात में शंका नहीं है । जिस-जिस तरह से मैंने देखा इल्म ने उसी तरह सब मेरी आशाओं को पूरा किया ।

पण हित अच्ची इलम अटक्यो, जे कडी न अटके कित ।
मूं न्हारे न्हारे न्हारिओ, त अच्ची अटक्यो हित ।। ४६

पर यहाँ आकर इल्म अटक गया जो कभी कहीं अटका नहीं था । मैंने कई तरह देख-देख कर देखा कि आपका ज्ञान यहाँ अटक गया है ।

हित डोह न कोए इलमजो, न कीं डोह विचार ।
हे घुंडी तोहिजे हुकम जी, सा छुटे न कांधाधार ।। ४७

यहाँ दोष इल्म का नहीं है न ही विचार में कमी है । आपके हुक्म की ही आँकड़ी है । वह स्वामी के बिना खुलती नहीं ।

गाल गुझांदर ईं थेई, तूं पांणई जांणें ।
हे गुझच् गाल्य् तो रे, के के चुआं हांणे ॥ ४८

यह गुझ रहस्यपूर्ण बातें हैं आप स्वयं उन्हें जानते हैं। ऐसी गुप्त बातें आपके सिवा दूसरे किससे कहूँ।

तूं धणी मूं इसकजो, तूं धणी सऊर इलम ।
तूं धणी वतन रूहजो, हे गुझ के के चुआं खसम ॥ ४६

आप मेरे इश्क के स्वामी हैं, आप मेरे विवेक और ज्ञान के मालिक हैं। रूह के वतन के धनी भी आप ही हैं। अब यह गुझ किसको कहूँ।

सिकाए सिकाए मूहके, को द्रजंदो द्रजंदो डिए ।
लाड मगंदच् रांदमें, तो अटके ईं हिए ॥ ५०

तरसा-तरसा कर डरते-डरते क्यों देते हो। इस खेल में बैठ कर लाड माँगती हूं इसीलिए यहाँ इस तरह अटक रहे हैं।

हिक बडो मूके अचरज, मूजा लाड पारीने कीं ।
मूके जगाए मँगाइए डिअणके, मत्थां पुजाइए डींह ॥ ५१

एक बात की मुझे हैरानी है कि आप मेरे लाड कैसे पालेंगे। मुझे जगा कर देने के लिए मंगाया और ऊपर से दिन पहुँचा दिया।

रांद डिखारिए उमेद के, जगाइए लाड पारण ।
विलखाइए सुणन वेण के, रूआं दीदार कारण ॥ ५२

उम्मीद पूरी करने के लिए खेल दिखाया और लाड पालने के लिए जगाया। अब वचन सुनने के लिए भी विलखा रहे हो। मै आपके दर्शन के लिए रो रही हूँ।

कांध उमेदूं वडियूं, मूं दिल में थो पाइए ।
धणी पांहिंजे डोह के, मूं मोंहां थो चाइए ॥ ५३

स्वामी आप मेरे दिल में बड़ी आशाएं पैदा कर देते हो। आप अपना दोष मेरे मुँह से कहलवा रहे हैं।

आंऊं पण द्रजंदी, न डिआं आंके डोह ।
बंग पांहिजो पांणई, मूं मोहां चाइए थो ।। ५४

मैं भी डरती हुई आपको दोष नहीं देना चाहती । परन्तु आप अपनी कमी मेरे मुंह से कहलाना चाहते हैं ।

तोबा तोवा करिआं, जिन भुलां चुकां हांण ।
हल्लां धणी जे हुकमें, जीं सुख भाइए पांण ।। ५५

तोवा, तोवा करती हूं । अब फिर भूल-चूक न हो । मैं धनी के हुक्म में ही चलूं जिससे आप प्रसन्न हों ।

पेरो हुई गाल कोलजी, थेई थींदी सभ चोयम ।
द्रजां चोंदे अगरी, जीं न अच्चे दिल पिरम ।। ५६

पहले तो वचन को बात थी, जो हुआ वह कह दिया । अधिक कहते डरती हूं कहीं प्रियतम को बुरा न लग जाए ।

कोल फेलजी वही वेई, हाणे आई मत्थे हाल ।
हांणे कुच्छण मुकाबिल, हित हल्ले न अगरी गाल ।। ५७

कहने करने की बात गई अब हाल पर बात आई । आपके सामने अब अधिक बोलने की बात नहीं चलेगी ।

घणों द्रप भुल चुक जो, ही हक्कजी खिलवत ।
सच्चो रच्चे सच्च से, भूल न हल्ले हित ।। ५८

बहुत डर भूल-चूक का है । यह तो हक (सच्चे परमात्मा) की खिल-वत है । सच्चा सच्चे से मिलता है । वहाँ झूठ नहीं चलता ।

इलम पांहिजो डेई करे, मूंके रोसन तो केई ।
ते झोडो करिआं कांध से, विच्च रांद जे बेही ।। ५९

अपना इल्म देकर मुझे आपने ज्ञान कराया । तो इस खेल के बीच में बैठ कर अपने प्रियतम से झगड़ा करती हूं ।

तोहिजे इलमें आंऊं सिखई, गिडम वकीली सभन ।
मूजो इतबार सभनी, आयो तोहिजी रूहन ॥ ६०

आपके इल्म से ही मैंने सब की वकालत ले ली है। आपकी सब रूहों को मुझ पर विश्वास है।

दावो मूजो या रूहन जो, सभनी बटां आंऊं ।
आंऊं गुझ जांणां सभ तोहिजी, कीं पेर डिए पांउं ॥ ६१

मेरा या रूहों का दावा हो। मैं सब की ओर से वकालत कर रही हूँ। मैं आपके गुझ (भेद) जानती हूँ। अब आप पाँव पीछे कैसे हटाएंगे ?

खिलवत जांणां अरस जी, कोल फेल हाल असल ।
तोजी गुझ न रही कां मूह थी, दावो तो मू बिच्च अदल ॥६२

मैं आपकी खिलवत की सब बातें जानती हूँ। असल (मूल घर परम-धाम) के कौल फेल हाल सब मुझे पता हैं। आपका कुछ भी मुझसे छिपा नहीं। आपका और मेरा झगड़ा (दावा) अदालत में है।

तूं सच्चो तो गाल्यूं सच्यूं, अने सच्चो तो हल्लण ।
मूं तो दावो सरे सच्चजो, झल्यम सच्चो दावन ॥ ६३

आप सच्चे हैं आपकी बातें सच हैं और आपका चलन भी सच्चा है। मेरा और आपका दावा सच्चे कानून का है। मैंने सच्चा ही दामन पकड़ा है।

तूं सच्चा सच्च गालाइज, सच्च बोलाइज मूं ।
सच्च दावो सच्च साहेद, सच्च जांणे सभनी सच्चा तूं ॥६४

आप सच्चे हैं, सत्य ही कहना। मेरे से भी सत्य कहलवाना। सच्चा दावा है, सच्ची साक्षी है, सब सच्चे जानते हैं कि आप सांचे हैं।

हिन न्हाएके केइए सच्च, जे हित आया सच्चा पांण ।
मूसे सच्च को न करिए, मूजा सचवडा सेण सुजांण ॥ ६५

इस नहीं, माया, को जिसमें हम सच्चे आए हैं सत्य कर दीजिए। मुझसे सत्य क्यों नहीं करते मेरे सच्चे सबूझ साजन।

जोर अस्सां से को करिए, जडे आई गाल सरे ।
सोई सच्चो अमीन, जो सच्ची गाल करे ॥ ६६

हमसे जोर क्यों करते हैं जब बात कानून तक पहुँच चुकी है । वही सच्चा न्याय देने वाला है जो सच्ची बात करता है ।

पांण चाइए नालो हक, बेओ तो नाम रेहेमान ।
आंऊं मंगां हक पडूत्तर, मूके डे मेहेरबान ॥ ६७

आप अपना नाम सत्य कहलवाते हैं और दूसरा आपका नाम कृपालु है । मैं आपसे सत्य उत्तर चाहती हूं, हे मेहरबान ! मुझे दीजिए ।

सच्चा सच्चो मूके रसूल, मत्थे सच्च अदल ।
मूं सच्च दावो दोस से, सच्चडा थी मुकाबिल ॥ ६८

सच्चे अदल के लिए साँचे ने सांचा रसूल भेजा । मेरा दावा सच्चे दोस्त से है, आप सच्चाई से ही सामने हूजिए ।

तेहेकीक न्या अस्सांहिजो, डोह आयो मत्थे कांध ।
पण तोरो थ्यो तो हथ्थ में, ते मूजो हल्ले न मए रांद ॥ ६९

हमारा निश्चित न्याय यही है कि स्वामी के ही सिर पर दोष है । परन्तु न्याय तुला आपके हाथ में है, इसलिए मेरा इस खेल में कुछ चलता नहीं है ।

सरो सच्च साहेब जो, हित सच्चो हल्लणो हक्क ।
हे कूडा काजी रांद में, भाइए करियां हिन माफक ॥ ७०

साहिब का कानून सच्चा है । परमात्मा का चलना भी सच्चा है । इस खेल के काजी (न्यायाधीश) झूठे हैं । कहीं उन जैसा आप न करना ।

एहेडी हिन अदालत, आंऊं करण कीं डिआं ।
हे दावो तो मूं विच्च जो, सच्चडो मूंजो मिआं ॥ ७१

ऐसी इन अदालत में मैं ऐसे कैसे करने दूंगी ? यह दावा आपके और मेरे बीच है, और मेरा स्वामी सच्चा है ।

हाणे दाई मुद्दई बे जणां, जां मुकाबिल न हूंन ।
तूं बेठो मत्थे तोरो गिनी, हे बेठ्यूं हिकल्यूं रूंन ॥ ७२

अब वादी और प्रतिवादी दोनों जन जब तक आमने सामने नहीं होते (न्याय कैसे हो) आप न्याय तुला लेकर ऊपर बैठे हैं और मैं अकेली यहाँ बैठी रो रही हूं ।

सिकां सडां दीदार के, बी सुणन के गाल ।
मूं वजूद नासूत में, तूं धणी बका नूरजमाल ॥ ७३

तरसती हूं आपके दर्शन को और दूसरे आपकी बात सुनने को। मेरा शरीर नश्वर संसार में है और मेरा स्वामी नूर जमाल अखंड परम-धाम में है ।

भागो पण तूं न छुटे, मंगां हक निआए ।
सरो घुरे सच्च सभनी, या गरीब या पातसाए ॥ ७४

भाग कर भी आप छूट नहीं सकते । मैं आपसे सच्चा न्याय माँगती हूं । सच्चा न्याय तो सब चाहते हैं चाहे गरीब हों या बादशाह ।

सरे सच्च न्हार जे, हे जो सरो सुभान ।
भोंणें—भजंदो मूहथी, पांण चाइए रेहेमान ॥ ७५

परमात्मा का कानून तो सच्चा होना ही चाहिए । आप मेहरबान कहला कर भी मुझसे भागते फिरते हैं ।

मूं इलम खटाई तोहिजे, से भाइयां तोहिजा आसान ।
तोके बंधों मूं रांद में, कीं छुटे भगो सुभान ॥ ७६

मुझे आपके इल्म ने विजय दिलाई, इसलिए मैं आपका एहसान मानती हूं । आपको भी इस दुनियां में मैंने बांध लिया है, हे सुमान ! भाग कर कैसे छूटेंगे ?

आंऊं झल्ले ऊभी निआंके, हल्लण न ड्यां अहक ।
मूं कंने जोर सरे इलम जो, मूं तोके खट्यों बेसक ॥ ७७

मैं न्याय को थाम कर खड़ी हूं । झूठ चलने नहीं दूंगी । मेरे पास आपके कानून और इल्म का बल है । मैंने बेशक आपको जीत लिया है ।

जे निआं सामो न्हारिए, त पट न रखे दम ।
त हक केई न्हारिजे, हल्लाए हक हुकम ॥ ७८

जो न्याय की ओर देखें तो एक पल भी पर्दा न रखें । आपको सच्चा हुक्म चलाकर सच्चा ही न्याय करना चाहिये ।

सरो—तोरो होए अदल, निआं थिए तित ।
हे गाल्यूं गुझांदर अरस ज्यूं, किआं कढ़ां गुहाई हित ॥७९

कानून और तुला जहाँ बराबर हो वहीं न्याय होता है । अर्श की बातें बड़ी गूढ़ हैं । मैं यहाँ गवाही कहाँ से लाऊं !

हित साहेद तूंहीं तोहिजो, खिलवत में न बेओ ।
जे बंग होए मूह जो, से मूंजे सिर डेओ ॥ ८०

यहाँ आप ही आपके साक्षी हैं । खिलवत में दूसरा कोई नहीं हैं । जो मेरा दोष हो तो मेरे सिर देना ।

झोडो करिआं कांध से, जे तो झोडाई ।
तूं दाई तूं मुद्दई, हित तूंहीं गुहाई ॥ ८१

स्वामी से झगड़ा करती हूं जो आपने ही लड़वाया । आप ही वादी और प्रतिवादी हैं, आप ही यहाँ साक्षी हैं ।

भोंणों लिकंदो मूह थी, आए निआं गाल घणी ।
लाड कोड मंगां तो कने, अच्च मुकाबिल मूं धणी ॥ ८२

मुझसे छिपते फिरते हैं । न्याय की बड़ी बात है । आपसे लाड और खुशी मांगती हूं । मेरे स्वामी सामने आइये ।

तांजे मुकाबिल न थिए, मूं थी छुटे न कीं ।
पांण वतन बिनीजो हिकडो, तूं मूंहजो पिरी ॥ ८३

कदाचित् आप सामने नहीं आते तो भी मुझसे कैसे छूटेंगे ? हम दोनों का वतन एक ही है । आप मेरे प्रियतम हैं ।

तूं सच्चो धणी मूं सिर, तोके पुज्जां मए रांद ।
लाड पाराइआं पाँहिजा, तूं मूं सिर सच्चो कांध ॥ ८४

आप सच्चे स्वामी मेरे सिर पर हैं मैं आप तक इसी खेल में पहुँचूंगी । यहीं अपने सब लाड पूरे कराऊं तभी मेरे सिर सच्चे पति हैं ।

आंऊं धणिआंणी तोहिजी, डे तूं मूं जीरे अंग ।
मूं मुए पुठी जे डिए, हे केडो निसबत संग ॥ ८५

मैं आपकी पत्नी हूं आप मुझे जीते जी अपना अंग दीजिए यदि आप मरने के बाद देंगे तो अपना सम्बन्ध कैसा ?

लाड़ कोड़ सभे त परे, जे मूंसे गडजे हित ।
वडो सुख थिए साथ के, मंगां जांणी निसबत ॥ ८६

लाड हर्ष मेरे तब पूरे हों यदि आप मुझे यहाँ मिलें । सुन्दर साथ को बड़ा सुख हो । अपना सम्बन्ध जान कर मांगती हूं ।

सच्ची सांजाए तूं करिए, समरथ तूं सुजाण ।
संग जांणी करिआं लाडडा, डिने छुटे मेहेरबान ॥ ८७

आपने सच्ची पहचान कराई है, मेरे समर्थ प्रवीण साजन । सम्बन्ध जान कर लाड करती हूं । हे मेहरबान दिए से ही छूटेंगे ।

तूं मेहेबूब लाडो कांध मूं, चौडे तबके सुंई निसबत ।
हांणे लिके थो के गालके, लाड जाहेर मंगे महामत ॥ ८८

आप मेरे प्रिय लाडले पति हैं । चौदह लोक ने यह खबर सुन लो । अब किस बात से छिप रहे हैं । महामति प्रकट रूप से लाड माँगती है ।

मूं दुलहिन के जाहेर तो केई, मूं दुलहा जाहेर तूं थेओ ।
पांहिज्यूं रूहें जाहेर तो केयूं, तो रे आए न को बेओ ॥ ८९

मुझे आपने दुलहिन के रूप में स्वीकार किया और आप मेरे दूल्हा जाने गए । अपनी रूहों को भी प्रकट किया । आपके बिना कोई दूसरा है ?

तूं लज्ज करिए केह जी, या अरस तांजे हित ।
तो निसबत अस्सां से, बेओ कोए न पस्सां कित ॥ ८०

आप शर्म किसकी करते हैं ? परमधाम हो या दुनियां, आपका हमसे सम्बन्ध है । दूसरा कहीं कोई नहीं देखती हूं ।

आईं चोंदा तूं को घुरे, हिन न्हाएसें लाड ।
आऊं त घुरां तो लगाई, हिनमें हुकमें डे सवाद ॥ ८१

आप कहेंगे कि इस नहीं (माया) में लाड कैसे माँगती है ? आपकी सिखाई माँग रही हूं । इसमें हुक्म ही आनन्द देता है ।

अस्सी आयासीं रांद में, त लाड मंगूं मए हिन ।
अस्सीं कीं कीं डिस्सूं हिनके, आंई इंनी पस्सेजा जिन ॥ ८२

हम खेल में आई हैं तभी इसमें बैठी लाड माँगती हैं । हमने तो इसे कुछ-कुछ देखा है (इसे महत्व दिया है) आप मत देखना ।

आंईं लज्ज कंदा इनजो, त आं पण लगो ए ।
आंके पण ए न छुटी, गिनी—त्रेई अस्सां के जे ॥ ८३

आप इससे शर्माते हैं । क्या आप को भी माया सारयुक्त लगने लगी । आपको भी इसने नहीं छोड़ा जो हमें वहा ले गई ।

हांणे हितरयूं गाल्यूं को करचो, को झोडो वधारचों ।
हे झोडो सभे त चुके, जें अस्सांजा लाड पारचो ॥ ८४

अब इतनी वातें क्यों करते हैं ? क्यों झगड़ा वढ़ा रखा है । यह झगड़े तो सब मिट जाते हैं जो हमारे लाड पूरे कर दें ।

तूं कित्तेई भगो न छुटे, अरसमें मूं साथ ।
लाड पाराइआं पांहिजा, पुजी पल्लो पांध ॥ ८५

आप अर्श में मेरे आगे कहीं भी भाग कर छूट नहीं सकते । वहाँ मैं अपने लाड आपका दामन पकड़ कर पूरे करा लूंगी ।

आंईं कितेई छुटी न सगे, आंऊं किएँ न छडियां आं ।
महामत चोए मूं दुलहा, पार सघरा लाड अस्सां ॥ ८५

आप कहीं भी छूट नहीं सकते, मैं कैसे भी आपको छोड़ूंगी नहीं। महामति कहती है हे मेरे दूल्हा। मेरे सभी लाड पूरे कीजिए।

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ ३४१ ॥

बाब जाहेर थिअणजा

प्रकरण जाहिर होने का

रूह अल्ला डिन्यूं निसानियूं, जे लिख्यूं मए फुरमान ।
से सभ मिडाए दाखला, करे डिनाऊं पेहेचान ॥ १

रूह अल्लाह श्री देवचन्द्र जी ने निशानिया दीं जो कुरान में लिखी हैं। उन सब के प्रमाण मिला कर पहचान करा दी।

न तां केर रांद केडी आए, हे रूहें को जांणे ।
डिअण अस्सांके सुखडा, तो उपाइए पांणे ॥ २

नहीं तो कौन खेल, कैसा खेल, रूहें क्या जाने ? हमें सुख देने के लिए आपने स्वयं ही उपजाई।

न कीं जाणूं रांद के, आं दिल उपाई पांण ।
डिअण अस्सांके सुखडा, हे दिलमें आएम जांण ॥ ३

हम खेल को कुछ नहीं समझते थे। आपने ही हमारे दिल में चाह पैदा की। हमको सुख देने की बात आपके दिल में आई।

हे जा हित रांदडी, केइआं अस्सां कारण ।
त अस्सां कीं पसाइए डुखडां, अस्सीं आयासी न्हारण ॥ ४

यह जो खेल यहाँ हमारे लिए किया अब हम उसे देखने आई हैं तो हमें दुःख कैसे दिखाते हैं।

केआंऊं वडी रांदडी, कागर मूक्यो कीं हित ।
डिअण साहेदी सभनी, लिख्या लखे भत्त ॥ ५

बड़ा खेल रचाकर यहाँ पत्र क्यों भेजा । हमें साक्षियाँ देने के लिए लाखों तरह से लिखा ।

पांण केआं को पधरो, उपटे बका दर ।
मूकियां रूह अरस जी, डेई संडेहो कुंजी कागर ॥ ६

आपने अखंड द्वार खोल कर अपने आप को प्रकट क्यों किया ? अर्श की रूह संदेशा, कुंजी और पत्र देकर भेजी ।

मांधा जणाया सभ के, डिअण के आकीन ।
ईंदो रब्ब आलम जो, सभ कंदो हिक्क दीन ॥ ७

पहले से ही विश्वास दिलाने के लिए सब को बताया कि समस्त संसार का स्वामी आएगा और संसार में एक धर्म की स्थापना करेगा ।

हिन जिमीमें पातसाई, कंदो चारीस साल ।
चई खूंटे पुंना कागर, जाहेर केयांऊं गाल ॥ ८

इस धरती पर चालीस वर्ष तक राज्य करेगा । चारों कोनों में पत्र पहुँच गए । बात जाहिर कर दी ।

अस्सी आया आंजे हुकमें, मंझ लैलत कदर ।
सो साल रख्या ढंकई, जाहेर केआं आखर ॥ ९

हम आपके हुक्म से लेलुतुलकदरि की रात में आए । सौ वर्ष तक हमें छिपाए रखा । अन्त में प्रकट कर दिया ।

हजार साल दुनीजा, सो हिकडो डींह रब्ब जो ।
से डींह रात बए गुजरया, केआं जाहेर रोज फरदो ॥ १०

दुनियाँ के हजार वर्ष और खुदा का एक दिन । सौ दिन रात दोनों बीत गए तो फरदा का दिन प्रकट किया ।

सा कुंजी कागर मूं डेई, उपटे बका दर ।
मूं गडचूं से गिनी आइस, रूहें छत्ते घर ॥ ११

वह कुंजी और ज्ञान मुझे दिया । उससे मैंने परमधाम के द्वारा खोल दिए । मुझे जो रूहें मिलीं उन्हें लेकर मैं छत्रसाल के घर आई ।

मूं धणी जाहेर थेओ, दीन दुनी सुरतान ।
गाल सुंई सभनी, हिंदू मुसलमान ॥ १२

मेरा धनी, दीन और दुनियाँ का सुलतान जाहिर हुआ । हिन्दू मुसलमान सबने इस बात को सुना !

वडी रांद डिखारिए, अस्सां वडचूं करे ।
त पस्सूं वडाई अँखिएं, जे सभ दुनियां सई फिरे ॥ १३

हमें बड़ा खेल दिखाया और संसार में बड़ा बनाया । अपनी बड़ाई आँखों से देखूँ जो सब दुनियाँ उसकी दुहाई देवें ।

पेरां कागर कै मूंके, आकीन डिअण के सभन ।
से निसान पुंना सभनी, केआं रांदमें रोंसन ॥ १४

पहले से ही पत्र (ज्ञान ग्रन्थ) भेजे सबको यकीन दिलाया । वे सब संकेत सबको पहुँचे । खेल में बात जाहिर हुई ।

हे रोसन सभे पस्सीं करे, अस्सां दावो थेओ तोसे ।
तांजे मुकाबिल न थिए, त आंऊं पल्लो पुजां के ॥ १५

उस प्रकाश को देख कर हमने आपसे दावा किया । यदि आप सामने नहीं आते तो मैं किसका दामन पकड़ूँ ।

तांजे मूं कूडी करिए, त हितरो कुजाडे के के ।
त हेडा कागर सभनी, कुरे के लिखे ॥ १६

कदाचित् मुझे झूठा करना था तो ऐसा क्यों किया ? आपने ऐसे पत्र सबको क्यों लिखे ?

जे मूं कूडी करिए, त भले कूडी कर ।
तो पांहिजो नालों डेई, को लिखे कागर ॥ १७

जो मुझे झूठी करना है तो भले कीजिए । परन्तु आपने अपना नाम देकर पत्र क्यों लिखा ?

पट अरस अजीम जो, मुराई कीं उघाडे ।
जे मूं कोठिए लिकंदी, त आंऊं को न अच्चां लिके ॥ १८

अर्श अजीम का पर्दा पहले से ही क्यों हटा दिया ? यदि आप मुझे छिपकर (अकेले) बुलाते तो मैं चुपचाप क्यों न चली आती ।

एहेडी हुई तो दिलमें, त मूंके जाहेर को केइए ।
इलम डेई मूं मंझ बेही, वेण वडा को कढे ॥ १९

ऐसी बात आपके दिल में थी तो मुझे प्रकट क्यों किया ? मुझे इल्म देकर, मेरे अन्दर बैठ कर बड़े वचन मुँह से क्यों निकाले ?

कोई तोके वेण विंगो चोए, त से आंऊं सहां कीं ।
मूं साहेदयूं सभ तोहिज्यूं, गिड्यूं मूर मुराई ॥ २०

कोई आपको टेढ़े वचन कहे तो मैं कैसे सहूं ? मैंने आरम्भ से ही सब आपकी गवाहियाँ ली हैं ।

डेई लुदंनी इलम, मूके परी परी समझाइए ।
को हेड्यूं गाल्यूं मूं मुहां, दुनिआंमें कराइए ॥ २१

मुझे लदुंनी इल्म देकर तरह-तरह से समझाया । ऐसी बड़ी बातें मेरे मुँह से क्यों निकलवाईं ?

सभ जोर पांहिजो डेई करे, मूके कंमर बंधाइए ।
बाकी रे कम थोरडे, मूके को अटकाइए ॥ २२

अपना सब जोर देकर मेरी कमर बंधाई । बाकी थोड़ा सा काम रह गया है । अब आप मुझे अटका क्यों रहे हैं ?

जे न थिए मुकाबिल मूंहसे, थिए कम हिन वेर।
त हिंनी तोहिजे कागरे, पांण के सच्चो चोंदा केर ॥ २३

यदि आप सामने नहीं आते कि यह काम इस बार हो जाए तो आपके इन कागजों (धर्म ग्रन्थों में कहे संकेतों) को देख कर हमें सच्चा कौन कहेगा ?

लाड अस्सांजा रांदसें, तो पूरा सभ केआं।
जाहेर तो मुकाबिलें, हितरे बंग रह्या ॥ २४

हमारे खेल के सभी लाड आपने पूर्ण किए। आपके सामने प्रकट होने में हो थोड़ी कसर बाकी रह गई।

मूं हिए सल्ले अगियूं गाल्यूं, से वलहा कुरो चुआं।
सुंदरबाई हल्ली विलखंदी, पण से कंने कीं न सुंआ ॥ २५

मेरे दिल में पहले की बातें दुःख देती हैं हे प्रियतम ! उन्हें कैसे कहूं ? सुन्दरबाई (श्री देवचन्द्र जी) विलखती चली गईं परन्तु आपने कानों से उनकी पुकार को क्यों न सुना ?

सुंदरबाई जे वखतमें, मायाएँ वडा डुख डिना।
भत्ती भत्ती विलखई, हे डिस्सी डुखडा किना ॥ २६

सुन्दरबाई के समय में माया ने बड़ा दुःख दिया। उन्होंने तरह-तरह से उन दुःखों को देख कर विलखती रहीं।

आंऊं पण हुइस डुखमें, पण न सांगाएम आंसे।
मूं बे खबरी न जाणयो, से तो हांणे हिए चढ़ाया जे ॥ २७

मैं भी उसी दुःख में थी परन्तु आपसे पहचान नहीं थी। मुझ बे-खबर ने तब न जाना परन्तु आपने अब उन दुःखों को मेरे मन पर अंकित कर दिया।

उलट्यो आं कागर में, लिख्यो सुंदरबाई जो डो ।
ते कागर न वांचओ, पण मूं पांहिजे कंने सुंओ ॥ २८

उल्टे आपने पत्र में सुन्दरबाई का दोष लिखा । वह पत्र मैंने पढ़ा तो नहीं परन्तु कानों से सुना है ।

से डुख सह्या अस्सां रांदमें, तांजे सेई डिए आखर ।
से पण चाडिआं सिर मत्थे, त सेहेंदो हिओ निखर ॥ २९

वे दुःख मैंने खेल में सहे । कदाचित् अन्त में भी वही देंगे । उनको भी सिर माथे चढ़ाया । कठोर दिल सब सह लेता है ।

ते लाएं घणों को चुआं, तोके सभ मालुम ।
से सभ तोहिजे हुकमें, अस्सां केआं कम ॥ ३०

इसलिए बहुत क्या कहूं । आपको सब मालूम ही है । हम जो भी काम करें वे सब आपके हुक्म से ही होंगे ।

जे सो भेरां आंऊं विसरई, त—पण आंहिजा सॆंण ।
पस्स तूं हिए पांहिजे, जे तो चेया वेण ॥ ३१

जो सौ बार भी मैं भूली तो भी आपकी सज्जनी हूं । आपने जिन वचनों कहा था उनका दिल में विचार कीजिए ।

हे पण कंदे गाल्यूं लाडज्यूं, तांजे विसरां थी ।
संग जांणी मूर जो, थिए थीं गुस्तांगी ॥ ३२

यह लाड की बातें करते कदाचित् भूल करती हूं । मूल का सम्बन्ध जान कर मुझसे गुस्ताखी हो जाती है ।

हांणे जे करिए हेतरी, जीं जेडियूं सभे पस्सन ।
कर सच्चा अच्ची मुकाबिलो, सुख थिए अस्सां रूहन ॥ ३३

अब इतना तो कीजिए कि सभी सखियां आपको देख लें । सामने आकर अपनी बात सच्ची कीजिए जिससे हम सब रूहों को सुख हो ।

हांणे निपट आए थोरडो, सुण कांध मूहंजी गाल ।
डेई दीदार गाल्यूं कर, मूं वर नूरजमाल ॥ ३४

अब थोड़ी सी रही है स्वामी ! मेरी बात सुनिए । दीदार देकर बातें कीजिए । हे नूरजमाल मेरे पति !

हांणे जे लाड अस्सां जा, ब्या सच्चा जे पारीने ।
मूं तेहेकीक आंभो तोहिजो, मूंके निरास न कंने ॥ ३५

अब जो हमारे और सच्चे लाड आपने पालन किए हैं तो मुझे निश्चित रूप से आपका भरोसा है कि आप मुझे निराश नहीं करेंगे ।

तूं पारीने उमेदूं वडियूं, अस्सां ज्यूं तेहेकीक ।
पण ते लांए थी विलखां, मत्थां आयो कौल नजीक ॥ ३६

आप हमारी बड़ी आशाएं पूरी करते हैं यह निश्चित है । पर इस एक के विलख रही हूं । ऊपर से वचन दिए की घड़ी निकट आ गई है ।

तूं थी धणी मुकाबिल, को रखे थोरडे बंग ।
मूं गिन्यूं साहिदयूं तोहिज्यूं, कै केअम दुनी से जंग ॥ ३७

हे धनी आप सामने आइये, थोड़ी बात की कमी क्यों रखते हैं । आपकी साहिबी लेकर मैंने दुनिया से कई युद्ध किए ।

पोरचां तां सभ ईंदा, सभ सच्ची चोंदा से ।
जे अस्सां बेठे अच्चे दुनिआं, जे कीं डिस्सूं रांद ए ॥ ३८

बाद में तो सब अएंगे । सब हमारी बात को सच्ची कहेंगे । हमारे यहां बैठे सब दुनिया आ जाए तो हम यह खेल भी देख लें ।

हितरो त आएम तेहेकीक, पोए मूं गाल सच्ची सभ चोंदा ।
अस्सां हल्ले पोरचां, हत्थडा घणूं गोहोंदा ॥ ३९

इतना तो निश्चित है कि मेरी बात सब सच्ची कहेंगे । हमारे जाने के बाद हाथ मल कर पछताएंगे ।

पण असल पांहिजी गिरोमें, जा रूहअल्ला चई ।
सकुमारबाई गडवी, अज्जां सा पण न्हार सई ॥ ४०

परन्तु हमारी असल गिरोह में से, जो रूह अल्लाह ने कहा था साकुमार वाई कहीं थी, वह भी अभी नहीं आई है ।

न तां कम सभ पूरो केओ, अने करिए पण थो ।
कंने पण तेहेकीक, से पूरो आंझो आए तो ॥ ४१

नहीं तो काम सब पूरे किए और करते भी हैं । यह भी निश्चित करेंगे यह आप पर पूर्ण विश्वास है ।

महामत चोए मूं वलहा, तोसे करिआं लाड़ कोड ।
केअम गुस्तांगी रांदमें, जे तो बंधाई होड ॥ ४२

महामति कहतीं हैं हे दुल्हा ! आपसे लाड प्यार करती हूँ । खेल में गुस्ताखी भी तब की जो आपने होड़ बंधाई ।

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ ३८३ ॥

॥ मारकंडजो द्रष्टांत ॥

मारकंडेय का दृष्टान्त

चई सुंदरबाई अस्सां के, मारकंड जी हकीकत ।
ईं दर थी आंके खोलिआं, आंजी पण ईं वीतक ॥ १

सुन्दरबाई ने हमको मारकडेय की हकीकत कही थी । इस दर से (उदाहरण से) हो कर तुम्हें समझाती हूँ । तुम्हारी भी यही बीती हैं ।

निमूनो मारकंड जो, चयो सुंदरबाई भलो भत्त ।
सुकदेव आंदो आं कारण, हे जे पस्सो था हित ॥ २

मारकंडेय का उदाहरण सुन्दरवाई ने वड़ी अच्छी तरह वताया । शुकदेव मुनि ने आपके लिए कहा जो आप यहाँ देख रहे हैं ।

जे कीं गुजर्यो मारकंड के, विच्च जिमी हिन अभ ।
से गुझ दिलजो निद्रमें, डिठो नारायणजी सभ ॥ ३

जो कुछ मारकंडेय पर इस ज़मीन और आसमान के बीच गुज़री वह उसके अन्दर के गुझ (भेद) उसकी निद्रा में नारायण जी ने सब देखे ।

डेखारी नारायण जी, माया मारकंड के ।
जे कीं डिठो रिखी निद्रमें, सभ चई नारायण जी से ॥ ४

नारायण जी ने मारकंडेय को माया दिखाई । जो कुछ भी ऋषि ने नींद में देखा वह सब नारायण जी से कहा ।

अस्सी पण बेठा आं अगिआं, निद्रडो डिनी आं अस्सा ।
हे जा डिस्सो था निद्रमें, से कुरो खबर न्हाए आं ॥ ५

हम भी आपके आगे बैठे हैं । आपने हमें नींद दे दी । यह जो हम खेल में देख रहे हैं वह क्या आपको खबर नहीं है ।

धणी बेठा आयो विच्चमें, सभ नजरमें पाए ।
असां दिलजी को न कर्यो, आंजे दिलमें तां आए ॥ ६

स्वामी आप बीच में, सब को नजर में ले कर बैठे हो । हमारे दिल की बात क्यों नही करते, आपके दिल में तो है । (पूरी करने की इच्छा तो है)

अस्सां दिलज्यूं गालियूं, से कुरो आं डिठ्यूं न्हाए ।
से कीं आंई सहो था, जे विलखण थिए अस्सांए ॥ ७

हमारे दिल की बातें क्या आप जानते नहीं है । जो हम विलख रहे हैं वह आप कैसे सहन करते हैं ?

आंई बेठा सुणो गालियूं, अस्सां के को विधें दिल ल्हाए ।
को न करिए मूं दिलजी, आंजे दिलमें केही आए ॥ ८

आप बैठे बातें सुनते हैं । हमें किस तरह से दिल से उतार दिया है । मेरे दिल की क्यों नहीं करते । आपके दिल में क्या है ?

मारकंड माया मंझां, जडे किएं न निकरी सगे।
तडे गिडाई रिखी के पांणमें, मंझ पेही मारकंड जें॥ ६

मारकंडेय जब माया में से किसी तरह भी निकल नहीं सके तो नारायण जी ने मारकंडेय के भीतर पैठ कर ऋषि को अपने में मिला लिया।

अस्सां जा डिठी रांदडो, आंईं पस्सी तेह्जो सूल।
मूके अस्सां के फुरमान, हत्थ पांहिजे नूरी रसूल॥ १०

हमने जो खेल देखा आपने उसका दर्द महसूस करके अपने नूरी रसूल के हाथ फर्मान भेजा।

लखे भत्ते लिखिआं, कै इसारतें रमूजें।
सभ हकीकत मूकिआं, भाइए मान किएं समझे॥ ११

लाखों तरह से कई संकेत और गूढ़ बातें लिखीं। सब हकीकत भेजी कि शायद उन्हें मान कर समझ लें।

पोए मूकिआं रूह पांहिजी, जा अस्सांजी सिरदार।
कुंजी आंणे अरस जो, खोल्याई बका द्वार॥ १२

फिर अपनी रूह भेजी जो हमारी सिरदार है। वे अर्श की कुंजी लाई। अखंड घर के द्वार खोले।

जे निसानियूं फुरमानमें, से डिनाई सभ निसान।
सुंदरबाई कै भत्तें, करे डिनाऊं पेहेचान॥ १३

जो संकेत कुरान में हैं उन सब का हवाला दिया। सुन्दरबाई ने कई तरह से पहचान करा दी।

ईं चुआं आंऊं केतरो, अलेखे आईन।
बिनी कोल मिडी करे, डिनाऊं द्रढ आकीन॥ १४

ऐसे मैं कितना कहूँ? वे हिसाब ब्यान हैं। दोनों के कौल, (वेद कतेब के) मिला कर दृढ़ विश्वास दिया।

दिलडा अस्सां जा जागया, पण पुज्जे न रूह सी ।
से हुकम हत्थ आंहिजे, हल्ले न अस्सां जो कीं ॥ १५

दिल हमारा जागा परन्तु रूह तक ज्ञान न पहुँचा । वह हुक्म आपके हाथ में है । हमारा कुछ नहीं चलता ।

मारकंड जे दिलजी, सभ नारायण जी चई ।
जडे याद डिनी मारकंड के, तडे हिक दम निद्र न रई ॥ १६

मारकंडेय के दिल की सब नारायण जी ने कही । जब मारकंडेय को याद दिला दी तो एक दम नींद न रही ।

उडी वेई मारकंड के, निद्रडी कंदे विचार ।
तोहे सुध अस्सां न थिए, जे डिनाऊं उपटे द्वार ॥ १७

मारकंडेय की नीद विचार करते उड़ गई । हमें तो तब भी खबर नहीं होती जब आपने किवाड़ भी खोल दिए ।

तो डिसंदे आऊ विलखां, सभ सुध डिनी आं हित ।
वलहा याद अज्जां को न अच्चे, को डिना हिअडो सखत ॥ १८

आपके देखते मैं विलखती हूँ इस बात की सब खबर आपने हमें यहाँ दी । हे प्रिय ! अब भी याद क्यों नहीं आते । हमें ऐसा कठोर दिल क्यों दिया ?

धणी मूंहजे धामजा, अंई चओ करिआं तीं ।
अस्सां के हिन रांदमें, मुझाए रख्याँ कीं ॥ १९

मेरे धाम के धनी जैसे आप कहें वैसे करूँ । हमें इस खेल में कैसे उलझा रखा है ।

गाल मिठी वलहा, सुणाए डेखार धाम ।
दीदार डेअम पांहिजो, मूं अंगडे थिए आराम ॥ २०

प्रियतम मीठी बात सुना कर परमधाम दिखाइये । अपना दीदार दीजिए । मेंरे अंगों को चैन मिले ।

आंऊं चुआं बे केहके, तूं मूजो धणी आईए ।
तूं सुणी ईं को करिए, ईं वार वार को चाइए ॥ २१

मैं दूसरे किसको कहूँ । आप मेरे स्वामी हैं । आप सुन कर भी ऐसे क्यों करते है । इस तरह वार-बार क्यों कहलवा रहे हैं ।

सुंदरबाईएं जे चयो, मूं दिल पण डिनी गुहाए ।
सभ गाल्यूं अस्सां जे दिलज्यूं, धणी तो खबर सभ आए ॥२२

सुन्दरबाई ने जो कही मेरे दिल ने भी गवाही दी । हमारे दिल की सब बातों की हे स्वामी ! आपको खबर है ।

हे गालियूं आंई डिस्सी करे, कीं मांठ करे रहां ।
अरस संग सारे करे, आंई विछोहा कीं सहां ॥ २३

यह सब बातें देख कर आप चुप कैसे रहते हैं ? परमधाम का सम्बन्ध बना कर आप कैसे सहते हैं ?

अरस अस्सांके विसरचो, अने विसरचा तो कदम ।
पण तो को संग विसारियो, कीं विसारिआं खसम ॥ २४

हमें परमधाम भूल गया और आपके चरण भी भूल गए । परन्तु आपने क्यों सम्बन्ध भुलाया । स्वामी कैसे भूल गए ?

दिलडो अरस संग जो, अस्सां मत्थां कीं लाथां ।
पुकारींदे न न्हारिओ, अस्सां विच्च हेडी को पातां ॥ २५

हमारे दिल से अर्श सम्बन्ध की याद एक दम कैसे उतार दी । पुकारते हुए भी देखते नहीं है हमारे अपने बीच इतना अन्तर क्यों डाल दिया ?

किते वेयूं हो गालियूं, जे अरस विच्च केयूं ।
तांजे अस्सीं विसरचा, आंके विसरी की वेयूं ॥ २६

कहाँ गईं वे बातें जो आपने अर्श में कीं थीं । कदाचित् हम भूल भी गए तो भी आपने हमें कैसे भुला दिया ?

करिआं गुस्तांगी वडियूं, पण हिअडो चायो तोहिजो चए ।
जे मूं जगाए सामों न्हारिओ, त मूं रूहडी कीं रए ॥ २७

बहुत गुस्ताखी करती हूँ परन्तु दिल आपका कहलाया ही कह रहा है । यदि आप मुझे जगा कर मेरे सामने देखें तो मेरी रूह कैसे रहे !

चरई थी चुआं थी, जिन डुखे जो मूंहसे ।
तो डिखारयो हिक्क तोह के, आंऊं चुआं बे केहके ॥ २८

दीवानो की सी बातें करती हूँ आप मुझसे दुखी न होना । आपने एक अपने आप को ही दिखाया है । मैं दूसरे किसको कहूं ?

चंगी भली आइआं, चरई ते चुआं ।
भुले चुके वेण निकरे, जिन डुखे जो मुआं ॥ २९

अच्छी भली हूं दिवानी तो तभी कहतो हूं कि भूले चूके जो वचन मेरे मुंह से निकलें तो आप मुझसे अप्रसन्न न हों ।

ईं करे विहारिआं, हितरी पण न सहां ।
त कीं घुरंदिस लाडडा, कीं पारीने अस्सां ॥ ३०

ऐसे करके बिठा दी । अब इतनी भी नहीं सहते हो ? तो कैसे मैं लाड मांगूं और कैसे आप उन्हें पूरा करेंगे !

बिआ लाड मूं विसरया, पस्सी तोहिजो हाल ।
न कीं डिए दीदार, न कीं सुणाइए गाल ॥ ३१

आपका ऐसा हाल देख कर लाड भूल गई । न तो दर्शन देते हो न कोई बात ही सुनाते हो ।

तोके आंऊं न पस्सां, न कीं कंने सुणिआं ।
हितरो पण न थेअम, त बिआ केरा लाड मंगां ॥ ३२

आपको मैं देखती नहीं हूं न आपकी बात कानों से सुनती हूं । इतना भी न हुआ तो दूसरे लाड कैसे माँगूं ?

मंगां जाणी संगडों, जे तो डेखारचो ।
हांणे विच्च बेही सभ जगाइए, हांणे कारचूं को कारचो ॥ ३३

आपने जो दिखाया है उसे सम्बन्ध जान के माँगती हूँ। अब बीच में बैठ कर सब को जगाइये । इतनी विनती किसलिए कराते हैं ?

मंगां थी पण द्रजंदी, मूँ मत्थां हेडी थेई ।
हे सगाई निसबत, आंके विसरी कीं वेई ॥ ३४

माँगती हुई भी डरती हूँ मुझ पर तो ऐसी बीती है। यह सगाई और ऐसा सम्बन्ध आपको कैसे भूल गया ?

मूके निद्रडी विसारिओ, पण तूं कीं विसारिए ।
तो दिल से को उतारियूं, ही वार वार को चाइए ॥ ३५

मुझे तो नींद ने भुला दिया परन्तु आप कैसे भूल गए ? आपने दिल से क्यों उतार दिया । इस तरह बार-बार क्यों कहला रहे हैं ?

हेडी घुंडी दिलमें, कीं पाए बेठो पांण ।
आंऊं कडीं न रहां दम तो रे, हेडी को करे मूंसे हांण ॥ ३६

ऐसी गांठ आप दिल में कैसे डाल कर बैठ गए ! मैं कभी आपके बिना एक पल भी नहीं रहती थी । अब मुझसे ऐसी क्यों करते हैं ?

मूं मत्थां हेडी कीं केइए, केहडो आएम डो ।
जे गाल होए आं दिलमें, से मूं मांधा को न कढो ॥ ३७

मुझसे ऐसी क्यों की । मेरा क्या दोष है ? जो भी बात आपके दिल में है मेरे सामने क्यों नहीं कह देते ?

अगे सुंदरबाई हल्लई, रोंदी कर—करंदी ।
हांणे मूंसे ईं को करचो, करे हेडी मेहेरबानगी ॥ ३८

पहले ही सुन्दरबाई रोती कलपती चली गई ऐसी मेहरबानी करके आप मुझ से भी वैसा ही क्यों करते हैं ?

आधा डिखारई रांद रातमें, हांणे जाहेर केआं फजर ।
हे गालियूं केयूं सभ मेहेरज्यूं, सा लाथाऊं की नजर ॥३९

पहले खेल रात में दिखाया अब दिन प्रकट किया। ऐसी मेहर की सब बातें करके अब नजर से दूर कैसे कर दिया ?

हांणे जीं जांणे तीं मूं कर, पण बदल मूहजो हाल ।
तीं कर जीं पस्सां तोहके, जीं सुणिआं मिठडी गाल ॥ ४०

अब जैसा जानों वैसा मुझसे करो परन्तु मेरा हाल बदल दो। ऐसा कुछ करो कि आपको देखूं जिससे आपकी मीठी बातें सुनूं।

केडा विजां के के चुआं, बिओ को न डिखारे हंद ।
तूं बेठो मूं भर में, आऊं केडा विजां करे पंध ॥ ४१

किधर जाऊँ ? किसको कहूं ? दूसरा कोई ठिकाना नहीं दिखाया। आप मेरे अति निकट (बगल में बैठे) हैं। राह चल कर कहां जाऊं।

वट बेठा न सुणो, न कीं न्हारचो नेणन ।
न पुज्जी सगां पांध के, न की सुणिआं कनन ॥ ४२

पास बैठ कर भी सुन नहीं सकती, न ही आँखों से देख ही सकती हूँ। न तो दामन ही पकड़ सकती हूँ, न कुछ कानो से ही सुनती हूं।

मूजा पुज्जे न हत्थ अंगड़ा, त रहां कींअ करे ।
कोठाइए कागर मूकी करे, कीं बेहां धीरज धरे ॥ ४३

मेरा हाथ आपके अंग को छू नहीं सकता तो कैसे रह सकती हूं। पत्र भेज कर बुलवाई अब धीरज धर के कैसे बैठूं ?

पेरो पांणे जांणी हिन के, हाणे करिए हल्लणजी वेर ।
पुकारींदे न डेओ, पस्सण पांहिजा पेर ॥ ४४

पहले आपने ही इन्हें अपनी पहचान दी अब चलने का समय बताते हैं। पुकारने पर भी अपने चरण देखने नहीं देते।

गाल निपट आए थोरडी, हेडो भारी को केइए ।
सभनी गाले समरथ, पण दिल घुंडी केई रखिए ॥ ४५

वात तो विल्कुल थोड़ी है, इतनी भारी क्यों करते हैं ? आप सब बातों में समर्थ हैं, परन्तु दिल में कोई गांठ रखी है ।

आंई डुखोजा दिलसें, जडे चुआं घुंडी जो वेण ।
पण कीं करिआं कीं चुआं, मूं अडां न्हारयो न खणी नेण ॥४६

जब मैं घुंडी की वात कहती हूँ आप को दिल में दुःख होता होगा परन्तु कैसे करूँ, कैसे कहूँ जब आप मेरी ओर आँख उठाकर भी नहीं देखते ।

जा पर चओ सा करिआं तूं पांण कराइए थो ।
हे पण तूंहीं चाइए, मूं मत्थे कीं अच्चे डो ॥ ४७

जिस तरह कहो वैसा ही करूँ आप स्वयं ही कराते हैं । यह भी आप ही कहलाते हैं मेरे ऊपर दोष कैसे आता है ?

हेडी रांद डिखारई, मए वर कोडी लख हजार ।
कीं करिआं कीं चुआं, मूजा धनी काएम भरतार ॥ ४८

ऐसा खेल दिखाया जिसमें लाखों करोड़ों दाव-पेंच (वलाके) हैं । क्या करूँ ? कैसे कहूँ ? मेरे स्वामी, मेरे अविनाशी पति !

जे अपार वराका तोहिजा, मूं हिकडो गँठ न छुटे ।
लखे भत्ते न्हारिआं, तो रे जोडी न जुडे ॥ ४९

जो आपके अपार बल पेंच (वलाके) हैं तो मुझसे तो एक भी गांठ नहीं छूटती । लाखों तरह से देखा आपके विना वनाए कोई वात नहीं बनती ।

जे वराका लाहिए, त आंऊं बेठिस तरे कदम ।
को न वराको कित्तईं, ईं आएम मूजा खसम ॥ ५०

जो बल-पेच हटा दें तो मैं आपके चरणों के नीचे बैठी हूँ । कहीं भी कोई उलझन नहीं है । मेरे प्रीतम ऐसे हैं ।

चुआं रुआं के न्हारिआं, बेठो आइए मूं वट ।
लाहिए दममें तूंहीं धणी, अंखे कंने जा पट ॥ ५१

कहूँ, रोऊँ या देखूं आप मेरे पास बैठे हैं । आपने पल भर में मेरी आँखों और कानों के पर्दे खोल दिए ।

सो वराके हिकडी, गाल ईं आइए ।
मूजो हल्ले न तिर जेतरो, हे पण चुआं थी तोहिजे चाइए॥५२

सौ बल-पेचों (वलाकों) की एक ही बात है कि मेरा यहां तिल जितना भी बस नहीं चलता । यह भी आप की कहलाई कह रही हूँ ।

तूं बंधे तूं छुडाइए, तित बी कांए न गाल ।
जीं फिराइए तीं फिरे, कोल फेल जे हाल ॥ ५३

आप ही बाँधते आप ही छुड़ाते हैं यहाँ दूसरी कोई बात नहीं है । जैसे आप फिराएँ वैसे ही मेरे कौल, फैल और हाल फिर जाएंगे ।

हांणे मोंह थीं मंगां मूं धणी, मूजा सुणज सभ स्वाल ।
महामत चोए मूं लाडडा, धणी पार तूं नूरजमाल ॥ ५४

अब मुँह से माँगती हूँ हे धनी ! मेरी सब प्रार्थनाएं सुनिए । महामति कहती हैं मेरे नूर जमाल स्वामी मेरे लाड पालन कीजिए ।

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ४३७ ॥

॥ आसिकजा गुनाह ॥

आशिक के गुनाह

सुणो रूहें अरस जी, जा पांणमें बीती आए ।
जेहेडी लटी पांण केई, एहेडी करे न बी कांए ॥ १

हे अर्श की रूहो ! सुनो जो अपने में बीती । जैसी उल्टी बात हमसे हुई वैसी और कोई न करता ।

चुआं तेहजो बेवरो, सुणजा कन डेई ।
डिठम जे सहूर से, सहूर आंईं पण करेजा सेई ॥ २

उसका ब्योरा कहती हूँ कान दे कर सुनो । मैंने विवेक से उसे देखा । आप भी शऊर से उसे समझो ।

पोए जा दिल अच्चे पांहिजे, पांण करियू सेई ।
भूली रोए तेहेकीक, हत्थडा सत्थें डेई ॥ ३

पीछे जो आपके दिल में आवे आप वही कीजिए । भूलने वाली निश्चित रुप से सिर पर हाथ मार कर रोती है ।

ते लाएँ कीं भूल जे, आए हत्थ अवसर ।
पोए को पछताए जे, पेरो हल्लजे न न्हारे नजर ॥ ४

इसलिए हाथ में अवसर आया है तो भूलना क्यों ? पहले आँखों से देख कर चलें तो पीछे पछताना क्यों पड़े ?

गिरो पांहिजी आसिक, चांऊं मंझ हिंनी ।
जा पर पस्सां पांहिजी, त अस्सां हे अकल के डिंनी ॥ ५

अपनी गिरोह आशिकों की इनमें कहलाती है । जो अपनी ओर देखती हूँ तो विचार होता है कि यह अक्ल हमें किसने दी ?

खबर गिनी धणीअजी, डिंनी लोकन के ।
आसिक के हे उलटी, पांण के लगी जे ॥ ६

धनी की खबर पा कर लोगों को दी । आशिक के लिए यह उल्टी बात है जो हमे लग गई है ।

मिठो गुझ मासूक जो, आसिक केके न चोए ।
पडोसन पण न सुणे, ईं आसिक गुझी रोए ॥ ७

माशूक की मीठी गुझ बातें आशिक कभी किसी से नहीं कहती । पड़ोसी भी न सुने आशिक इस प्रकार गुझ रोती है ।

आसिक चोजे तिनके, थिए पिरी उत्तां कुरबान ।
सए भत्ते मासूक जा, सुख गुझां गिने पांण ॥ ८

आशिक उनको कहा जाए जो प्रियतम पर कुर्बान हो जाएं । सौ तरह से माशूक के गुझ सुख छिप कर लेती है !

जे कोडी पोन कसाला, त करे न केके जांण ।
गिनी काएम सुख धणीअजा, बोले ना के सांण ॥ ९

कदाचित् करोड़ों कष्ट आएं तो भी किसी को खबर नहीं होने देती । स्वामी के अखंड सुख पाकर किसी से बात नहीं करती ।

गिनी गुझां सुख पिरनजा, रहे मंझ सैअन ।
पांण गुझ मासूक जो, न बुझाए बिअन ॥ १०

गुझ सुख प्रीतम के पाकर सखियों में रहती है । आप माशूक का गुझ सुख किसी को बताती नहीं है ।

तिनी के पण न चोए, जे हिन सुखज्यूं आईंन ।
त चुआं कुजाडो तिनके, जे बाहेर धांऊं पाईन ॥ ११

उनको भी न कहे जो उस सुख के लेने वाले हैं । तो उनको क्या कहा जाए जो बाहर दूसरों में पुकार करते हैं।

मासूक कोठे पांण के, पाण भायूं हित रहूं ।
गिनी सुख मासूक जो, दुनिआं के चऊं ॥ १२

माशूक हमें बुलाते हैं हम चाहते हैं यहीं रहें । माशूक के गुझ सुखले कर दुनिया को बताते हैं ।

कडी आसिक हेडी न करे, कांध कोठींदे पांहीं रहे ।
सुख छडे बका धणीअजा, डुख कुफरमें पए ॥ १३

कभी आशिक इस तरह नहीं करती कि स्वामी के बुलाने पर पीछे रहें । अखंड परमधाम के सुख छोड़ कर दुख और कुफ्र में पड़ जाए।

जे के वलहो होए मासूक, तेहजा वलहा लगे वेण ।
से कीं डिए डुभणे, जे वलहो होए सेण ॥ १४

जिनको माशूक प्यारा होता है उनको उसके वचन भी प्यारे लगते हैं। वह उन्हें अपने दुश्मनों को क्यों देगी जिनको साजन से प्रेम होगा ।

आसिक कडी न करे, हेडी अवरी गाल ।
चोंणों गुभ्क लोकन के, पाए बिछोडो नूरजमाल ॥१५

आशिक ऐसी उलटी बात कभी नहीं करते। लोगों को गुभ्क सुख बताने में अपने नूर जमाल से विछुड़ जाए ।

आसिक गुभ्क मासूक जो, गिंने थी रोए रोए ।
डिस्तों ऊंधो अकल आसिकजी, विंजी बिअनके चोए ॥ १६

आशिक महबूब के गुभ्क सुख रो रो कर लेती है। आशिक की बुद्धि देखो जाकर दूसरों को कहती फिरती है ।

हे निपट निवरचू गालियूं, थिए थ्यूं पांण हत्थां ।
जेडी थेई रांदमें पांण से, हेडी थेई न के मत्थां ॥ १७

यह निपट निर्लज्जता पूर्ण बातें हमारे अपने हाथों हो रही हैं। जैसी हमसे इस खेल में हुई कभी किसी से नहीं हुई ।

आसिक चाए पांण के, हेडी करे न कोए ।
कोठी न वंजे कांधजी, सा निखर भाएजा जोए ॥ १८

अपने आप को आशिक कहला कर ऐसी कभी कोई नहीं करता। प्रीतम के वुलाए जो जाती नहीं है उस स्त्री को वेइतबार जानो ।

गुभ्क पिरी जो आसिक; कडी न केके चोए ।
जे पोन कसाला कोडई, त वर मंझाई रोए ॥ १९

प्रीतम का गुभ्क आशिक कभी किसी को नहीं कहती। जो करोड़ों दुःख भी पड़े तो बाहर अन्दर रोती है ।

हिक गुझ केओसी पधरो, बिओ कोठींदे न वेयूं ।
हेडी हिक्कडी कोए न करे, से पांण हत्थां बए थेयूं ॥ २०

एक तो गुझ जाहिर किया दूसरे बुलाने से गए नहीं । ऐसी एक भी कोई नहीं करता अपने हाथ से तो दोनों हुईं ।

हेडी पांण के न घटे, पांण चायूं अरसज्यूं ।
जे सऊर करे डिठम, त हेडो जुलम करिए थ्यूं ॥ २१

ऐसी तो हमें नहीं चाहिए थी । हम तो अर्श की कहलाती हैं । जो शऊर करके देखा तो हमसे बड़ा अंधेर हुआ ।

पांण चऊं कूडी दुनिआं, ते में हेडी केईं न के ।
उलटियूं बे अकल्यूं, थेयूं पांण सच्चीअ से ॥ २२

हम जिसे झूठी दुनिया कहते हैं उनमें भी ऐसी कोई नहीं करता । उल्टी बेअक्लों की सी बातें जैसी हम सच्चों से हुई ।

जडे गुणा डिठम पांहिजा, द्रिनिस घणूं हिकार ।
तरसी न्हारयम हक अडां, किअम पांण पुकार ॥ २३

जब मैंने अपने गुनाह देखे तो एक बार तो बहुत डर गई, डर कर प्रीतम की ओर देख कर पुकार उठी ।

गुणा डिठम पांहिजा, धणी जा आसान ।
उमर वेई धांऊं पांईदे, जफा डिठम जांण ॥ २४

अपने गुनाह देखे और स्वामी के एहसान, सारी उम्र पुकारने में बीत गई । शरीर को नष्ट होता देखा ।

किने न केओ कडई, हेडो अधम कम ।
डिस्सी डोह पांहिजो, फिरी करियूं कीं जुलम ॥ २५

कभी भी किसी ने ऐसे अधम काम नहीं किए । अपने दोष देख कर फिर भी जुल्म कैसे किए जा रही हूं ।

डाई जोए कीं करे, डिस्सी अँखिएँ डोह ।
जीं जांणे तीं करे, मत्थे हुकम धणी जो ॥ २६

सयानी स्त्री आँखों देख कर गुनाह नहीं करती । धनी के हुक्म पर जैसे भी हो चलती है ।

पांण फिरी जा न्हारिआं, त गाल थेई हत्थ धणी ।
हित बे केहजो न हल्ले, जे करे दानाई घणी ॥ २७

हमने फिर से जो देखा तो बात धनी के हाथ में है। यहाँ दूसरा किसी का चलता नहीं है चाहे कितनी भी सयानप दिखा ले ।

न्हारचम इलम धणीअ जो, सभ हुकमें केयो ख्याल ।
बिओ कोए न कितईं, रे हुकम नूरजमाल ॥ २८

धनी के इल्म से देखा तो यह सब तमाशा स्वामी के हुक्म से हुआ है । बिना नूर जमाल के हुक्म के दूसरा कोई कहीं नहीं हैं ।

गुणा डिठम पांहिजा, जडे न्हारचम दिल धरे ।
हे पण गुणो खुदीअ जो, जे फिरी न्हारचम सऊर करे ॥ २९

जब दिल में विचारा तो अपना गुनाह देखा । जो विवेक से देखा तो यह भी खुदी का गुनाह पाया ।

गुणा डिठम पांहिजा, जडे थेअम जांण ।
गुणा डिठम से पण खुदी, तरसीस पस्सी पांण ॥ ३०

जब खबर हुई तो अपने गुनाह देखे । गुनाह देखे यह भी खुदी है यह देखकर मैं बिलख उठी ।

गुणा केअम अजांणमें, गुणा डिठम मए अजांण ।
दम न चुरे रे हुकम, जडे धणी पूरी डिनी पेहेचान ॥ ३१

गुनाह अनजान पन में किए गुनाह देखे सो भी अज्ञान हैं । जब धनी पूरी पहचान देदें तो समझ में आ जाता है कि उनके हुक्म के बिना दम नहीं मारी जाती ।

जांण गिडम से पण खुदी, आंऊं जुदी थिआं हिनसे ।
जुदी रहां त पण खुदी, खुदी किएं न निकरे हिनमें ।। ३२

पहचान गई यह भी खुदी है । मैं इससे दूर हो जाऊं । जुदा रहूँ वह भी अहंकार है । यह खुदी कैसे भी निकल नहीं सकती ।

महामत चोए हे मोमिनों, कोई कितईं न धणी रे ।
फिरी फिरी लख भेरां, न्हारचम सऊर करे ।। ३३

महामति कहती हैं हे मोमिनो कोई कहीं भी धनी के विना नहीं है । मैंने फिर फिर लाख बार शऊर करके देखा ।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ४७०।।

खुदीजी पेहेचान

खुदी की पहचान

लखे भत्ते न्हारचम, खुदी वंजे न किएं केईं ।
हे मूर मंझां कीं निकरे, जा कांधे डेखारई बेई ।। १

लाखों तरह देखा, खुदी किसी भी तरह जाती नहीं है यह मूल से कैसे निकले जो स्वामी ने दूसरी (माया) हमें दिखा दी ।

जे घुरां इसक, त हित पण पस्सां पांण ।
हे पण खुदी डिठम, जडे थेअम हक पेहेचान ।। २

जो इश्क माँगू तो वहाँ भी अपको ही देखती हूँ । इसमें भी खुदी देखी जब धनीं की पहचान हो गई ।

हक पेहेचान के के थेईं, हित बिओ न कोए आए ।
जे कढे बारीकियूं खुदियूं, डे थो हक सांजाए ।। ३

हक की पहचान किसको हुई । वहाँ कोई दूसरा है ही नहीं । खुदी के सूक्ष्म रूप को निकालना तभी होता है जब परमात्मा पूर्ण पहचान दे दें ।

तन पांहिजा अरसमें, से तां सुतां निद्रमें ।
जागे थो हिक्क खावंद, ही निद्रडी आंदी जे ॥ ४

हमारे तन अर्श में हैं वे तो नींद में सोए हैं । जाग तो एक स्वामी ही रहे हैं जिन्होंने यह नींद दी ।

डेई रूहें के निद्रडी, डिखारचांऊं हे रांद ।
हे केर डिस्से थो रांद के, हित को आए हुकम रे कांध ॥ ५

रूहों को नींद दे कर खेल दिखाया हैं । इस खेल को कौन देख रही हैं । कोई आपके हुक्म के बिना कहीं है ?

पांण तां सुत्यूं अरस में, तरे धणी कदम ।
जे रमे रमाडे रांदमें, बिओ कोए आय रे हुकम ॥ ६

हम तो अर्श में अपने धनी के चरणो तले सोई हैं । खेल में जो खेलता या खिलाता है वह धनी के हुक्म के बिना कोई नहीं है ।

धणी या रांद विच्चमें, पडदो तो वजूद ।
पुठ डेई हक के ही पस्सो, हे जो न्हाए कीं नाबूद ॥ ७

धनी और खेल के बीच हमारा शरीर ही पर्दा है । अपने स्वामी की पीठ देकर इस नाबूद (नश्वर) दुनिया को देख रहे हैं ।

हित हुकम हिक्कडो हकजो, उनहीं हकजो इलम ।
हुकम इलम या रांद के, पस्सो विठियूं तरे कदम ॥ ८

यहाँ एक हक का हुक्म है । उसी हक का ही इल्म है । हुक्म इल्म या खेल को उनके चरणो के नीचे बैठी देख रही हैं ।

चोए इलम कुंजी अंईं, पट पण आयो अंईं ।
अकल आंजी अगरे, पस्सो उलटी या सई ॥ ९

इल्म कहता है कि कुंजी आप ही है और पर्दा भी आप हैं । अक्ल भी आपकी ही अधिक है । उल्टे देखें या सीधे । (आप के बिना कुछ नहीं)

हे रांद हुकम इलमजो, पांण के सुतडे डिखारे ।
खिल्लण विच अरस जे, पांण के रांदच्यू थो कारे ॥ १०

यह हुक्म और इल्म का खेल हमें सोए हुए दिखाया जा रहा है । अर्श में हँसने के लिए हमें यह खेल खिला रहे हैं ।

हित बेओ कोए न कितईं, सभ डिस्से हुकम इलम ।
जे उडे नाबूद हुकमें, त पस्सो बिठचूं तरे कदम ॥ ११

यह दूसरा कोई कहीं नहीं है सब हुक्म और इल्म ही दिखाई देता है । जो यह नाबूद (माया) हुक्म से उड़ जाए तो मैं अपने आप को आपके चरणों तले बैठा देखूं ।

धणी द्वार डिनो अस्सां हत्थमें, बिओ इलम डिनाऊं जांण ।
त कीं सहूं आडो पट, को न उपटचों पांण ॥ १२

हे स्वामी ! आपने द्वार हमारे हाथ दिया दूसरे इलम ने पहचान दी । तो अब रुकावट या पर्दा कैसे सहूँ ? हम द्वार खोल क्यों न दें ।

जे रे हुकम पट खोलिआं, त द्रज्जां खुदी जे गुने ।
न तां कुंजी डिनाऊं हत्थ आसिक, सा मासूक विछोडो कीं सहे। १३

यदि हुक्म के बिना द्वार खोलती हूँ तो अहं के गुनाह से डरती हूँ । नहीं तो जब आशिक के हाथ में कुंजी दे दी तो माशूक का वियोग कैसे सहे ।

जे होयम जरो इसक, त न पस्सां खुदी हुकम ।
पण हिक न्हायम इसक, बिओ पस्सां आडो हुकम इलम ॥ १४

यदि जरा भी प्रेम होता तो खुदी या हुक्म की ओर कदापि न देखती । परन्तु एक इश्क ही तो नहीं है और दूसरे हुक्म इल्म की रुकावट देखती हूं ।

न तां जे दर उपटिआं, पस्सण धणी रेहेमान ।
कीं न्हारिआं वाट हुकमजी, धणी डिनी कुंजी पेहेचान ॥ १५

नहीं तो जब कृपालु स्वामी को देखने के लिए द्वार खोले हैं तो हुक्म की राह कैसे देखूं ! फिर स्वामी ने कुंजी और पहचान भी दे दी हैं ।

सुकेमें डिआं कीं डुब्बियूं, जे अच्चिम इसक ।
त हुकम खुदी न्हाए गुणो, दर दंम न रखे बेसक ॥ १६

यदि इश्क आ जाए तो सूखे में डुबकियाँ क्यों खाऊ । तब हुक्म और अहं का गुनाह नहीं रह जाता । इश्क बेशक एक पल भी पर्दा नहीं रहने देता ।

इसक मंगां त गुणो, खुदी पण गुनेगार ।
हुकम इलम जे न्हारियां, त आऊं बंधिस बिनी पार ॥ १७

इश्क माँगूं तो गुनाह है, अहंकार भी गुन्हेगार बनाता है । हुक्म और इल्म को देखूं तो मैं दोनो तरह से बंध गई हूं ।

जे सऊर करे न्हारियां, त खुदी मंगण तरे हुकम ।
त दर उपटे पांहिजो, गडजां को न खसम ॥ १८

जो शऊर करके देखती हूँ तो खुदी और माँगना हुक्म से होता है । अपना द्वार खोल कर अपने प्रियतम से क्यों न मिलूं ?

खुदी गुणो हुकमें, घुरां कुच्छां हुकम ।
पट लाहियां या जे करियां, सभ हुकमें चयो इलम ॥ १९

खुदी गुनाह सब हुक्म से है । माँगूं या बोलूं सब हुक्म है । पर्दा हटाऊं या जो भी करूं सब हुक्म है, यह इल्म ने कहा ।

हित खुदी न गुणो के सिर, दर उपट या ढँक ।
पस्स पिरी या रांद के, आखर ईं चोए इलम हक ॥ २०

यहाँ खुदी या गुनाह किसी के सिर पर नहीं द्वार खोलो या बंद करो । प्रियतम को देखो या खेल को अन्त में हक का इल्म यही कहता है ।

सभ डिनो दिल मोमन जे, जो मोमन दिल अरस ।
पस्स पाण पांहिजे दिलमें, दिल मोमन अरस परस ॥ २१

मोमिनो के दिल को सब दिया जिन मोमिनो का दिल हक का अर्श है। आप अपने इल्म से देखो हक के दिल में मोमिनो और मोमिनो के दिल में हक हैं।

अरस दिल मोमन जो, जे पस्से अरस मोमन ।
चाहिए कोठियां हक अरसमें, त तो पेरो न्हाए तन ॥ २२

मोमिनो का दिल ही अर्श है जो अर्श के मोमिन देखें। यदि हक मोमिनो को अर्श में बुलाना चाहें तो यह नश्वर तन तो मानो पहले से ही नहीं है।

महामत चोए हे मोमनों, धणिएं पूरी केई खिल्ल ।
पिरी पस्सो या रांद के, हक बिठो अरस तो दिल ॥ २३

महामति कहती हैं हे मोमिनो स्वामी ने मजाक पूरा किया। प्रीतम को देखो या खेल को परमात्मा तुम्हारे अर्श दिल में बैठे हैं।

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ ४६३ ॥

॥ हुकमजो पेहेचान ॥

हुक्म की पहचान

ताडो कुंजी ना दर उपटण, समझाए डिनी सभ तो ।
बिठो आयो मूं दिलमें, जीं जांणो तीं गडजो ॥ १

कोई ताला द्वार किसी कुंजी से खोलना नहीं है यह आप ने सब समझा दिया है। आप मेरे दिल में बैठे हैं। जैसे जानो तैसे मिलो।

सेहेरग से ओडडो, आड़ो पट न द्वार ।
उघाड़िए अँख समझजो, डिसंदी न डिस्से भरतार ॥ २

शाहरग से आप नजदीक हैं कोई पर्दा या द्वार राह में रोकता नहीं है। समझ की आँखें खोल दी हैं। परन्तु देखते हुए भी स्वामी को देख नहीं पा रही हूँ।

हुकम इलम खेल हिक्कडो, बिओ कोए न कित्तईं दम ।
हित रूह न कोए रूहनजी, जे कीं थेयो से सभ हुकम ॥ ३

हुक्म, इल्म और खेल एक ही हैं । दूसरे किसी का अस्तित्व नहीं है । यहाँ किसी रूह की रूह नहीं आई है । जो कुछ भी हुआ सब हुक्म है ।

पांहिज्यूं सुरत्यूं हुकम, हीं रांद डेखारे हुकम ।
रमे रांद मोहोरा हुकमें, डेखारे तरे कदम ॥ ४

हमारी सुरत (ध्यान) को हुक्म, हुक्म का ही खेल दिखा रहा है । हुक्म की मोहरे खेल खेल रही हैं । चरणों के नीचे बिठा कर खेल दिखाया है ।

जे अरवाहें अरस जी, से सभ हकजी आमर ।
अस्सां हुज्जत गिडी अरस जी, अग्यां बिठ्यूं हक नजर ॥ ५

जो परमधाम की रूहें हैं । वे सब परमात्मा के हुक्म का स्वरुप हैं । हम ने भी परमधाम का हठ पकड़ा है । आपके आगे आपकी नजर में बैंठी हैं ।

अरवा अस्सां जी आमर, गुण अंग इंद्री आमर ।
अस्सी डिस्सूं सभ आमर के, रांद डिखारे पट कर ॥ ६

हमारी रूह आपका हुक्म है, गुण अंग इन्द्री आपके हुक्म हैं । हम सब आपके हुक्म को ही देख रही हैं । हुक्म ही पर्दा डाल कर खेल दिखा रहा है ।

हित अच्चे अरवा अरस जी, त उडे चौडे तबक ।
हुकमें नाम धरायो रूहन जो, हे हुकम केओ सभ हक ॥ ७

यहाँ अर्श की रूह आ जाए तो चौदह लोक उड़ जाएं । हुक्म ने ही रूहों के नाम रख लिए हैं । हक के हुक्म ने ही सब किया है ।

कूड़ न अच्चे अरस में, रूह माथा न रहे कूड़ दम ।
न्हारचम अंतर मंझ बाहेर, कित जरों न रे हुकम ॥ ८

झूठ अर्श में आ नहीं सकता और न ही रूह के आगे झूठ टिक सकता है । अंदर और बाहर देखा । हुक्म के बिना जरा भी कुछ नजर न आया ।

डिठचो डिखारचो हुकमें, अस्सीं थेआ हुकम ।
न्हाए न थ्यो न थींदो, की धारा हुकम खसम ॥ ९

देखा और दिखाया सब हुक्म ने है । हम भी हुक्म द्वारा बनाए गए । न है, न हुआ और न हुक्म के सिवा कभी कुछ होगा ही ।

हुकमें डिखारचो हुकम के, ते हुकमें डिठो हुकम ।
भिस्त दोजख थी हुकमें, आखर सुख थेओं सभ दम ॥ १०

हुक्म ने हुक्म को दिखाया । हुक्म ने हुक्म को देखा । बहिष्त और दोजख हुक्म से हुई । अन्त में हुक्म से ही सब जीवों को सुख मिला ।

नाला रूहें फिरस्ते जा, धरचा हक आमर ।
पुंना पांहिजी निसबतें, हुकमें पुजाया उपटे दर ॥ ११

रूहों और फिरश्तों का नाम हक के हुक्म ने धारण किया । अपने सम्बन्ध से पहुँचे । हुक्म ने द्वार खोल कर पहुँचाया ।

अस्सीं उत्थी बिठा अरसमें, अस्सां के हुकमें डिनों याद ।
हुकमें हुकम खेल डिखारिओ, हुकमें हुकम आयो स्वाद ॥ १२

हम अर्श में उठ बैठे । हमें हुक्म ने सब याद दी । हुक्म ने हुक्म को खेल दिखाया । हुक्म से हुक्म को स्वाद आया ।

हे बारीक गालियूं हुकम ज्यूं हुकम थेओ सभमें हक ।
अस्सीं अरसमें सिर गिनी करे, केयूं गालियूं बेसक ॥ १३

यह बारीक बातें हुक्म की हैं । सब में हक का हुक्म है । हमने परमधाम में अपने सिर लेकर बेशक बातें की हैं ।

अस्सां अरस न छड्यो, धारा थेआंसो बेसक ।
रूहें न आयूं रांदमें, अस्सां चई गाल मुतलक ॥ १४

हमने अर्श को छोड़ा नहीं और अलग हुए इसमें भी शंका नहीं है। रूह खेल में आई भी नहीं और बात भी अवश्य करतीं है ।

हे भत सभ हुकमें केई, रांद डेखारो खिलवत में घर ।
गाल्यूं खिलवत ज्यूं केयूं रांदमें, जो हक दिलगुझांदर ॥१५

यह सब विधि हुक्म की है। खिलवत में अपने घर बैठ कर खेल दिखाया। खिलवत के अन्दर हक के दिल की गूढ़ वातें खेल में कीं।

गालियूं सभे रांद ज्यूं, थींदचूं मए खिलवत ।
थींदा खिलवत में सुख खेलजा, गिडां खेलमें सुख निसबत ।१६

खेल की सब वातें खिलवत में हो रही हैं। खिलवत में खेल का सुख देखा। और संसार में परमधाम के सम्बन्ध का सुख पाया।

अस्सां न छड्यों अरस के, रांदमें पण आयूं ।
थेओ विछोडों अरसमें, रांदमें पण न आयूं ॥ १७

हमने अर्श को छोड़ा भी नहीं और खेल में भी आए हैं। अर्श से बिछुड़ना भी हुआ। खेल में आना भी नहीं हुआ।

हे भत्यूं सभ हुकमें, परी परी कारे ।
कारण वाद इसक जे, डिना बए हंद डिखारे ॥ १८

इस रीति से हुक्म ने तरह-तरह से खेल खिलाया। इश्क के विवाद के कारण दोनों ठिकाने एक साथ दिखा दिए।

पातसाही पांहिजी, डिखारी भली पर ।
कीं चुआं वडाई हकजी, मूं धणीं वडो कादर ॥ १९

हमें अपनी बादशाही अच्छी तरह दिखाई। परमात्मा की बड़ाई कैसे कहूं ? मेरा स्वामी बड़ा सामर्थ्य वान है।

महामत चोए हे मोंमिनों, पाण के बिहारे तरे कदम ।
खिल्ल कंदा वडी अरसमें, जे केई हुकम इलम ॥ २०

महामति कहती हैं हे मोमिनो ! हमको चरणों के नीचे बिठाया । हम पर बड़ी हँसी हुई जो हुक्म और इल्म ने हमारे साथ की है ।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ५१३ ॥

हक हादी रूहोंजी सिफत

हक, हादी और रूहों की प्रशंसा

कांध रूह भाइयां सिफतकरियां,
तोहिजी हितथिए न सिफत किएं केई ।
से न्हारचम जडे बेवरों करे, आंऊं उरभी ते में रही ॥ १

स्वामी रूह समझे कि मैं आपकी प्रशंसा करूं परन्तु वह की नहीं जा सकती । जो मैंने हिसाब लगा कर देखा तो मैं उसी में उलझ कर रह गई ।

ही दिलजी गाल के से करियां, रूहजी तूं जांणें ।
कुच्छण भेणी लाथिए, कांध चओ से चुआं हांणें ॥ २

यह दिल की बातें किससे कहूं । रूह की सब आप जानते हैं । बोलने का कोई ठिकाना न रखा । स्वामी जो कहो वही कहूँ ।

उताइयां आलम में, मूं जेडी केई न कांए ।
अज्जां तरसे मूं जिदुओ हे केही पर तोहिजी आए ॥ ३

ब्रह्मांड में सबसे ऊपर हमें किया । मुझ जैसी बड़ी किसी को न किया । अभी भी मेरा जीव विलख रहा है । यह तुम्हारी कौन सी विधि है ।

पांण जेडचूं डिने दातडचूं से डिठचूं मूं नजर ।
अज्जां मंगाइए मूं हत्थां, मूं कांध एहडों कादर ॥ ४

आपने जो नेमतें दी हैं वे मैंने अपनी आँखो से देखीं । अभी भी हे धनी आप मुझसे मंगवाते हैं । मेरा स्वामी ऐसा कादिर है ।

असां अरस न छडचो, धारा थेआंसो बेसक ।
रूहें न आयूं रांदमें, असां चई गाल मुतलक ॥ १४

हमने अर्श को छोड़ा नहीं और अलग हुए इसमें भी शंका नहीं है। रूह खेल में आई भी नहीं और बात भी अवश्य करतीं है ।

हे भत सभ हुकमें के ई, रांद डेखारी खिलवत में घर ।
गाल्यूं खिलवत ज्यूं केयूं रांदमें, जो हक दिलगुझांदर ॥१५

यह सब विधि हुक्म की है । खिलवत में अपने घर बैठ कर खेल दिखाया । खिलवत के अन्दर हक के दिल की गूढ़ बातें खेल में कीं ।

गालियूं सभे रांद ज्यूं, थींदयूं मए खिलवत ।
थींदा खिलवत में सुख खेलजा, गिडां खेलमें सुख निसबत ।१६

खेल की सब बातें खिलवत में हो रही हैं । खिलवत में खेल का सुख देखा । और संसार में परमधाम के सम्बन्ध का सुख पाया ।

असां न छडचों अरस के, रांदमें पण आयूं ।
थेओ विछोडों अरसमें, रांदमें पण न आयूं ॥ १७

हमने अर्श को छोड़ा भी नहीं और खेल में भी आए हैं । अर्श से बिछुड़ना भी हुआ । खेल में आना भी नहीं हुआ ।

हे भत्यूं सभ हुकमें, परी परी कारे ।
कारण वाद इसक जे, डिना बए हंद डिखारे ॥ १८

इस रीति से हुक्म ने तरह-तरह से खेल खिलाया । इश्क के विवाद के कारण दोनों ठिकाने एक साथ दिखा दिए ।

पातसाही पांहिजी, डिखारी भली पर ।
कीं चुआं वडाई हकजी, मूं धणीं वडो कादर ॥ १९

हमें अपनी बादशाही अच्छी तरह दिखाई । परमात्मा की बड़ाई कैसे कहूं ? मेरा स्वामी बड़ा सामर्थ्य वान है ।

महामत चोए हे मोंमिनों, पाण के बिहारे तरे कदम ।
खिल्ल कंदा वडी अरसमें, जे केई हुकम इलम ॥ २०

महामति कहती हैं हे मोमिनो ! हमको चरणों के नीचे बिठाया । हम पर बड़ी हँसी हुई जो हुक्म और इल्म ने हमारे साथ की है ।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ५१३ ॥

हक हादी रूहोंजो सिफत

हक, हादी और रूहों की प्रशंसा

कांध रूह भाइयां सिफतकरियां,
तोहिजी हितथिए न सिफत किएं केई ।
से न्हारचम जडे बेवरों करे, आंऊं उरभी ते में रही ॥ १

स्वामी रूह समझे कि मैं आपकी प्रशंसा करूं परन्तु वह की नहीं जा सकती । जो मैंने हिसाब लगा कर देखा तो मैं उसी में उलझ कर रह गई ।

ही दिलजी गाल के से करियां, रूहजी तूं जांणें ।
कुच्छण भेणी लाथिए, कांध चओ से चुआं हांणें ॥ २

यह दिल की बातें किससे कहूं । रूह की सब आप जानते हैं । बोलने का कोई ठिकाना न रखा । स्वामी जो कहो वही कहूँ ।

उताइयां आलम में, मूं जेडी केई न कांए ।
अज्जां तरसे मूं जिदुओ हे केही पर तोहिजी आए ॥ ३

ब्रह्मांड में सबसे ऊपर हमें किया । मुझ जैसी बड़ी किसी को न किया । अभी भी मेरा जीव विलख रहा है । यह तुम्हारी कौन सी विधि है ।

पांण जेडच्यूं डिने दातडच्यूं से डिठच्यूं मूं नजर ।
अज्जां मंगाइए मूं हत्थां, मूं कांध एहडों कादर ॥ ४

आपने जो नेमतें दी हैं वे मैंने अपनी आँखो से देखीं । अभी भी हे धनी आप मुझसे मंगवाते हैं । मेरा स्वामी ऐसा कादिर है ।

अस्सां अरस न छड्यो, धारा थेआंसो बेसक ।
रूहें न आयूं रांदमें, अस्सां चई गाल मुतलक ॥ १४

हमने अर्श को छोड़ा नहीं और अलग हुए इसमें भी शंका नहीं है। रूह खेल में आई भी नहीं और बात भी अवश्य करतीं है ।

हे भत सभ हुकमें केई, रांद डेखारो खिलवत में घर ।
गाल्यूं खिलवत ज्यूं केयूं रांदमें, जो हक दिलगुझांदर ॥१५

यह सब विधि हुक्म की है । खिलवत में अपने घर बैठ कर खेल दिखाया । खिलवत के अन्दर हक के दिल की गूढ़ बातें खेल में कीं ।

गालियूं सभे रांद ज्यूं, थींदयूं मए खिलवत ।
थींदा खिलवत में सुख खेलजा, गिडां खेलमें सुख निसबत ।१६

खेल की सब बातें खिलवत में हो रही हैं । खिलवत में खेल का सुख देखा । और संसार में परमधाम के सम्बन्ध का सुख पाया ।

अस्सां न छड्यों अरस के, रांदमें पण आयूं ।
थेओ विछोडों अरसमें, रांदमें पण न आयूं ॥ १७

हमने अर्श को छोड़ा भी नहीं और खेल में भी आए हैं । अर्श से बिछुड़ना भी हुआ । खेल में आना भी नहीं हुआ ।

हे भत्यूं सभ हुकमें, परी परी कारे ।
कारण वाद इसक जे, डिना बए हंद डिखारे ॥ १८

इस रीति से हुक्म ने तरह-तरह से खेल खिलाया । इश्क के विवाद के कारण दोनों ठिकाने एक साथ दिखा दिए ।

पातसाही पांहिजी, डिखारी भली पर ।
कीं चुआं वडाई हकजो, मूं धणीं वडो कादर ॥ १९

हमें अपनी बादशाही अच्छी तरह दिखाई । परमात्मा की बड़ाई कैसे कहूं ? मेरा स्वामी बड़ा सामर्थ्य वान है ।

महामत चोए हे मोंमिनों, पाण के बिहारे तरे कदम ।
खिलल कंदा वडी अरसमें, जे केई हुकम इलम ॥ २०

महामति कहती हैं हे मोमिनो ! हमको चरणों के नीचे बिठाया । हम पर बड़ी हँसी हुई जो हुक्म और इल्म ने हमारे साथ की है ।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ५१३ ॥

हक हादी रूहोंजी सिफत

हक, हादी और रूहों की प्रशंसा

कांध रूह भाइयां सिफतकरियां,
तोहिजी हितथिए न सिफत किएं केई ।
से न्हारचम जडे बेवरों करे, आंऊं उरझी ते में रही ॥ १

स्वामी रूह समझे कि मैं आपकी प्रशंसा करूं परन्तु वह की नहीं जा सकती । जो मैंने हिसाब लगा कर देखा तो मैं उसी में उलझ कर रह गई ।

ही दिलजी गाल के से करियां, रूहजी तूं जांणें ।
कुच्छण भेणी लाथिए, कांध चओ से चुआं हांणें ॥ २

यह दिल की बातें किससे कहूं । रूह की सब आप जानते हैं । बोलने का कोई ठिकाना न रखा । स्वामी जो कहो वही कहूँ ।

उताइयां आलम में, मूं जेडी केई न कांए ।
अज्जां तरसे मूं जिदुओ हे केही पर तोहिजी आए ॥ ३

ब्रह्मांड में सबसे ऊपर हमें किया । मुझ जैसी बड़ी किसी को न किया । अभी भी मेरा जीव विलख रहा है । यह तुम्हारी कौन सी विधि है ।

पांण जेडचूं डिने दातडचूं से डिठ्यूं मूं नजर ।
अज्जां मंगाइए मूं हत्थां, मूं कांध एहडों कादर ॥ ४

आपने जो नेमतें दी हैं वे मैंने अपनी आँखो से देखीं । अभी भी हे घनी आप मुझसे मंगवाते हैं । मेरा स्वामी ऐसा कादिर है ।

अस्सां अरस न छड्यो, धारा थेआंसो बेसक ।
रूहें न आयूं रांदमें, अस्सां चई गाल मुतलक ॥ १४

हमने अर्श को छोड़ा नहीं और अलग हुए इसमें भी शंका नहीं है। रूह खेल में आई भी नहीं और बात भी अवश्य करतीं है।

हे भत सभ हुकमें केई, रांद डेखारी खिलवत में घर ।
गाल्यूं खिलवत ज्यूं केयूं रांदमें, जो हक दिलगुझांदर ॥१५

यह सब विधि हुक्म की है। खिलवत में अपने घर बैठ कर खेल दिखाया। खिलवत के अन्दर हक के दिल की गूढ़ बातें खेल में कीं।

गालियूं सभे रांद ज्यूं, थींदयूं मए खिलवत ।
थींदा खिलवत में सुख खेलजा, गिडां खेलमें सुख निसबत ।१६

खेल की सब बातें खिलवत में हो रही हैं। खिलवत में खेल का सुख देखा। और संसार में परमधाम के सम्बन्ध का सुख पाया।

अस्सां न छड्यों अरस के, रांदमें पण आयूं ।
थेओ विछोडों अरसमें, रांदमें पण न आयूं ॥ १७

हमने अर्श को छोड़ा भी नहीं और खेल में भी आए हैं। अर्श से बिछुड़ना भी हुआ। खेल में आना भी नहीं हुआ।

हे भत्यूं सभ हुकमें, परी परी कारे ।
कारण वाद इसक जे, डिना बए हंद डिखारे ॥ १८

इस रीति से हुक्म ने तरह-तरह से खेल खिलाया। इश्क के विवाद के कारण दोनों ठिकाने एक साथ दिखा दिए।

पातसाही पांहिजी, डिखारी भली पर ।
कीं चुआं वडाई हकजी, मूं धणीं वडो कादर ॥ १९

हमें अपनी बादशाही अच्छी तरह दिखाई। परमात्मा की बड़ाई कैसे कहूं ? मेरा स्वामी बड़ा सामर्थ्य वान है।

महामत चोए हे मोंमिनों, पाण के बिहारे तरे कदम ।
खिलल कंदा वडो अरसमें, जे केई हुकम इलम ॥ २०

महामति कहती हैं हे मोमिनो ! हमको चरणों के नीचे बिठाया । हम पर बड़ी हँसी हुई जो हुक्म और इल्म ने हमारे साथ की है ।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ५१३ ॥

हक हादी रूहोंजी सिफत

हक, हादी और रूहों की प्रशंसा

कांध रूह भाइयां सिफतकरियां,
तोहिजी हितथिए न सिफत किएं केई ।
से न्हारचम जडे बेवरों करे, आंऊं उरभी ते में रही ॥ १

स्वामी रूह समझे कि मैं आपकी प्रशंसा करूं परन्तु वह की नहीं जा सकती । जो मैंने हिसाब लगा कर देखा तो मैं उसी में उलझ कर रह गई ।

ही दिलजी गाल के से करियां, रूहजी तूं जांणें ।
कुच्छण भेणी लाथिए, कांध चओ से चुआं हांणें ॥ २

यह दिल की बातें किससे कहूं । रूह की सब आप जानते हैं । बोलने का कोई ठिकाना न रखा । स्वामी जो कहो वही कहूँ ।

उताइयां आलम में, मूं जेडी केई न कांए ।
अज्जां तरसे मूं जिदुओ हे केही पर तोहिजी आए ॥ ३

ब्रह्मांड में सबसे ऊपर हमें किया । मुझ जैसी बड़ी किसी को न किया । अभी भी मेरा जीव विलख रहा है । यह तुम्हारी कौन सी विधि है ।

पांण जेडच्यूं डिने दातडच्यूं से डिठ्यूं मूं नजर ।
अज्जां मंगाइए मूं हत्थां, मूं कांध एहडों कादर ॥ ४

आपने जो नेमतें दी हैं वे मैंने अपनी आँखो से देखीं । अभी भी हे धनी आप मुझसे मंगवाते हैं । मेरा स्वामी ऐसा कादिर है ।

जे वडयूं केइए हिन रांदमें,
तिनी ज्यूं कै कोडी सिफतूं कन ।
से वडा मंगन खाक पेरनजी, असां अरस रूहन ॥ ५

जिसको आपने संसार में बड़ा किया उनकी तारीफ करोड़ों लोग करते हैं। जो बड़े हैं (देवता लोग) वे हम रूहों के चरणों की खाक माँगते हैं।

सिरदार ते रूहन में, मूके केइए कांध ।
वडी वडाई डिनिएं, अचची मए हिन रांद ॥ ६

उन रूहों में सिरदार, मेरे स्वामी, आपने मुझे बनाया। इस खेल में आकर बहुत बड़प्पन दिया।

हे जे वडयूं केइए हिन आलममें,
हिनज्यूं सिफतूं त्तिनी न पुजन ।
से वडा वडयूं सिफतूं करीन, पुज्जे न खाक मोमन ॥ ७

यह जो ब्रह्मांड में आपने बड़ी बनाई उनकी सिफत कोई नहीं कर सकता। बड़े-बड़े उनकी प्रशंसा तो करते हैं परन्तु मोमिनो की खाक भी नहीं पाते।

ते में बडी मूके केइए, मूजी सिफत न थिए मए रांद ।
जे ए सिफत न पुज्जे, त सिफत तोहिजी करियां कीं कांध ॥८

उन में आपने मुझे बड़ी बनाया। मेरी प्रशंसा खेल में हो नहीं सकती। जो मेरी सिफत तक नही पहुँचते तो आपकी प्रशंसा कैसे करें।

जा न्हाए अकल हिन आलम में, सा डिनिएं मूके मत ।
जे से आंऊं सभ समझी, काएम आलम सिफत ॥ ९

जो अक्ल इस ब्रह्मांड में नहीं थी मुझे वह बुद्धि दी। उसी से मैं अखंड ब्रह्मांड परमधाम की सब सिफत समझी।

गाल आंजी जाणू अस्सीं, जे डिन्यूं अस्सां के इलम ।
कांध हित न भेंणी कुच्छण, गाल्यूं गरे थीदचूं खसम ॥ १०

आपकी बात हमने आपके इल्म से समझी जो आपने हमें दिया। स्वामी यहां कहने की बात नहीं हैं। सब बातें घर में होंगी।

महामत चोए मूं धणी, मूके वडी डेखारई राँद ।
कर मूसे मिठचूं गालियूं, मूंजा मिठडा मियां कांध ॥ ११

महामति कहती हैं महबूब जी आपने बहुत बड़ा खेल दिखाया। अब मुझसे मीठी बातें करो मेरे मीठे महबूब प्रियतम।

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ५२४ ॥

सिन्धी भाषा के प्रकरणों का अनुवाद जो प्राचीन हस्तलिखित पुजारी सुन्दरलाल जी की पुस्तक के आधार पर लिखा वह समाप्त हुआ। अन्तिम तीन प्रकरणों का अनुवाद स्वयं महामति ने किया वह भी मूल पुस्तक तारतम वाणी से लिया है। उसे पढ़ने में सिन्धी वाणी जैसा ही आनन्द है। महामति ने "प्रकाश गुजराती" और "कलश गुजराती" को जन-साधारण के लिए उपयोगी मानकर उनका हिन्दुस्तानी में स्वयं ही रूपान्तरण कर दिया। सिन्धी ग्रंथ के यह तीन प्रकरण भी अहं—खुदी—को मिटाकर प्रियतम से एक कर देने के लिए बहुत ही उपयोगी हैं।

जे वडच्यूं केइए हिन्द रांदमें,
तिनी ज्यूं कै कोडो सिफतूं कन ।
से वडा मंगन खाक पेरनजी, असां अरस रूहन ॥ ५

जिसको आपने संसार में बड़ा किया उनकी तारीफ करोड़ों लोग करते हैं। जो बड़े हैं (देवता लोग) वे हम रूहों के चरणों की खाक माँगते हैं।

सिरदार ते रूहन में, मूके केइए कांध ।
वडी वडाई डिनिएं, अची मए हिन रांद ॥ ६

उन रूहों में सिरदार, मेरे स्वामी, आपने मुझे बनाया। इस खेल में आकर बहुत बड़प्पन दिया।

हे जे वडच्यूं केइए हिन आलममें,
हिनज्यूं सिफतूं त्तिनी न पुजन ।
से वडा वडच्यूं सिफतूं करीन, पुज्जे न खाक मोमन ॥ ७

यह जो ब्रह्मांड में आपने बड़ी बनाई उनकी सिफत कोई नहीं कर सकता। बड़े-बड़े उनकी प्रशंसा तो करते हैं परन्तु मोमिनो की खाक भी नहीं पाते।

ते में बडी मूके केइए, मूजी सिफत न थिए मए रांद ।
जे ए सिफत न पुज्जे, त सिफत तोहिजी करियां कीं कांध ॥८

उन में आपने मुझे बड़ी बनाया। मेरी प्रशंसा खेल में हो नहीं सकती। जो मेरी सिफत तक नही पहुँचते तो आपकी प्रशंसा कैसे करें।

जा न्हाए अकल हिन आलम में, सा डिनिएं मूके मत ।
जे से आंऊं सभ समझी, काएम आलम सिफत ॥ ९

जो अक्ल इस ब्रह्मांड में नहीं थी मुझे वह बुद्धि दी। उसी से मैं अखंड ब्रह्मांड परमधाम की सब सिफत समझी।

गाल आंजी जाणू अस्सीं, जे डिन्यू अस्सां के इलम ।
कांध हित न भेंणी कुच्छण, गाल्यू गरे थीदचू खसम ॥ १०

आपकी बात हमने आपके इल्म से समझी जो आपने हमें दिया। स्वामी यहां कहने की बात नहीं हैं। सब बातें घर में होंगी ।

महामत चोए मूं धणी, मूके वडी डेखारई राँद ।
कर मूसे मिठ्चू गालियूं, मूंजा मिठडा मियां कांध ॥ ११

महामति कहती हैं महबूब जी आपने बहुत बड़ा खेल दिखाया। अब मुझसे मीठी बातें करो मेरे मीठे महबूब प्रियतम ।

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ५२४ ॥

सिन्धी भाषा के प्रकरणों का अनुवाद जो प्राचीन हस्तलिखित पुजारी सुन्दरलाल जी की पुस्तक के आधार पर लिखा वह समाप्त हुआ। अन्तिम तीन प्रकरणों का अनुवाद स्वयं महामति ने किया वह भी मूल पुस्तक तारतम वाणी से लिया है। उसे पढ़ने में सिन्धी वाणी जैसा ही आनन्द है। महामति ने "प्रकाश गुजराती" और "कलश गुजराती" को जन-साधारण के लिए उपयोगी मानकर उनका हिन्दुस्तानी में स्वयं ही रूपान्तरण कर दिया। सिन्धी ग्रंथ के यह तीन प्रकरण भी अहं—खुदी—को मिटाकर प्रियतम से एक कर देने के लिए बहुत ही उपयोगी हैं।

अथ तीन प्रकरण सिंधी के हिन्दी पद्य में अनुवाद

आसिकके गुनाह

सुनो रूहें अरस की, जो अपनी बीतक ।
जो हमसे लटी भई, ऐसी करे न कोई मुतलक ॥ १

कहूँ तिनका बेवरा, सुनियो कानों दोए ।
ए देख्या मैं सहूर कर, तुम भी सहूर कीजो सोए ॥ २

पीछे जो दिलमें आवे साथ के, आपन करेंगे सोए ।
भूली रोवे तेहेकीक, गए हाथ पटकते रोए ॥ ३

तिसवास्ते क्यों भूलिए, हाथ आए अवसर ।
जो पीछे जाए पछतावना, क्यों आगे देख न चलें नजर ॥ ४

अपनी गिरो आसिक, कहावत हैं मिने इन ।
चलना देख के कहत हों, ए अकल दई तुमें किन ॥ ५

लेनी हकीकत हक की, और देनी इन लोकन ।
आसिक को ए उलटी, जो करत हैं आपन ॥ ६

मीठा गुझ मासूक का, काहूँ आसिक कहे न कोए ।
पड़ोसी भी ना सुनें, यों आसिक छिपी रोए ॥ ७

आसिक कहिए तिन को, जो हक पर होए कुरबान ।
सौ भांतें मासूक के, सुख गुझ लेवे सुभान ॥ ८

जो पडे कसाला कोटक, पर कहे न किनको दुख ।
किसीसों ना बोलही, छिपावे हक के सुख ॥ ९

गुझ सुख लेवे हक के, रहे सोहोबत मोमन ।
अपना गुझ मासूक का, कबूं कहें न आगे किन ॥ १०

तिन आगे भी ना कहे, जो हक के खबरदार ।
पर कहा कहूँ मैं तिनको, जो बाहेर करे पुकार ॥ ११

हक बोलावें सरत पर, आपन रेहेने चाहें इत ।
लेवें गुझ मासूक का, कहें दुनियां को हकीकत ॥ १२

ऐसी आसिक कबूं ना करे, पीछे रहे बुलावते हक ।
दुख कुफरमें पड़ के, सुख बका छोड़े इसक ॥ १३

प्यारा जिनको मासूक, तिनके प्यारे लगें वचन ।
सो कबूं न केहेवे और को, मासूक प्यारा जिन ॥ १४

आसिक कबूं ना करे, ऐसी उलटी बात ।
केहेने सुख लोकन को, पाए बिछोहा हक जात ॥ १५

आसिक गुझ मासूक का, सो लेवत है रोए रोए ॥
ऐसी उलटी अकल आसिक की,
सुख कहे औरोको सोए ॥ १६

ए निपट बातें रिजालियां, सो आपन करी दिल धर ।
जैसी हुई हमसे खेल में, तैसी हुई न किनके सिर ॥ १७

आसिक कहावे आपको, फेरे बोलावना भरतार ।
जाए न बोलाई खसम की, सो औरत बे—इतबार ॥ १८

गुझ मासूक का आसिक, सो केहेना न कासों होए ।
जो कै पडे कसाले, तो बाहेर माहें रोए ॥ १९

एक तो गुझ जाहेर किया, और गैयां न बोलावते सोए ।
ऐसी एक भी कोई ना करे, सो आपन करी दोए ॥ २०

रूहों को ऐसी न चाहिए, अरस की कहावें हम ।
सहूर करके देखिआ, तो हम किया बडा जुलम ॥ २१

हम कहें झूठी दुनियां, तिनमें ऐसी करे न कोए ।
जो उलटी हम सांचों से भई, ऐसी झूठोंसे न होए ॥ २२

मैं देख तकसीर अपनी, पेहेले देख डरी एक बार ।
देख डरी सामी हक, तब मैं किया पुकार ॥ २३

मैं देखे गुनाह अपने, हक के देखे एहसान ।
उमर गई पुकारते, बीच हलाकी जहान ॥ २४

कबहूँ किनहूँ ना किए, ऐसे काम अधम ।
देख गुनाह अपने, फेर किए जुलम ॥ २५

स्यानी जोरू क्यों करे, जान के गुनाह ए ।
खावंद जाने त्यों करें, हुआ बस हुकम के ॥ २६

जो फेर देखें आपन, तो ए हुई हाथ धनी ।
और किसीका ना चले, जो कोई करे स्यानप घनी ॥ २७

मैं देख्या इलम हक का, तो ए सब हुकम के ख्याल ।
और ना कोई कहूं, बिना हुकम नूरजमाल ॥ २८

ए गुनाह देखे अपने, जब देख्या दिल धर ।
ए भी गुनाह खुदीअ का, जब फेर देख्या सहूर कर ॥ २९

गुन्हे भी अपने तब देखे, जब मैं हुई हुसियार ।
देखी हुसियारी ए भी खुदी, डरी हुई खबरदार ॥ ३०

गुन्हे किए अजान में, गुन्हे देखे सो भी अजान ।
दम न ले बीच हुकमें, जब हकें पूरी दई पेहेचान ॥ ३१

पेहेचान लई सो भी खुदी, मैं न्यारी हुई तिनसे ।
न्यारी होत सो भी खुदी, ए खुदी निकलत नाही में ॥ ३२

महामत कहें ऐ मोमनों, कोई नाहीं हक बिगर ।
लाख बेर मैं देखिआ, फेर फेर सहूर कर ॥ ३३

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ५५७ ॥

॥ मैं खुदीकी पेहेचान ॥

मैं लाखों विध देखिया, कहूँ खुदी क्योंए न जाए ।
ए क्यों जावे पेड़से, जो दूजी हकें दई देखाए ॥ १

जो मैं मांगों इसक को, तो इत भी आप देखाए ।
ए भी खुदी देखी, जब इलमें दई समझाए ॥ २

हक पेहेचान किनको हुई, इत दूसरा कौन केहेलाए ।
ऐसी काढी बारीकी खुदियां, हक भी पेहेचान कराए ॥ ३

तन तो अपने अरस में, सो तो सोए नीद में ।
जागत हैं एक खावंद, ए नीद दई जिनने ॥ ४

दे कर नीद रूहन को, खेल देखावत नजर ।
तो ए खेल कौन देखत, कोई है बिन हुकम कादर ॥ ५
आपन सोए हैं अरसमें, तले हक कदम ।
ए जो खेल खेलावे खेलमें, कोई है बिना हक हुकम ॥ ६
इत हुकम एक हक का, और हकै का इलम ।
हुकम इलम या खेल को, देखो सोइयां तले कदम ॥ ७
कहे इलम तुमहीं पट, तुमहीं कुंजी पट की ।
कुल्ल अकल दई तुम को, देखो उलटी या सीधी ॥ ८
बीच खेल और खावंद, पट तुमारा वजूद ।
पीठ दे हक को ए देखत, जो ना कछू है नाबूद ॥ ९
ए खेल हुकम इलम का, हमें नीदमें देखावत ।
करने हांसी अरस में, खेल में भुलावत ॥ १०
इत दूसरा कोई कहूँ नहीं, सब देख्या इलम हुकम ।
जो ए उड़े नाबूद हुकमें, तो बैठे देखो आगे खसम ॥ ११
हकें द्वार दिया हाथ अपने, और दई इलम पूरी पेहेचान ।
तो क्यों सहें आड़ा पट, क्यों न खोलें द्वार सुभान ॥ १२
जो पट खोलूं हुकम बिना, लगत खुदी गुन्हें डर ।
ना तो हाथ कुंजी दै आसिक के,
हक बिछोहा सहें क्यों कर ॥ १३
जो होए मुझमें इसक, तो देखों न खुदी हुकम ।
एक नाहीं मोपें इसक, तो आड़ा देखों हुकम इलम ॥ १४

ना तो द्वार खोल के, आगे देखें न अरस रेहेमान ।
इत क्यों देखों राह हुकम की, हकें दई कुंजी पेहेचान ॥ १५
गोते न खांऊं बिना जल, जो आवे इसक ।
तो हुकम खुदी कछू गुनां, पट दम न रखे बेसक ॥ १६
इसक मागूं तो भी गुना, और खुदी ए भी गुनाह होए ।
जो देखों हुकम इलम को, मोहे बांध लई बिध दोए ॥ १७
देखों सहूर खुदी मांगना, ए दोऊ तले हुकम ।
तो खोल दरवाजा अपना, क्यों न मिलों अपने खसम ॥ १८
खुदी गुनाह सब हुकमें, मागूं बोलूं सब हुकम ।
पट खोलूं या जो करूँ, सब हुकम कहे इलम ॥ १९
इत खुदी न गुनाह किन सिर, या ढांप खोल तेरे हाथ ।
देख खावंद या खेल को, हुकम इलम तेरे साथ ॥ २०
सब मोमनों को सौंपिया, कह्या मोमन दिल अरस ।
देख आप दिल विचार के, दिल मोमन अरस परस ॥ २१
दिल मोमन का अरस है, जो देखे अरस मोमन ।
हक चाहें बैठाया अरस में, तो तेरा आगेही नहीं तन ॥ २२
महामत कहें ए मोमिनों, हकें हांसी करी पूरन ।
देख खावंद या खेल को, ए कुंजी तेरा दिल मोमन ॥ २३

प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ ५८० ॥

हुकमकी पेहेचान

ताला द्वार न कुंजी खोलना, समझाए दई सबों आप ।
दिल अपने में हक बसें, ज्यों जाने त्यों कर मिलाप ॥ १

सेहेरग से नजीक, आड़ा पट न द्वार ।
खोली आंखें समझ की, देखती न देखे भरतार ॥ २

हुकम इलम खेल एकै, और कोई न कहूँ दम ।
इत रूह न कोई रूहन की, जो कछू होए सो हुकम ॥ ३

अपनी सुरतें हुकम, खेलावत हुकम ।
खेलत सामी हुकमें, ए देखावत तले कदम ॥ ४

अरवाहें जो कोई अरस की, सो सब हक आमर ।
हम हुज्जत लै सिर अरस की, बैठी आगूं हक नजर ॥ ५

अरवा हमारी आमर, गुन अंग इंद्री आमर ।
हम देखें सब आमर, हक देखावत पट कर ॥ ६

जो इत अरवा होए अरस की, तो उड़ावे चौदे तबक ।
रूहें नाम धराए हम, ऐसा हुकमें कर दिया हक ॥ ७

झूठ न आवे अरस में, सांच नजरों रहे न झूठ ।
देख्या अंतर माहें बाहेर, कहूँ जरा न हुकमें छूट ॥ ८

देख्या देखाया हुकमें, और हम भी भए हुकम ।
ना हुआ ना है ना होएगा, बिना हुकम खसम ॥ ९

हुकमें देखाया हुकम को, तिन हुकमें देख्या हुकम ।
भिस्त दोजख उन हुकमें, आखर सुख सब दम ॥ १०

जिन नाम धराया हुकमें, रूहें फिरस्ते सिर पर ।
पोहोंचे अपनी निसबतें, द्वार बका खोल कर ॥ ११

हम उठ बैठे अरस में, हमको हुकमें दिया सब याद ।
हुकमें हुकम खेल देखाया, सो हम में हुकमें आया स्वाद ॥ १२

यों मिहीं बातें कै हुकम की, हुआ हुकम सबमें एक ।
अरस में हम सिर ले उठे, सब सिर ले कहें विवेक ॥ १३

हम जुदे न हुए अरस से, और जुदे हुए बेसक ।
हम रूहें खेल देख्या नहीं,
और खेल की बातें करी मुतलक ॥ १४

इन विध सब हुकमें कर, खेल देखाया खिलवत अंदर ।
बातें खिलवत की करीं खेलमें,
जो गुझ हक के दिल भीतर ॥ १५

और खेल की बातें सब, होसी बीच खिलवत ।
लेसी खेलका सुख खिलवत में,
लिया खेलमें सुख निसबत ॥ १६

छोड़्या नहीं अरस को, और खेलमें भी गैयां ।
अंतराए भी हुई अरस से, और जुदियां भी न भैयां ॥ १७

ए विध सब हुकम की, हुकमें किए बनाए ।
वास्ते इसक रबद के, दोऊ ठौर दिए देखाए ॥ १८

और साहेबी अपनी, देखाई नीके कर ।
क्यों कहूँ बड़ाई हक की, मेरा खसम बड़ा कादर ॥ १९

महामत कहें ऐ मोमिनों, हकें बैठाए तले कदम ।
करसी हांसी बीच अरस के, जो करी हुकमें इलम ।। २०

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ६०० ।।

इति श्रीमहामति श्रीप्राणनाथजी की 'तारतम बानी' का

चौदहवां ग्रन्थ

।। सिंधी संपूर्ण ।।